
DURGA SAH MUNICIPAL LIBRARY
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class No
Book No
Reg No 4531

भारत में बुलगानिन

[आँखों देखा कथात्मक वर्णन]

गोविन्द सिंह

प्रकाशक—

प्रकाश गृह

बनारस।

मूल्य—दो रुपया

आठ आना।

मुद्रक—

श्यामलाल धवन,

अनन्त प्रेस,

भैरोनाथ, बनारस।



[illegible] [illegible]

गीता और जीवन के दर्शन का

[illegible]
[illegible]

— गोविन्द सिंह

हमारे ऐतिहासिक प्रकाशन

नेहरूजी, रूसमें

रूडिन—तुर्गनेव

शैतान—दोस्तावस्की

शेक्सपियर की कहानियाँ

पहला प्यार

और दो

उपन्यास—तुर्गनेव

प्यूनी—पर्ल एस० बक

भारत में बुलगानिन

मास्को के गोर्कीपार्क में गत ६ सप्ताह से भारतीय हस्त-कौशल प्रदर्शनी चल रही है। प्रतिदिन अनगिनती रूसी आते हैं। प्रदर्शनी देख कर प्रसन्न होते हैं। और आज इस प्रदर्शनी में आये हुये हैं, निकोलाई आलेक्सांद्रोविच बुलगानिन, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्ष-मण्डल के सदस्य, सोवियत संघ की मन्त्रि-परिषद के अध्यक्ष। साथ हैं, निकित सर्गेयविच क्रुश्चेव, सर्वोच्च सोवियत मण्डल के सदस्य। इनकी उपस्थिति से दर्शकों में उल्लास छा गया है।

प्रदर्शनी के संयोजक आगे बढ़े हैं। स्वागत किया और हाथी दाँत की बनी महात्मा गाँधी की मूर्ति और प्रदर्शनी का एक चित्र-संग्रह उपहार स्वरूप दिया है। मार्शल बुलगानिन बड़े प्रेम से प्रदर्शनी देखने इनके साथ चल पड़े हैं।

और अब पूरी प्रदर्शनी देख 'अतिथि-मत-पुस्तिका' पर लिख रहे हैं—"मानवीय सभ्यता के जन्म से पूर्व की भारतीय-हस्तकला की यह प्रदर्शनी देखकर मुझे परम प्रसन्नता हुई। आशा है, भारत की जनता अपनी नवप्राप्त-स्वतन्त्रता की रक्षा एवं स्वयं की उन्नति, शांति के लिये अपने गृहोद्योगों को निरन्तर प्रोत्साहन देगी।"

रूस के यह महान नेता आज ही अपनी शान्ति-यात्रा पर भारत रवाना होने वाले हैं।

मास्को के हवाई अड्डे पर दो चमचमाते रूसी-सेना के वायुयान तैयार हो रहे हैं। यही वायुयान भारत की ओर उड़ने वाले हैं।

मास्को हवाई अड्डा। भोर के चार का समय। कड़ाके की ठण्ड-कुहासा छाया हुआ है। हवाई अड्डे पर अजीब सी खामोशी। सभी यन्त्रवत् अपने कार्य में संलग्न। उपराष्ट्र सचिव वेलेरीजोरिन और श्री फेडरैन हवाई अड्डे के मैदान में ही एक ओर खड़े होकर बातें कर रहे हैं।

घररररं···तेज रोशनी, दो मोटरें और फिर उसके पश्चात् अनेक मोटरें··जगमगा उठता है सारा हवाई अड्डा। दिन का सा उजाला। शान्तियात्रा के पथिक आ गये। यह उतरे मार्शल बुलगानिन, साथ ही गये क्रुश्चेव और यह सब, जो इनके साथ भारत, अफगानिस्तान और बर्मा की यात्रा पर जा रहे हैं। श्री मिखेलोव, आन्द्रे ग्रेमिको, कुगकीन, रसोलेव, सेरोव, सबके सब सोवियत मन्त्रि-परिषद के सदस्य और यह हैं श्रीमती रहीमा बाबीयेवा, मन्त्रि-परिषद की सदस्या...यात्रामण्डल की एकमात्र महिला।

घिर्रं घिर्रं घिर्रं···

जहाज उड़ गया। यह सुरक्षा की दृष्टि से आगे आगे जा रहा है। दूसरे यान में सभी आरूढ़ हो गये हैं। दो इञ्जिन वाले, चमकीले रूसी वायुसेना के प्रथम यान के पंखे घूम रहे हैं। अपने मातहत अधिकारियों से हाथ मिलाकर बुलगानिन विदा ले रहे हैं। इतिहास में पहिली बार सोवियत संघ का एक सर्वोच्च पदाधिकारी किसी गैर कम्युनिस्ट देश की यात्रा के लिये जा रहा है। नया इतिहास बन रहा है।

घिर्रं घिर्रं घिर्रं···घिर्रं···यान उड़ गया। रूस का तारांकित रक्तिम ध्वज फहरा रहा है। देखते देखते यान हिन्दूकुश की दिशा में ओझल हो गया।

ताशकन्द हवाई-अड्डा। लाल नीली रोशनियाँ हवाई अड्डे से उठकर आकाश को जगमग कर रही हैं! वह जा रहा है यान, दुनिया के एक बड़े शक्तिशाली देश के दो महान नेता अपने साथियों के साथ हैं। रूसी सीमा समाप्त। मार्शल बुलगानिन एक बार मुड़कर स्वदेश की ओर देखते हैं। मातृभूमि से बिछुड़ते आँखें भर आयी हैं, पर होठों पर मुस्कुराहट है। वह एक महान देश की यात्रा करने जा रहे हैं, जो उनका पड़ोसी है। उस पड़ोसी देश से पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध है, जो फिर से एक बार हरा-भरा होने जा रहा है।

सन् १४६६ में अफानासी निकीतन नामक एक रूसी व्यापारी भारत आया। यह प्रथम सम्बन्ध था। फिर १८ वीं शताब्दी में लेबिडेफ ने एक हिन्दुस्थानी व्याकरण लिखा। १८०१ में लन्दन से प्रकाशित हुआ। १६ वीं शताब्दी में रूसी वैज्ञानिक आई० पी० मिनमेवा भारत आया। इतिहास यह भी बतलाता है कि सन् १५३२ में बाबर का एक राजदूत खोजा हुसेन मैत्री सम्बन्ध के लिये मास्को गया था।

भारत और रूस का सांस्कृतिक साहित्यिक सम्बन्ध बड़ा पुराना है। इसी सम्बन्ध को हरा भरा करने के लिये आज पुनः यह ऐतिहासिक यात्रा हो रही है। अब पथ दुर्गम नहीं रहा। हवाई जहाज हिन्दूकुश पर्वत पार कर रहा है।

भारतीय सीमा, भारत। जहाज उड़ा जा रहा है, देहली की ओर। दो बज चुके हैं। दिन के दो और तारीख है १८ नवम्बर १६५५, शुक्रवार।

यह दिल्ली है। भारत की राजधानी दिल्ली। अहा! इसकी शोभा के क्या कहने! नई दुलहिन से भी ज्यादा बनी ठनी है। सातवीं बार यह पुनः भारत की राजधानी बनी है। स्वतन्त्र भारत। सर्वत्र नरनारियों का समूह बिखरा पड़ा है। तोरण-द्वार, स्वागत-पट्ट सर्वत्र लहरा रहे हैं। लाखों झण्डियाँ, रूस और भारत की झण्डियाँ···पालम हवाई अड्डे की ओर अपार जनसमूह उमड़ा चला जा रहा है। पालम हवाई अड्डे से लेकर

राष्ट्रपति भवन तक का १२ मील लंबा मार्ग खूब सजा है इतनी सजावट तो कभी नहीं देखी गयी। रूस भारत मैत्री जिन्दाबाद। बुलगानिन क्रुश्चेव जिन्दाबाद, हिन्दी रूसी भाई भाई! सर्वत्र यही पट्ट फहरा रहे हैं।

आस-पास के ग्रामीण, दिल्ली के नागरिक पथों पर बिखर गये हैं। दिल्ली दरबार की याद रखने वाले आज कह रहे हैं, इस स्वागत के समक्ष दिल्ली दरबार की रौनक मात है। ट्राफिक पर पूरा नियन्त्रण है। दिल्ली की पुलिस, फौजी जवान सारे रास्तों को नियन्त्रित किये हुये हैं। लाखों आदमियों की भीड़। सर्वत्र नरमुण्ड ही नरमुण्ड। छतों, बारजों, छप्परों, पेड़ों पर मनुष्य ही मनुष्य। सर्वत्र उल्लास, सर्वत्र रङ्ग बिरङ्गे कपड़े। अपने अतिथियों का दिल खोलकर स्वागत करने के लिये तैयार है, दिल्ली। पुलिस, मिलिट्री, गुप्तचर विभाग अपनी पूरी शक्ति के साथ संलग्न हैं। क्षण क्षण पर मिलिट्री जीपें भाग रही हैं। लाउड स्पीकरों से आदेश प्रसारित हो रहे हैं "भारत की प्रतिष्ठा के लिये, सम्मानित अतिथियों के स्वागत के लिये, कृपया शान्तिपूर्ण ढङ्ग से पंक्तिबद्ध हो जाँय''' शान्ति बनाए रखें '''माननीय अतिथि आ रहे हैं।"

धूल, हलकी धूल की परत से आकाश ढँक गया है, मानो प्रकृति ने अपने इन अतिथियों के स्वागत में चाँदी का चन्दोवा तान दिया है।

पथ नियन्त्रित है। सफेद और नीले रङ्ग की मोटरें ही नियन्त्रित पथ पर चल रहीं हैं। यह मोटर साइकिल, यह जीप। रास्ते का क्षण क्षण निरीक्षण हो रहा है।

२ बजकर १५ मिनट। पालम का हवाई अड्डा। ठसाठस भरा है अपार जनसमूह से। मानव सागर''''लहरें ले रहा है, अपनी मर्यादा में बँधा हुआ, कुछ आगे जाकर फिर पीछे लौट जाता है। यह लाल शामियाना! यहां उपस्थित हैं सभी उच्चपदाधिकारी और भारतस्थित दूतावासों के अधिकारी। वह खड़े हैं पंक्तिबद्ध होकर कस्तूरबा निकेतन, नवहिन्द हाई स्कूल, फरीदाबाद हाई स्कूल और गाँधी सेवा आश्रम के छात्र

छात्राओं के झुण्ड, नीली सफेद पोशाकें, लेजमें लिये और कुछ छात्राएँ नृत्य की भूषा में, गरबा नृत्य'''वह खड़ी है विशिष्ट फौज, जल-थल नभ सेना के चुने हुये अधिकारी, जो अपने अतिथियों को सैल्यूट देंगे। दाहिनी ओर बना हुआ मञ्च। समीप हैं अखबारों के रिपोर्टर, मूवी कैमरामैन, सम्वाद समितियों के प्रतिनिधि और रेडियो कामेण्टेटर्स''''

उपराष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन आ गये'''और लो, यह आ गये हमारे प्रधान मन्त्री जवाहरलाल! अरे वाह। खादी के शुभ्र वस्त्रों में आज तो खूब खिल रहे हैं। कोट के बटन होल में ताजा गुलाब का फूल लगा है। गुलाब का फूल। शान्ति और मित्रता का प्रतीक। प्रधान मन्त्री के चेहरे पर बच्चों सा भोलापन है और रगरग में जवानों को भी मात कर देने वाली फुर्ति है।

"जवाहरलाल जिन्दाबाद।"

आकाश काँप उठता है। नेहरू हाथ हिलाते हैं, मित्रता का हाथ। मञ्च पर चढ़ते है। ऊँचे मञ्च पर खड़े होकर देखते हैं। सब ठीक! नीचे आ जाते हैं।

भीड़ का दबाव प्रति पल बढ़ रहा है। अधिकारी परीशान हैं। घबड़ा रहे हैं। कहीं नियन्त्रण न टूट जाय। पसीने से लथपथ'''यह दिल्ली के आई० जी० हैं। परीशान, व्यस्त। बापरे! इतनी बड़ी भीड़ से आज तक पाला नहीं पड़ा। जनरल नागेश घबड़ाये हुये चारों ओर देख रहे हैं। बापरे! अगर यह भीड़ काबू के बाहर हो जाय तो'''ओफ्फ ओफ्फ भीड़ का दबाव बढ़ रहा है।

"भारतीय जनता को हमारा अभिवादन!"---बेतार से हवाई जहाज पर बैठे बुलगानिन का सन्देश आता है। लाउडस्पीकरों से जनता में प्रसारित कर दिया जाता है।

वायुयान चमका'''वह रहा'''कोटि कोटि आँखें आसमान पर''' वायुयान चक्कर काट रहा है'''चमचम चमक रहा है। एक अद्भुत, पर

बड़ी ही मनोरम करवट लेता हुआ हवाई जहाज नीचे आ रहा है। रूस का झण्डा फहरा रहा है।

भीड़ का प्रबल वेग।

"मार्शल बुलगानिन जिन्दाबाद" आकाश काँप रहा है, नारों से।

"हमारे सम्मानीय अतिथि आ गये। शान्ति और नियन्त्रण रखें पंक्तिबद्ध रहें। आदर्श उपस्थित करें।"—लाउडस्पीकरों से आदेश और सूचनाएँ सारे नगर को दी जाती हैं।

गह उतरा विमान!

थम गया।

बाहर आये मार्शल बुलगानिन! आगे बढ़े नेहरू, राधाकृष्णन, राष्ट्रपति के निजी सचिव, शिष्टाचार विभाग के प्रधान।

"भारत रूस मैत्री जिन्दाबाद" "मार्शल बुलगानिन, क्रुश्चेव जिन्दाबाद"—नारों से आकाश फट रहा है।

गद्गद् हृदय नेहरू मार्शल बुलगानिन और क्रुश्चेव का स्वागत करते हैं। रूसी मंडल के अन्य सदस्य बाहर आ गए हैं। अपार जनसमूह देखकर दंग हैं। नेहरू जी दुभाषिये के जरिये राष्ट्रपति के सचिव, शिष्टाचार विभाग के प्रधान एवं उपस्थित राजदूतों से माननीय अतिथियों का परिचय करा रहे हैं। भीड़ का दबाव बढ़ता जा रहा है।

लाउडस्पीकरों और रेडियोफोन पर कामेन्ट्री चल रही है—"धूल के बादलों को चीरकर सूर्य की किरणें भी हमारे माननीय अतिथियों का स्वागत कर रही हैं। हमारे उपप्रधानमन्त्री डा० राधाकृष्णन अतिथियों को परिचय दे रहे हैं"''और अब मार्शल बुलगानिन अपने साथियों के साथ मञ्च की ओर जा रहे हैं। इस समय''''''"

पुलिस अधिकारियों को लिये हुये वह हेलीकेप्टर उड़ रहा है, भीड़ का नियन्त्रण कर रहे हैं। दिल्ली के प्रबन्ध इतिहास में पहिली बार हेलीकेप्टर का प्रयोग।

मार्शल बुलगानिन, क्रुश्चेव मञ्च पर हैं। उनके साथी भी हैं। लड़कियाँ स्वागत गान गा रही हैं।

"हे शान्ति के अमर सेनानी, स्वागत है, तुम्हारा......"

भीड़ के शोर और नारों की गरजना में गीत के स्वर खो जाते हैं। बैण्ड पर रूस और भारत के राष्ट्रीय गीत बज रहे हैं। 'मार्चपास्ट' हो रहा है। मार्शल बुलगानिन सलामी ले रहे हैं। जल थल नभ सेना के अधिकारी सलामी दे रहे हैं। राजकीय स्वागत। दिल्ली के इतिहास में किसी राजे महाराजे का भी इतना स्वागत न हुआ होगा!

छात्र छात्राओं दल, गरबा नृत्य...लेजिमों की झनझनाहट, वायुयान से पुष्पवर्षा......

"जवाहरलाल जिन्दाबाद..."

"मार्शल बुलगानिन जिन्दाबाद!"

"हम शान्ति चाहते हैं।"

"हिन्दी रूसी...भाई...भाई..."

भीड़ और प्रबल हो रही है। अधिकारी घबड़ा गये हैं। इस मानव-समुद्र को बाँधना उनके वश के बाहर की बात होती जा रही है। यह देखिये टूट गया घेरा। बढ़ गई भीड़। सारी व्यवस्था गड़बड़। अब क्या होगा? अधिकारी घबड़ा गये। देखा नेहरू ने। दौड़े मञ्च पर। "सुनिये...शान्ति रखें, पीछे हट जाइये! अनुशासन में रहिये"—जादू का असर। घेरा फिर ठीक हो जाता है।

"शान्ति...शान्ति...नियन्त्रण...."—सैकड़ों लाउडस्पीकर बार बार आदेश दे रहे हैं। जनसमुद्र शान्त पड़ गया है।

देखिये इस लड़की को। इसका नाम है, सरोज। लेडी इरविन महिला कालेज की छात्रा, फुर्ती से आगे बढ़ गयी है। माइक पर कह रही है—"हम स्वागत...स्वागत करते हैं मान्य नेताओं का...भारत के बच्चों की ओर से हमारी शुभकामना का मैत्रीपूर्ण सन्देश आप अपने

देश के बच्चों तक पहुँचा दें कि चाचा नेहरू का जैसा स्वागत आपके देश में हुआ है, उसके लिये हम चिरकृतज्ञ हैं।''—शाबास लड़की! बड़े साहस का समयोचित कार्य किया है। निर्धारित कार्यक्रम में यह न रहने पर भी इस लड़की ने कमाल कर दिया। मालाएँ पहिना दी हैं उसने दोनों नेताओं को और अधिकारी हक्का-बक्का हैं, कार्यक्रम में यह कैसा व्यवधान। नेहरू घबड़ाये नहीं। मुस्करा रहे हैं। और अब देखिये।

मञ्च पर नेहरू बोल रहे हैं। नेहरू का स्वर''''लाखों आदमियों के कानों से टकराता है। रेडियो कामेन्टेटर चुप है। नेहरू बोल रहे हैं—

"मुझे बहुत खुशी है, आपका स्वागत करते हुए। पहली बार भारत की जमीन पर आपके कदम पड़े हैं। आपके और हमारे देश करीब हैं, करीब-करीब पड़ोसी देश हैं। पर पुराने जमाने में हमारे आपके सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ नहीं रहे। भाग्यवश अब रोज-ब-रोज हमारे ताल्लुकात बढ़ते जा रहे हैं।

कुछ महीने पहले मैं आपके देश में गया था। जिस मुहब्बत और उत्साह से वहाँ मेरा स्वागत हुआ, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता। मेरा विचार है कि मेरे जाने से हमारे सम्बन्ध बढ़े और मेरा यकीन है कि अब आपके आने से हमारे सम्बन्ध और ताल्लुकात बहुत तरह से बढ़ेंगे और बहुत सारी बातों में हमारे दोनों देश एक दूसरे से सहयोग कर सकेंगे। और इससे हमारे दोनों देशों का लाभ होगा और दुनिया में अमन होगा। मैं आपका फिर से स्वागत करता हूँ।"

तालियों की गड़गड़ाहट''''''मञ्च पर पुष्प-वर्षा हो रही है। मार्शल बुलगानिन माइक के सामने हैं। अपनी मातृभाषा में वह अभिनन्दन का उत्तर दे रहे हैं। जनता एकदम शान्त पड़ गई है। रूसी भाषा का धाराबाहिक स्वर सुनायी पड़ रहा है।

रूस का ही एक व्यक्ति अनुवाद करता है।

"मान्य प्रधानमंत्रीजी और प्यारे दोस्तो! हमें खुशी है कि आपके

प्रधानमंत्री नेहरू के हार्दिक निमन्त्रण पर भारत के गणतन्त्र राज्य में आने का अवसर मिला है। इसके लिए हम आपके प्रति और भारत के प्रधान-मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रति हार्दिक अभिनन्दन प्रकट करते हैं।

भारत की परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली जनता के प्रति, जो एक महती मौलिक संस्कृति की निर्मात्री है, सोवियत जनता सम्मान और मित्रता की आनन्दमय भावना रखती है। आज इस प्राचीन धरती पर हमारा आगमन हुआ है। स्वतन्त्र भारतीय गणराज्य की स्थापना का रूस ने सन्तोष और हर्ष के साथ स्वागत किया था।

शांतिप्रिय भारतीय जनता ने अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए जो वीरतापूर्ण संघर्ष किया था, उसके प्रति सोवियत जनता की सदैव हार्दिक सम्मान और सहानुभूति रही है। भारत की रचनात्मक शक्तियों पर हमारा अटूट विश्वास रहा है और भारत ने विश्वशांति को सुदृढ़ बनाने में महान योग दिया। सोवियत सरकार, शान्ति की स्थापना देश के आर्थिक विकास के लिए भारत सरकार के प्रयत्नों को समझती है और प्रशंसा करती है।

भारत और सोवियत जनता के सामने बहुत से समान काम हैं। विवादग्रस्त अन्तराष्ट्रिय प्रश्नों को शान्तिपूर्ण तरीकों एवं वार्ता द्वारा हल करने का भारत और सोवियत यूनियन भारी प्रयत्न कर रहे हैं और इस प्रकार शान्ति को कायम रखने और सुदृढ़ बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रयास के अनेक शुभ परिणाम भी निकले हैं।

भारत और सोवियत यूनियन ने एक दूसरे से मैत्री सम्बन्ध बढ़ाने का जो प्रयत्न किया है, उसने अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने में महत्वपूर्ण योग दिया है।

अपनी भारत-यात्रा के इस अवसर का लाभ उठाकर हम भारत की जनता, उसके रीति-रिवाज एवं अर्थ-व्यवस्था का विकास करने के उसके प्रयास की सफलताओं का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करना चाहेंगे।

हम आशा करते हैं कि भारतीय जनता से हमारे मिलन तथा राजनीतिज्ञों से हमारे सम्पर्क की वृद्धि से हम दोनों के देशों की पारस्परिक मैत्री और सद्भावना बढ़ेगी।

आपके हार्दिक स्वागत के लिये मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

भारत और सोवियत यूनियन की जनता की मैत्री अमर रहे।"

मञ्च के नीचे कैमरे घूम रहे हैं। क्लिक् क्लिक् कैमरों के बटन दब रहे हैं। संवाददाता समाचार लिख रहे हैं। संवाद समितियों के टेलीप्रिंटर खटखट कर रहे हैं।

बुलगानिन नेहरू के साथ मञ्च से उतरे। खुली जीप। दायीं ओर बुलगानिन, बायीं ओर क्रुश्चेव, बीच में नेहरू···जीप चली। आगे आगे दो जीपें, चार मोटर साइकिलें···फिर आगे-पीछे सशस्त्र सैनिक, ट्रांसमीटर्स लगे हैं। एक एक पल का आदेश हो रहा है। सुरक्षा के लिये सारी शक्ति लगी हुई है। सशस्त्र सतर्क सैनिक अधिकारी आगे पीछे··· जनसमूह टूटा पड़ रहा है।

"शान्ति, पंक्तिबद्ध···"

"मार्शल बुलगानिन, जिन्दाबाद।"

बुलगानिन, क्रुश्चेव नेहरू, हाथ हिला रहे हैं। बुलगानिन भारतीय जनता को नमस्ते कर रहे हैं।

आनंद, हर्ष, पुष्प वर्षा से सारा वातावरण भर गया है।

"सावधान, सावधान, सावधान, माननीय अतिथि जा रहे हैं···पंक्तिबद्ध, पूर्ण शान्ति, संयम,·· भारत की प्रतिष्ठा का ध्यान रखें···"

तीन बजकर पाँच मिनट-जीप आगे बढ़ रही है हवाई अड्डे से। पथ पर लाखों मनुष्यों की भीड़ रूसी नेताओं का स्वागत कर रही है। नारों से आकाश गूँज रहा है। रूसी नेता देख रहे हैं। आज दिल्ली अपनी पूरी शक्ति से उन सबका हार्दिक अभिनन्दन कर रही है। सड़क के दोनों ओर तिल रखने की जगह नहीं···सड़कें खूब सजी हैं। रूस और

भारत की झण्डियाँ लहरा रही हैं। रूसी और हिन्दी भाषा में स्वागत पट्ट झूल रहे हैं। सारा पथ सुसज्जित है। हर ओर नर मुण्ड ही नर मुण्ड।

गेट वे आफइण्डिया, तुर्कमान, राजपथ, जनपथ कनाटप्लेस !

बापरे ! कितनी भीड़। जिधर नजर जाती है, आदमी ही आदमी। मालूम पड़ता है, सारी दिल्ली यहीं टूट पड़ी है। वह देखिये, शिवसागर पाण्डेय, रेडियो से आँखों देखा हाल उस मकान की छत से प्रसारित कर रहे हैं—"कल जब मैं प्रयाग से दिल्ली की ओर रवाना हुआ तो……

यह देखिये आ गये बुल्गानिन, खुली जीप…जनता आनन्द विभोर हो रही है। पुष्प वर्षा…तालियों की गड़गड़ाहट नारों की गरजना… "हिन्दी रूसी भाई भाई…"

जनपथ, राजपथ, जीप दौड़ी जा रही है ! मानव सागर की लहरें हर स्थान पर उछल उछलकर अपने अतिथियों का स्वागत कर रही हैं। वह देखिये, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर रेडियो-माइक पर कामेण्ट्री दे रहे हैं—"मेरे सामने जनपथ है, पीछे असेम्बली भवन है, मैं देख रहा हूँ सर्वत्र नरमुण्ड ही नरमुण्ड…एक ऐसा स्वागत जो इतिहास में अनोखा है…"

जीप राष्ट्रपति भवन की ओर जा रही है। अप्रत्याशित रूप से दिल्ली के लाखों नागरिकों का पलक पाँवड़े बिछाकर होने वाला स्वागत पाकर रूसी नेताओं का हृदय भर आया है। आश्चर्यचकित से वह चारों ओर देख रहे हैं। ओफ ! ऐसा स्वागत ! इतना स्वागत ! क्या इतना स्वागत हमने अपने देश में नेहरू का किया था !

राष्ट्रपति भवन ! चार बजकर सात मिनट।

रेडियो-माइक पर कौशल्या मान्चे कह रही हैं—"मैं देख रही हूँ हमारे सम्मानित अतिथि मार्शल बुलगानिन, श्री क्रुश्चेव चले आ रहे हैं। बीच में नेहरू हैं। दाहिनी ओर जो बारहखंभी है, उसी के पास बने तोरणद्वार से अतिथि राष्ट्रपति भवन में प्रवेश कर रहे हैं……"

"मार्शल बुलगानिन जिन्दाबाद !"

"सोवियत रूस भारत मैत्री...जिन्दाबाद !"

आकाश गूँजता है। पुष्प-वर्षा होती है। रास्ते भर हुई पुष्प वर्षा से जीपें भर गई हैं। अतिथि उतरते हैं। राष्ट्रपति भवन में प्रवेश करते हैं। चारों ओर सख्त पहरा। केवल आज्ञा पत्र प्राप्त व्यक्ति ही भीतर जा रहे हैं। सीमित संख्या में।

विश्वास कीजिये, आज ६ स्पेशल ट्रेनें दौड़ी हैं और कोई १२ बोगियों में प्रत्येक बार १०००० से अधिक जनता दिल्ली के प्लेटफार्म पर उतरी है। अधिकांश बिना टिकिट। देहली प्रादेशिक काँग्रेस कमेटी की ओर से २४ ट्रकें मुसाफिरों को बिना पैसे बराबर ढोती रही हैं। आज देहली में सुबह दस बजे तक ४० मन फूल बिक चुके हैं। ५०० से अधिक बैलगाड़ियां और ऊँट देहली की सड़कों पर देखे जा चुके हैं। एक केन्द्रीय मंत्री, जो हाल ही में विदेश यात्रा से लौटे हैं अपने बहुमूल्य मूवी कैमरे पर फोटो लेना अन्तिम क्षणों तक सीखते रहे, जब तक कि मार्शल बुलगानिन आ न गये। यह विशाल भीड़ देख रहे हैं न आप, सड़कों पर। इसी की करामात के कारण वयोवृद्ध पं० गोविन्द वल्लभ पन्त हवाई अड्डे पर स्वागत समारोह में सम्मिलित न हो सके और अब वापस राष्ट्रपति भवन जा रहे हैं।

चहल-पहल है। हवाई अड्डे की जनता शहर लौट रही है। साँझ हो गई है। सारी देहली जगमगा रही है। दीपावली को भी इतनी रोशनी दिल्ली में न थी। सारी देहली बिजली के प्रकाश से इस प्रकार नहा रही है, जैसे रात नहीं, दिन का वक्त है। राष्ट्रपति भवन जगमगा रहा है।

उद्यान के उत्तरी भाग में लोक गीत, लोक नृत्य का आयोजन है। बिहार और दिल्ली के कलाकारों का दल अपने अतिथि के स्वागत में नृत्य और गीत की तैयारियाँ कर रहा है। इस भाग में पूर्ण रूप से ग्रामीण वातावरण उपस्थित है। एकदम गाँव का दृश्य। गोबर से लिपा मैदान !

आम्र-पत्तों से सजा तोरणद्वार, झाड़ियाँ···एकदम गाँव का दृश्य···बिजली कम, दीपमालाएँ अधिक ! जगमग जगमग दीप जल रहे हैं । घी के दीप !

हये ! डिम् डिम् डिम् डिमाक् डिमाक् डिम् !

छम् छम् छम् छमाक् छमाक् छम् छम् छम्···

ग्रामीण वेश में खड़े नर्त्तक, नर्त्तकियाँ आगे आ रहे हैं । ग्रामीण भारत के दर्शन, ग्रामीण भारत के नृत्य, गीत···

हये ! ढोलक पर थाप पड़ी ! आ रहे हैं हमारे माननीय अतिथि । प्रधान मंत्री से मिलकर···लगभग ४५ मिनट चाय पर बातें हुई हैं । हमारे प्रधान मंत्री साथ ही हैं और यह हैं श्रीमती इन्दिरा !

अतिथिगण बैठ जाते हैं । श्री विष्णु प्रभाकर उद्यान के एक कोने में रेडियो माइक पर खड़े हैं । कह रहे हैं, इनकी यह आवाज देश के हजारों रेडियो पर गूँज रही है—"लोक गीत, लोक नृत्य ही किसी देश की संस्कृति के प्राण हैं । संस्कृति जानना हो, तो लोक-गीत, लोक-नृत्य देखिये । देश का नक्शा सामने है । यह देखिये···भारत की ग्रामीण संस्कृति का दर्शन ··"

डिम् डिम् डिम् डिमाक् डिमाक् डिम् डिम्···

छम् छमाना छन् छन् छन् छन् छे छम् छम्···

ग्रामीणाएँ, ग्रामीणों का झुण्ड झूमा । बाजे घुँघरू, बाजे ढोल, बाजे झाँझ···झूमी पगड़ियाँ, लहराये घाँघरे !

"होओो ओ ओ ओ, आधी रतिया की बेला, चन्दा मुसकाये रे··· पिया नहीं आये रे······हये हये हये हये हे···पिया नहीं आये·· होये होये होये होय होय·· आधी आधी रतिया की बेला···"

दर्शक मंत्रमुग्ध । अतिथि मंत्रमुग्ध । झूम रहा है ग्रामीण भारत । झूम-झूमकर नाच रहे हैं ग्रामीणों के झुण्ड···भारतीय लोक संस्कृति, नृत्य, गीत, भारतीय वाद्य, खुला उद्यान, जगमग जगमग, सहस्त्र सहस्त्र दीप··· इन्द्र का अखाड़ा भी मात, एकदम फीका ! देखिये मार्शल बुलगानिन

ताली पीट रहे हैं। उनका रोम-रोम, भारत जिन्दाबाद, ग्रामीण भारत जिन्दाबाद, महान भारत जिन्दाबाद, भारतीय लोक संस्कृति जिन्दाबाद के मूक नारे लगा रहा है।

और रूसी कैमरामैन श्री रोमन कारमैन को तो आपने देखा ही नहीं। प्रावदा के उपसंपादक भी साथ हैं। यह कैमरामैन पालम हवाई अड्डे से बराबर भागता आया है। उसकी फुर्ति देखते ही बनती है। रूसी नेताओं का, उनके स्वागत का क्षण क्षण का दृश्य वह अंकित कर रहा है, इस यात्रा विवरण को अमरत्वप्रदान कर रहा है। दङ्ग है वह भी, ऐसा अभूतपूर्व स्वागत देखकर!

लोक-गीत, लोक-नृत्य चल रहे हैं। आइये, तब तक हम इन महान नेताओं के जीवन के पन्ने पलट लें। अभी समय है। यह हैं मार्शल बुलगानिन। सन् १८६५, शहर निज्नी नोवोगोरोद (अब गोर्की नगर) एक साधारण दफ्तर क्लर्क का परिवार, यहीं एन ए० बुलगानिन का जन्म होता है। फरवरी १९१७ की क्रांति के पश्चात् वह कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनते हैं। १९१८ से १९२२ तक अखिल रूसी विशेष आयोग के संगठनों में प्रमुख पदों पर रहते हैं। १९२२ से १९२७ के बीच राष्ट्रीय अर्थतंत्र की सर्वोच्च समिति के निकायों में कई प्रमुख पदों पर कार्य करते हैं। १९२७ में मास्को में बिजली के सामान के कारखाने में मैनेजर, जनवरी १९३१ में मास्को सोवियत के अध्यक्ष, १९३७ में कमिसार समिति के अध्यक्ष, १९३८ में जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष, बैंकबोर्ड के प्रधान, १९४१ से १९४४ के बीच पश्चिमी सैन्य समिति के सदस्य, १९४४ में राज्य सुरक्षा समिति के सदस्य, मार्च १९५३ में सोवियत संघ की मंत्री परिषद के पहले उपाध्यक्ष, सोवियत संघ के सुरक्षा मंत्री, ८ फरवरी १९५५ को सोवियत संघ की मंत्री परिषद के अध्यक्ष, अनेक पदकों और पदवियों से विभूषित!

और यह हैं श्री ख्रुश्चेव, सामान्य मजदूर परिवार में १७ अप्रैल १८६४

को कुर्स्क प्रदेश के कोलिनोका गाँव में जन्म। पिता खनक थे। क्रुश्चेव ने भेड़ बकरियाँ चराने का काम किया, खदानों में फिटर का काम किया। रूस के गृहयुद्ध में दक्षिणी मोर्चें पर डटे, मजदूर विद्यालय में अध्ययन किया। दोनवास, कीव में पार्टी के प्रमुख कार्यकर्त्ता, १९३२–३४ में मास्को वित्तीय समिति के सचिव, कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रधान सचिव, १९३४–५२ तक पार्टी के प्रमुख पदों पर, १९५३ में केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव, हीरो आफ सोशलिस्ट लेबर की सम्मानित उपाधि प्राप्त व्यक्ति!

जी हाँ। यही हैं हमारे सम्मानित महान अतिथि, जो इस बात के प्रतीक हैं कि मनुष्य अपने कर्मों से क्या नहीं कर सकता! सच! कितना-फौलादी व्यक्तिव्य है इनका। राजनैतिक मत-मतान्तरों से परे, व्यक्ति के नाते, इनके समक्ष हम श्रद्धा से नत हो, हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। मार्शल बुलगानिन, क्रुश्चेव, जिन्दाबाद!!!

राष्ट्रपति भवन से बाहर निकलकर तो देखिये। अहा! सारी देहली जगमगा रही है। दीपावली की रात आप यहाँ थे? अजी जनाब, वह दीपावली की रात मात है आज। हजारों दीवालियाँ मात हैं। सारी देहली झूम रही है। असंख्य भारतीय और रूसी-पताकाएँ पवन झकोरों से इठला रही हैं। भारत रूस मैत्री जिन्दाबाद! हिन्दूकुश और हिमालय की ऊँचाई को तोड़कर आज दो महान देश एक हो गये हैं। दो मैत्री के हाथ, शान्ति के सद्प्रयास के लिये एक दूसरे से जकड़ गये हैं। पश्चिमी राष्ट्र इस अप्रत्याशित और अद्भुत मिलन को आँखें फाड़कर देख रहे हैं। एशिया जाग रहा है, करवटें बदल रहा है। नये एशिया का नया इतिहास बन रहा है। ऐतिहासिक तिथि है, १८ नवम्बर १९५५!

हाँ, तो अब फिर देखिये। देखिये हैदराबाद का लाम्बन्दी नृत्य, सैराकला छओ, मणिपुरी नृत्य, राजकोट, विजयवाड़ा, मलाबार के लोक-गीत, लोक-नृत्य।

छमक् छमक् छम् छम् छे छे…

सारे भारत का नक्शा, नृत्य और गीत का प्रदर्शन एक ही स्थल पर। कितने प्रसन्न हैं हमारे अतिथि! प्रत्येक प्रान्त से आये दलों के नेताओं को गुलदस्ते दे रहे हैं। देखिये, फोटो उतरवा रहे हैं सबके साथ खड़े होकर!

अरे! घड़ी ने साढ़े दस बजा दिये।

भई! रात हो गयी। सोने का समय। अपने अतिथियों से विदा लीजिये। वह सब भी अब विश्राम करने जा रहे हैं।

१६ नवम्बर ५५ का सुहावना सबेरा। सूरज के पीले फूल दिल्ली पर बरस रहे हैं। राष्ट्रपति भवन में हलचल मची हुयी है। श्री नित्यानन्द कानूनगो, श्री एन. आर. पिल्लई, श्री के. पी. एस. मेनन राष्ट्रपति भवन आ गये हैं। रूसी नेता तैयार हो गये हैं। सूरज की सफेदी तेज हो गयी है। यह आये प्रधानमन्त्री बुलगानिन। यह हैं श्री क्रुश्चेव! और इन्हें देखिये। श्री मिखीलोव, श्री प्रेमिको, श्री कुमकिन, श्री रेसोलोव, श्री शेरोव, श्रीरेसिह्डिोव, श्री जखारोव, श्री स्टोलियारोव, श्री लिटोव-चेनको, श्री बोज्रुक, श्री सेवरडोव, श्री शेतेनोव, श्री कोशोव, श्री बुगाकोव, श्री भेस्केभिज्को, श्री लोबोडोव, श्री रेभिकोव, श्री छेमिडोव और यह हैं श्रीमती रहीम वायीयेवा, श्रीमती कान्त्रकेनाव, श्रीमती लश्किना। यह है पूरा दल, जो रूस से आया है और हमारा सम्मानित अतिथि समूह है।

राष्ट्रपति भवन के प्रवेश द्वार पर बिगुल बजता है। सब होशियार!

और यह देखिये। कतार की कतार फौजें। अब एक फूल मालाओं

से भरी। राष्ट्रपति पथ से यह समूह बढ़ रहा है, राजघाट की ओर। पथ के दोनों ओर लोगों के ठट के ठट लगे हैं। हजारों हाथ हिल रहे हैं। नारों से आकाश गूँज रहा है। दिल्ली के नागरिक पग-पग पर अभिनन्दन कर रहे हैं।

राष्ट्रपिता बापू की समाधि का अभिषेक सूरज की सुनहली किरणें कर चुकी हैं।

यहाँ भी लोगों की भीड़। शान्त, संयमित।

कारें रुकती हैं। अतिथि उतरते हैं। नियमानुसार नंगे पाँव आगे जा रहे हैं। दोनों हाथों में फूलों के बड़े-बड़े गुच्छे और हार हैं।

बापू की समाधि पर पुष्पाञ्जलि अर्पित कर रूसी नेता, हमारे रूसी भाई पंक्तिबद्ध मौन खड़े हैं। नतमस्तक! भारत के महामानव तुम्हारी जय हो!

एक मिनिट मौन!

पीछे लौट रहे हैं हमारे अतिथि! और देखिये यह हैं, बापू के प्रिय शिष्य! पहिचाना नहीं आपने? श्री वियोगी हरि। अतिथियों का स्वागत कर रहे हैं। माला अर्पित कर रहे हैं। वातावरण कुछ ग़मगीन सा हो गया है।

अब सब लौट रहे हैं।

रास्ते में वही अभिनन्दन, वही उल्लास, ऐसा उल्लास, ऐसा स्वागत, जो शायद बरसों तक फिर किसी के लिये दुहराया न जा सके।

पथ के दोनों ओर फिर वही ठट के ठट लगे हैं। मानव समुद्र की लहरें स्वागत, अभिनन्दन का उत्तर अपने मूक इशारों से देते हुये रूसी नेता आगे बढ़ते जा रहे हैं।

यह फैज बाजार रोड। यहाँ तो बड़ी भीड़ है। वह देखिये मार्शल की जीप की चाल धीमी हो गयी। अनगिनती मानव, अविरल पुष्प-वर्षा और जय-जयकार···बड़ी मुश्किल से हमारे सम्मानित अतिथि आगे बढ़े

हैं। मार्शल, जनता का यह अभिनन्दन पाकर गद्गद् हो रहे हैं। लीजिये, श्री नित्यानन्द कानूनगो को अकेले छोड़कर हमारे परराष्ट्र सचिव श्री पिल्लई तो यहीं उतर गये। खैर इन्हें जाने दीजिये। हम अतिथियों के साथ चलें।

यह लाल किला। दिल्ली का ऐतिहासिक लाल किला। दीवाने आम, दीवाने खास। यह आ गये चीफ कमिश्नर श्री ए० डी० पण्डित। यह हैं श्री हँडू। अतिथियों को आप लोग बादशाह शाहजहाँ की बातें बतला रहे हैं। यह रहा हम्माम, यह दीवाने आम, और देखिये यह है वह स्थान, जहाँ तख्ते-ताउस पर बादशाह बैठता था। रुकिये ज़रा। यहाँ आप लोगों की एक फोटो। मार्शल और क्रुश्चेव खड़े हो गये। क्लिक्! एक पोज ले लिया गया···और बाहर लोगों की भीड़ नारे लगा रही है।

आइये।

अतिथि बाहर आते हैं। यह दौड़ी एक बालिका। एक पैर बचपन की आखिरी सीढ़ी पर और दूसरा जवानी की पहिली सीढ़ी पर।

क्या है?

आटोग्राफ!

मार्शल बुलगानिन मुस्कराते हैं। लाओ। आटोग्राफ दिया। बढ़िये आगे। जामा मसजिद चलना है।

जामा मसजिद! सीढ़ियों पर पंक्तिबद्ध जनता स्वागत कर रही है, अपने अतिथियों का। मसजिद में प्रवेश करते ही "सुन्नी मजलिस औकाफ़" की ओर से स्वागत हो रहा है। अध्यक्ष मौलाना हफीजुर्रहमान श्रद्धापूर्वक मालाएँ पहना रहे हैं। आइये देखिये, जामा मसजिद। नई दिल्ली से दूर, पुरानी दिल्ली के पास जामा मसजिद भारत में मुसलमानों के वैभव की अमर यादगार बनकर खड़ी है। इसी मसजिद में जाने कितने बादशाहों के पैर पड़ चुके हैं। यह आये बड़े इमाम सैयद अब्दुल हमीद बोखारी। यह हैं उनके पुत्र! देखिये दोनों किस प्रेम से

मालाएँ पहना रहे हैं। बाहर नारे उठ रहे हैं—"सोवियत रूस भारत मैत्री, जिन्दाबाद !

दस हजार से भी अधिक की संख्या में जनसमूह एकत्रित है। रंग-बिरंगी मालाएँ, पताकाएँ, गुब्बारे, सीढ़ियों पर बिछे लाल कालीन।

चले अतिथि। सरकुलर रोड, कनाटप्लेस, पार्लमेंट स्ट्रीट, दोनों ओर आदमियों के ठट। यह रहा जन्तर-मन्तर। वेधशाला, राजा जयसिंह। देखिये यह हैं पण्डित शिवलाल, खगोल के प्रकांड पण्डित। अतिथियों का स्वागत करते हैं आप। जन्तर-मन्तर की दर्शनीय वस्तुएँ दिखला रहे हैं। बतला रहे हैं भारतीय खगोल''मार्शल बुलगानिन अत्यत उत्सुक हैं। पूरी जानकारी के लिये अनुरोध करते हैं। पण्डित शिवलाल एक अलबम सम्मानित अतिथियों को देते हैं।

यहाँ से आप कुतुब मीनार जा रहे हैं। कुतुब मीनार। भारत का अद्भुत लौह स्तंभ! दोनों सज्जन देख रहे हैं। इसका घेरा? यह अधूरे दृश्य? आज तक जंग क्यों नहीं लगा? आश्चर्य है ईसा की ४ थी शती में इतना बड़ा गोल स्तंभ ढाला कैसे गया? एक गुलाम द्वारा बनवाया गया कुतुब मानों कह रहा है—"भले ही तुम मुझे गुलाम कहो, पर एक गुलाम भी सदियों तक किस प्रकार तनकर खड़ा रह सकता है, इसका उदाहरण मैं हूँ।"

सम्मानित अतिथि राष्ट्रपति भवन वापस जा रहे हैं। राष्ट्रपति आ चुके हैं। इन नेताओं की प्रतीक्षा में हैं। पुष्पों और हारों से लदे अतिथि राष्ट्रपति के पास जा रहे हैं।

राष्ट्रपति भवन। राष्ट्रपति का स्वागत-कक्ष! आइए स्वागत है। राजेन्द्र बाबू आगे बढ़े। दोनों से मिले और मार्शल बुलगानिन अपने राष्ट्रपति परमश्रेष्ठ वोरोशिलोव का एक निजी पत्र दे रहे हैं। पत्र रूसी भाषा में है, पर साथ ही उसका अंग्रेजी और हिन्दी अनुवाद भी लिखा हुआ है।

चलिये भोजन का समय हो गया।

उद्यान में विशाल शामियाना तना हुआ है। कुल १५० विशिष्ट व्यक्ति ही यहाँ उपस्थित हैं। दोपहर का भोजन राष्ट्रपति के ही साथ होगा।

देख रहे हैं न, महिलाओं के इस झुण्ड को। हैं तो भारतीय भूषा में, पर इनके होंठ, फीरोजी लिपस्टिकें, गुलाबी लिपस्टिकें किस कदर होंठों पर रगड़ी गई हैं। जरा देखिये गौर से। स्नो पाउडर की परतें। खैर, इत्र की सुगन्ध और सौन्दर्य प्रसाधनों की नकली गन्ध से दूर रहकर राष्ट्रपति के इन एक दर्जन पोते-पोतियों को देखिये। किस उल्लास के साथ रूसी नेताओं का चित्र ले रहे हैं। देखिये श्री थापा भी चित्र ले रहे हैं। पहिचानते हैं न आप इन्हें। यही हैं हमारे थापा, जिन्होंने रूस जाकर नेहरू यात्रा की फिल्म तैयार की रूसी कैमरामैन भी जुटे हुये हैं।

सजे-सजाये शामियाने में भोज चल रहा है। राष्ट्रपति अपनी मधुर मुस्कान से स्वागत कर रहे हैं। श्रीनेहरू यहाँ भी उपस्थित हैं!

हमें भी भूख लग रही है। चलिये, यहाँ कौन पूछेगा हमें। अतिथियों को आराम करने दीजिये। नेहरू की बात छोड़िये। वह श्रीमान आदमी नहीं, मशीन हैं। पार्लमेंट के केन्द्रीय हॉल में आयोजित, अंडरग्रेजुएट मेडिकल सम्मेलन में भाषण देने जा रहे हैं।

रामलीला मैदान! पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली के बीच। अहा! लाल हरे झण्डे''शान्ति द्वार बने हैं। साँची के स्तूप के प्रवेश द्वार का एक नमूना खड़ा है। यह है मंच, सारनाथ के स्तूप की शक्ल का। बड़े-बड़े रूसी और भारतीय झण्डे उसकी मेहराब पर फहरा रहे हैं।

बिजली, पानी, लाउडस्पीकरों की अपनी अलग व्यवस्था है। सैकड़ों बिजली के तारों का जाल बिछा हुआ है। सैकड़ों स्वयंसेवक, पुलिस, मिलिट्री के जवान तैनात हैं। हर समय किसी भी संकट का सामना करने के लिये।

ऊह! तिल रखने की जगह नहीं। नर मुण्ड ही नर मुण्ड। सात लाख से अधिक नर-नारी रामलीला के इस विशाल मैदान में एकत्रित हैं। जिधर देखिये, उधर ही झण्डियाँ, लोगों के सिर, टोपियाँ, टोप, पगड़ियाँ, अखबार, झण्डियाँ···अद्भुत भीड़, ऐतिहासिक समारोह, इतना विशाल मानव समूह।

मानव को शान्ति चाहिये। अन्तिम द्वार पर रूसी और हिन्दी भाषा में वाक्य लिखा है। बिजली की विशेष रंगीन व्यवस्था है। कितना अनुशासन है! इससे पहिले दिल्ली में इतना विशाल जनसमूह इतना अनुशासित कभी नहीं देखा गया। पेड़ों और इमारतों पर रंग बिरंगे बिजली के बल्ब, तुर्कमान गेट पर दीपमालिका, प्रकाशमान फ्लडला-इटस्···इन्द्रपुरी का समारोह भी मात! बजा बिगुल।

होशियार!

राष्ट्रपति भवन से चल पड़े हैं मार्शल और क्रुश्चेव। पाँच मील दूर है, रामलीला मैदान! फिर वही भीड़! लो, यहाँ इतनी प्रबल है कि पुलिस का घेरा टूट गया। पुलिस असहाय! अतिथि घिर गये। नेहरू ने ललकारा। सब हट गये। रास्ता साफ, पुष्प-वर्षा, नारे। मथुरा रोड, सरकुलर रोड, हार्डिंज पुल पर बने फाटक···कितने मनोरम हैं!

इन द्वारों से निकलकर हमारे अतिथि रामलीला मैदान में आ रहे हैं। १५० फुट की दूरी पर उतर जाते है। बिछा है कालीन। पुष्प-वर्षा हो रही है। फूलों की मालाएँ पथ के आर पार झूल रही हैं। एक के बाद एक द्वार। शान्ति द्वार, बुद्ध द्वार। नेता आगे बढ़ रहे हैं।

आ गये! देखिये देखिये, यह हैं श्री नेहरू, उनके साथ, हाँ, यही

हैं मार्शल बुलगानिन और श्री क्रुश्चेव ! मञ्च की ओर बढ़ रहे हैं। लाख लाख आँखों ने देखा। हजारों दूरबीनों ने देखा।

जोर की हर्ष ध्वनि। मंच भी काँप उठा। हजार-हजार हाथ हिल रहे हैं। हाथों में हैं लाल और हरी झण्डियाँ! लगता है, मानव समुद्र में रह रह कर लाल और हरी ऊँची ऊँची लहरें उठ रही हैं, गिर रही हैं।

तीनों महान नेता इस अभूतपूर्व दृश्य को देखकर आनन्द से भर गये हैं। नेहरू के हर्ष का ठिकाना नहीं। जोश और प्रसन्नता से एकदम भर गये हैं। ६६ साल के इस बूढ़े युवक की प्रसन्नता आज दर्शनीय है।

बुलगानिन ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर अभिनन्दन स्वीकार किया, तो क्रुश्चेव ने अपनी टोपी उतार ली है। महान भारत की महान जनता तुम्हारा अभिनन्दन!

देखिये नेहरू को। एक छलाँग में दोनों नेताओं के बीच। दोनों का हाथ पकड़ ऊपर उठा लेते हैं। मैत्री के हाथ।

हो, हो, हो, हो, विकट हर्ष-ध्वनि से आकाश फटा जा रहा है। मार्शल बुलगानिन जिन्दाबाद। भारत रूस जिन्दाबाद! मानव समुद्र में लाल, हरी हरी लहरें······

"स्वागत, वीर धीर मानव साथी, जय हे, जय, हे, जय हे स्वागत वीर धीर···"

लड़कियाँ गा रही हैं। कवि दिनकर रचित विशेष गीत!

"स्वागत अरुण-प्रभा का···लोज रहे भुजबल में···स्वागत हे···वीर धीर मानव साथी···"

धूप और अगरबत्तियों की सुगन्ध फैल रही है।

दूर दूर तक गीत के स्वर गूँज रहे हैं। राजधानी गूँज रही है।

उठे श्री रामनिवास अग्रवाल। दिल्ली म्युनिस्पल कमेटी के अध्यक्ष। दिल्ली के कोटि कोटि नागरिकों की ओर से महान नेताओं का अभिनन्दन कर रहे हैं। बुलन्द स्पष्ट आवाज—"दिल्ली अनेक नेताओं का स्वागत कर

चुकी है, दिल्ली ने राजनीति के बड़े बड़े उतार-चढ़ाव देखे हैं। पर जैसा आज आप लोगों का स्वागत हो रहा है, वह अभूतपूर्व है···"—अब आप अपने लम्बे मानपत्र से भारत और रूस की सामाजिक राजनैतिक प्रणालियों में भिन्नता की चर्चा करते हुये दोनों देशों के उद्देश्य में बहुत कुछ समानता की बात कहकर बोल रहे हैं—"हमारे सामने सहयोग का विशाल क्षेत्र है।"—आपने प्रसन्नता व्यक्त की—"विज्ञान, उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में दोनों देशों में यह सहयोग बढ़ता जा रहा है।"—अन्त में—"मैं आप सबका दिल्ली के नागरिकों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन ज्ञापन करता हूँ।"

गोटे और फूलों की सुन्दर मालाएँ!

तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गूँज रहा है। लगता है, सैकड़ों वायुयान घरघरा रहे हैं।

हाथी दाँत की दो सुन्दर कृतियाँ भेंट की जा रही हैं। एक है परदा और दूसरा रथ!

अरे! यह क्या! पतङ्ग! इसकी पूँछ में रूस और भारत की झण्डियाँ! वाह! यह पतङ्ग एकदम मञ्च पर आकर झुक झुक कर स्वागत कर रही है।

वाह!

नेहरू जी अतिथियों को यह दृश्य दिखला रहे हैं।

वाह! किसी मनचले के दिमाग की खूब सूझ है। अभिवादन कर उड़ गई पतङ्ग। भई! मजा आ गया। तालियाँ पिट गयीं।

आइये पण्डित जी। हाँ, तो हमारे पण्डित जवाहर लाल नेहरू आये माइक के सामने। आज तो प्रसन्नता का पारावार नहीं। सुनिये वह बोल रहे हैं—"यह दिन एक जमाने तक याद रहेगा। चन्द महीने हुये मैं सोवियत रू······यूनियन गया था।"—नेहरू का भाषण दुभाषिये की मदद से मार्शल बड़े ध्यान से सुन रहे हैं। नेहरू आगे कह रहे हैं:—

वहाँ के बहुत से नेताओं से बातचीत हुई थी। उनके सामने मैंने कुछ ख्यालात रखे थे और कुछ उन्होंने हमारे सामने। आज यहाँ आदरणीय मेहमान आये हैं और उनसे भी बातचीत होगी। इससे दोनों देशों को फायदा है। इसके पीछे चन्द आदमियों का मिलना नहीं; किन्तु ज्यादा बड़ी बात है। जब मैं सोवियत यूनियन गया तो मेरा जो प्रेमपूर्ण स्वागत वहाँ हुआ उसके माने दूसरे हैं। आज दोनो मेहमानों का जो स्वागत है उसके माने हैं—दोनों कौमों का एक दूसरे से मिलन और एक दूसरे को पहचानना। इसलिये यह बात काफी गहराई रखती है और काफी महत्वपूर्ण है।

हम यहाँ एक ऐतिहासिक मौके पर बैठे हैं। उसके नतीजे दूर तक जायेंगे, पर वे किसी के बुरे के लिये न होकर दुनिया की भलाई के लिये होंगे—और खासकर हमारे देश की भलाई के लिये।

हमारे ये मेहमान कल सबेरे ताशकन्द से रवाना हुए थे और चन्द घण्टों में दिल्ली पहुँच गये—मतलब यह कि हम एक दूसरे के कितने करीब—एक दूसरे के कितने पड़ोसी हो गये हैं। दुनिया बहुत छोटी हो गयी है। एक जमाना था कि हिमालय हिन्दुस्तान की सरहद पर एक दीवार थी, जिससे हमें फायदा भी था और कुछ रुकावटें भी थीं, लोगों के आने जाने में। हिमालय तो अब भी कायम है। पर वह दीवार नहीं। अब वह कड़ी बन गयी है, उन लोगों को परस्पर मिलाने की जो हिमालय से पार रहते हैं। हमें चाहिये कि हम उस मेल के जरिये दूसरे मुल्कों के सामने एक मिसाल रखें।

गांधीजी ने हमें कितने ही सबक सिखलाये—मिलकर रहने का पाठ पढ़ाया। उन्होंने सिखाया विरोधी से भी अच्छा वर्ताव करने और दोस्ती निबाहने का, पर अपने सिद्धान्तों पर कायम रहकर—किसी भय और कमजोरी से नहीं। वे ही सिद्धान्त आज बहुत जरूरी हो गये हैं। दुनिया आज अमन की ओर बढ़ी है, पर उसके रास्ते में भी अभी हजारों बाधें

हैं। इसलिये हमें कोशिश करनी है दूसरों से ठीक बर्ताव की। अमन की बुनियाद आपसी व्यवहार से शुरू होती है। इसलिये जरूरी है कि हम औरों से दोस्ती करें।

हमें इस बात का अभिमान है कि हमारे सब मित्र हैं—कोई दुश्मन नहीं। किसी मुल्क को इससे नाराजगी भी हो सकती है। पर हमारा दोस्ती का हाथ सबकी तरफ बढ़ा है और बढ़ा रहेगा। हमारा धर्म है कि हम अपने सब पड़ोसी देशों के साथ दोस्ती कायम करें।

डेढ़ वर्ष पहले चीन से जो समझौता हुआ था उससे एक चीज निकली थी—पञ्चशील। बाडुंग-सम्मेलन में ३० देशों की जनता ने उसे स्वीकार किया और अब धीरे धीरे दुनिया उसे स्वीकार करती जा रही है। सोवियत रूस ने उसे स्वीकार किया है, उसकी हमें खुशी है और विश्वास है कि यदि उन सिद्धान्तों पर हम चलें, तो संसार से लड़ाई का अन्त हो जायगा।

एक दुनिया की बात दूर है। पर उसके अतिरिक्त हमारा और ध्येय क्या हो सकता है। यदि वह पूरा नहीं हो सकता तो उसका मतलब है कि लोग एक दूसरे को खत्म करें। पर यह कोई रास्ता नहीं। उसके लिये शान्ति बड़ी चीज है और जो बातें उसके विरुद्ध हैं उन्हें हम खत्म करें। पर यह काम मंत्र पढ़ने अथवा जादू से नहीं होगा। उसके लिये कोशिश जारी रहने की जरूरत है।

हमें खुशी है अपने मेहमानों के आने की। उससे भारत और सोवियत का रिश्ता ज्यादा करीब का होगा। हमें चाहिये कि हम एक दूसरे से सीखें और फायदा उठायें। लड़ने और धोखा देने का जमाना अब खत्म हो गया। आज का दिन उन दिनों में गिना जायगा जब हम एक कदम आगे बढ़ रहे हैं।

तालियों की तुमुल गड़गड़ाहट के बीच नेहरू पीछे हटते हैं। सामने आते हैं मार्शल बुलगानिन। रामलीला मैदान में ३५ फीट ऊँचे मञ्च

पर खड़े मार्शल का भाषण मैदान में लगे ७५ लाउडस्पीकरों पर गूँज रहा है। ४५ एकड़ का यह सारा रामलीला मैदान इन्द्रपुरी का दृश्य मात कर रहा है। जगमगा रहे हैं १५,००० रंगीन बल्ब, १७५ फ्लड-लाइटें ३५ मरकुरी वेपर लेम्पस् और चमक रही हैं २० सर्चलाइटें!

सुनिये, मार्शल रूसी में बोल रहे हैं। अब उसका अनुवाद सुनिये—

"....भारतीय जनता व उसकी सरकार ने अपनी राष्ट्रीय-अर्थ-व्यवस्था तथा विशेषतया अपने राष्ट्रीय उद्योगों के विकास के लिए जो प्रयत्न किया है उसके प्रति हमारे देश के लोग सहानुभूति प्रकट करते हैं। वास्तव में इसी प्रकार की नीति से किसी देश को सच्ची स्वतन्त्रता मिल सकती है।

सोवियत संघ व भारत के बीच समानता व पारस्परिक सहयोग के आधार पर व्यापार एवं आर्थिक सहयोग के विकास के लिए आज सभी आवश्यक परिस्थितियाँ बन पड़ी हैं। दोनों देशों के सामाजिक व राज-नीतिक ढांचे भिन्न हैं लेकिन लोग बहुत-कुछ समान हैं और इसीसे हमारी मैत्री सुदृढ़ होती है और न केवल भारत व सोवियत संघ के लिए अपितु समस्त विश्व के लिये दृढ़तर एवं अधिक लाभदायक सिद्ध होती है।

सोवियत संघ और गणतन्त्र भारत, इस समय, सुदृढ़ आधार पर अपने सम्बन्धों का निर्माण कर रहे हैं। यह "पञ्चशील" के पाँच आधार हैं, जो एक दूसरे की राजकीय सीमा के सम्मान और सार्वभौमिता, अनाति-क्रमण, किसी बात को लेकर एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में निर-हस्तक्षेप--चाहे वे मामले आर्थिक हों या राजनीतिक, और या आदर्श-वाद के हों तथा समानता और आपसी लाभ के आधार पर, साथ ही शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व से बनते हैं।"

और रूस के प्रधानमन्त्री उच्च स्वर से कहते हैं, जयहिंद!

हुर्रा!! मार्शल के मुँह से जयहिंद निकलते ही आसमान काँप उठता है, जनसागर की हर्षध्वनि से। टोपियाँ उछल रही हैं। झण्डियाँ उछल रही हैं। कानों के परदे फाड़ देनेवाला शोर...हुर्रा हुर्रा...जयहिन्द!

अब फिर नेहरू माइक के सामने हैं। चीखे हैं—"रूस व भारत की जनता की मैत्री ···"

"जिन्दाबाद !"

"संसार में···।"

"शान्ति हो !"

नारेबाज-नेहरू नारा बुलन्द कर रहे हैं। जनता गला फाड़कर साथ दे रही है।

"हाँजी, जयहिन्द का नारा भी एक बार हो जाय !"

"जयहिन्द !"—कोटि कोटि कण्ठ एक साथ पुकार उठे। दसों दिशाएँ गूँज उठीं—"जयहिन्द !"

अब चलिये उपराष्ट्रपति के निवास स्थान पर। हमारे सम्मानित अतिथि और नेहरू तथा हमारे परराष्ट्र विभाग के कतिपय अधिकारी ही यहाँ हैं।

उपराष्ट्रपति स्वागत करते हैं सबका। डा० राधाकृष्णन के पोतों ने अतिथियों को घेर लिया है। आटोग्राफ लिये। अब चाय-पान हो रहा है। साथ ही साथ सभी विषयों पर बातें, साहित्य, राजनीति, प्राविधिक सहायता, औद्योगिक व्यापारिक।

लगभग ४५ मिनिट यहाँ व्यतीत हो जाते हैं।

६ कैनिंग स्ट्रीट, देहली। सोवियत राजदूत की ओर से सांध्य भोजन का आयोजन।

उपराष्ट्रपति निवास से सम्मानित अतिथि, नेहरू और डा० राधाकृष्णन के साथ यहाँ आ गये हैं। सोवियत राजदूत ने अतिथियों के सम्मान में यह भोज दिया है। विशिष्ट व्यक्ति ही निमन्त्रित हैं। किस हँसी खुशी के वातावरण में यह भोज चल रहा है। सौभाग्य है भारत का। सौभाग्य है देहली का। सौभाग्य है, इन क्षणों का, जो इतिहास में अमर हो गये।

इस भोज की समाप्ति के उपरान्त सम्मानित अतिथियों का दल रात्रि विश्राम के लिये राष्ट्रपति-भवन लौट जायगा।

२० नवम्बर १९५५, सुबह के आठ बज रहे हैं। राष्ट्रपति भवन से सम्मानित अतिथियों का समूह पालम हवाई अड्डे की ओर चला जा रहा है। कतार की कतार कारें। अतिथि जा रहे हैं, आगरे का ऐतिहासिक ताजमहल देखने। ताजमहल विश्व का एक आश्चर्य! संगमर्मर संगमूसा की आश्चर्यजनक इमारत युगों से खड़ी अपनी प्रेम कहानी कह रही है। और यमुना का नीला जल जाने कब से मुमताज की समाधि पर अपना सिर धुनता जा रहा है।

भागती कारों पर रूस और भारत के झण्डे देखकर ही रास्ते में गगन भेदी नारे गूँज रहे हैं। भारत रूस की मैत्री के नारे। विश्व शान्ति के नारे।

दिल्ली और आगरा के बीच बराबर बेतार के यन्त्र चल रहे हैं।

हवाई अड्डे से उड़ा जहाज! दिल्ली से आगरा की ओर! कुछ ही मिनिटों का रास्ता। जहाज उड़ा जा रहा है। बेतार से बराबर समाचारों का आदान-प्रदान हो रहा है। पूरी सतर्कता के साथ जहाज जा रहा है। भारत में आये ये अतिथि रूस की अनमोल धरोहर हैं।

आगरे का हवाई अड्डा। कितनी भीड़। दिल्ली जैसी नहीं, फिर भी आगरा की आबादी देखते हुये इतनी भीड़ आश्चर्यजनक है। मँडरा रहा है जहाज। हवाई अड्डे पर उत्तरप्रदेशीय विधान सभा के सदस्य, राज्यपाल क० मा० मुन्शी, श्रीमती लीलावती मुन्शी, कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी। उच्चपदस्थ पुलिस अधिकारी।

हवाई जहाज ने जमीन को चूमा।

हर्ष ध्वनि। नारे। बाहर आये अतिथि। राज्यपाल आगे बढ़े। मालाओं से लाद दिया अतिथियों को। उत्तरप्रदेश की जनता की ओर से आप सबका हार्दिक स्वागत है। अब मुन्शी जी को धन्यवाद दे रहे हैं मार्शल बुलगानिन। मोटरें तैयार खड़ी हैं। बाहर नारे लग रहे हैं। हवाई अड्डे से लेकर फोर्ट तक, आगरा के ताजमहल तक लाखों मनुष्य। सड़कें ठसाठस भरी हैं। रंगबिरंगी पताकाओं से सड़कें रंगीन हो उठी हैं।

मार्शल अपने साथियों के साथ ताजमहल जा रहे हैं।

हुर्रा···हुर्रा···हर ओर से पुष्प वर्षा हो रही है। नेताओं का दल जा रहा है। आगरा के नागरिक हर्ष से डूबे हैं। रूसी नेताओं का दिल खोलकर स्वागत कर रहे हैं।

मार्शल जनता के स्वागत का उत्तर हाथ हिलाकर दे रहे हैं।

वह देखिये, ताजमहल। प्रवेशद्वार पर ही हजारों मनुष्य एकत्रित हैं। मार्शल का दल देखते ही नारों से आकाश गूँज उठता है। साथ हैं श्री क० मा० मुन्शी और लीलावती मुन्शी। लीला रूस की महिलाओं से दुभाषिये की मदद से बातें कर रही हैं। सम्भवतः महिलाओं की ही चर्चा हो रही है। महिलाएँ अपने सम्बन्ध की बातें अधिक करती हैं।

ताज के प्रवेश द्वार पर नेताओं का अभिनन्दन देखिये। विशिष्ट व्यक्तियों के साथ मार्शल ताजमहल में चले जा रहे हैं। वाह! क्या निराली छटा है। आज सारे फव्वारे आनन्द के छींटे उड़ा रहे हैं। चमक रहा है ताज! सूरज की किरणों की मालाओं से आपाद मस्तक लदा ताज कितना उल्लासदायी, आकर्षक लग रहा है। सदियों से खड़ा ताज आज भी ऐसा लगता है, जैसे किसी ने कल ही इसका निर्माण समाप्त किया है। ताज का उद्यान भी खूब सजा है। ताज···दो प्रेमियों का महान स्मारक, जिसकी छाया में आज भी जाने कितने प्रेमी-प्रेमिका मिलते हैं और आपस में जीवन भर एक दूसरे के बने रहने की प्रतिज्ञा करते हैं।

ताज आज भी कठोर से कठोर हृदय को प्रेम के प्रति आकर्षित कर देने की शक्ति रखता है। इसे देखकर जाने कितनी प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं। इसी ताज पर जाने कितने गीत रचे जा चुके हैं। देश में ही नहीं वरन् विदेश में भी ताज के गीत हैं।

और इसी ताज पर रूसी कवि श्री तुरसिन जादी ने गीत लिखा है। श्री जादी १९४७ में भारत आये थे। सुनिये, जरा पास आकर। कृषि उपमंत्री श्री रसेलोव इसी कवि के गीत की पंक्तियाँ गुनगुना रहे हैं और मार्शल बुलगानिन बड़े ही ध्यान से उन पंक्तियों को सुन रहे हैं।

"भारतीय जनता ने अपने कलाकारों को प्रेरणा देने के लिये इस इमारत का निर्माण किया और प्यार से इसका नाम ताजमहल रखा। ताजमहल मुमताज की समाधि भी है। शाहजहाँ की प्रेयसि यहाँ सो रही है। दूर से देखो और प्रेरणा लो! रानी जाग जायगी। कलाकारों ने इसी विश्वास के साथ इनका निर्माण किया है।"

इस महान इमारत को देखकर मार्शल का हृदय भर आया है। द्वार पर अङ्कित कुरान की वे आयतें शायद उन्हें याद आ रही हैं, जिनको उन्होंने श्री ख्रुश्चेव को दिखलाया था।

और शायद इसी ताज के नीचे दबी शाहजहाँ और मुमताज की रूहें आज दिन में ही जाग उठी हैं कि उनके इस प्रेम स्मारक को देखने इतनी धूमधाम से कौन आया है!

यह मीनार, यह गुम्बद! यह मकबरा। धूप की गंध से सारा वातावरण महमह कर रहा है। यही है समाधि। मार्शल नत हो अपनी मूक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। हिन्दु मुस्लिम एकता के प्रतीक अमर कलाकारों की जय हो। उन कलाकारों की जय हो, जिन्होंने ताजमहल बनाया।

उद्यान में टहलने के उपरान्त ताजमहल के अन्तिम दर्शनकर मार्शल और श्रीख्रुश्चेव आगरे के किले की ओर जा रहे हैं। किले के मैदान में उनका स्वागत भी है।

आगरा का किला। साम्राज्यवाद का प्रतीक। ढहा नहीं, खड़ा है और उस समय तक खड़ा रहेगा, जब तक आदमी जिन्दा है। जब तक आदमी जिन्दा है, तब तक कहीं न कहीं साम्राज्यवाद भी जिन्दा है।

यह क्या है?

किले के प्रवेशद्वार के ही निकट बड़ा सा कटोरेनुमा पत्थर।

कोई उत्तर नहीं दे पा रहा है। यह क्या है?

"शायद नहाने का टब है!"—श्री क्रुश्चेव कहते हैं।

फौलाद जैसी मजबूत लाल ईंटों से बने किले के मैदान में हजारों आदमी एकत्रित हैं। रूसी नेता मञ्च की ओर बढ़ रहे हैं। आगे आगे हैं राज्यपाल मुन्शी।

मार्शल, भारत रूसी मैत्री जिन्दाबाद के नारे। मञ्च पर पहुँच रहे हैं रूसी नेता। नारों से गगन गूँज रहा है।

स्वागत-गान हो रहा है।

अब देखिये श्री मुन्शी अभिनन्दन कर रहे हैं—"मैं रूस के इन महान अतिथियों का स्वागत उत्तर प्रदेश की समस्त जनता की ओर से करता हूँ। हमारा सौभाग्य है कि ऐसे महान नेता आज हमारे बीच हैं। हमारी मित्रता की यह कड़ी युगों तक बनी रहेगी, इस आशा और विश्वास के साथ हम आपका स्वागत करते हैं।"

तालियों की गड़गड़ाहट! जैसी मेघों की कड़क कड़क कड़क···गड़ गड़ गड़ गड़···

मालाओं से लद गये हैं रूसी नेता। और अब आगरा के नागरिकों की ओर से यह उपहार। आगरा में बनी गृहोद्योग की वस्तुएँ······एवं सोना जड़ी जरी की दो टोपियाँ···

वाह! कमाल।

एक मार्शल ने पहिन ली और दूसरी क्रुश्चेव ने।

हुर्रा हारारा हो···प्रसन्नता की हुँकारों से सारा वातावरण भर जाता

हैं। किलक् किलक् खटाखट खटक्....पचीसों कैमरे एक साथ चलते हैं। अपने उपहारों को तत्काल प्रयोग में देख आगरा की जनता का हर्षनाद ताजमहल की दीवारों से टकराकर गूँज रहा है।

नागरिकों के इस उल्लासपूर्ण स्वागत का उत्तर देने के लिये श्री क्रुश्चेव आगे आये हैं। माइक के सामने बोल रहे हैं। सुनिये। रूसी भाषा। शान्ति के साथ सुनिये। अभी हमे इसका अनुवाद भी सुनने मिलेगा। श्रीक्रुश्चेव बोल रहे हैं। उपस्थित जन समूह सुन रहा है।

श्रीमक्रुश्चेव रुकते हैं। सुनिये, क्या कहा उन्होंने? हाँ कह रहे हैं—"आप लोगों के इस स्नेह प्रदर्शन के प्रति मैं अपना हार्दिक का आभार प्रकट करता हूँ। अभी मैं आपके देश का एक महान स्माकर ताजमहल देखकर आ रहा हूँ। ताजमहल को देखते समय मेरे मन में दो विचार उत्पन्न हुये। पहिला यह कि मनुष्य क्या नहीं कर सकता और दूसरा यह कि ताजमहल को बनाने में जनता को अवश्य कष्ट झेलना पड़ा होगा। शताब्दियों पहले भारतीय जनता कला के क्षेत्र में कितनी अग्रसर थी। ताजहल उसका जीता जागता नमूना है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि एक ओर राजा और सम्राट धन का अपव्यय करते थे दूसरी ओर जनता भूखों मरती थी। ताजमहल के वास्तविक निर्माता जनसाधारण हैं और यह श्रेय उन्हीं को मिलना चाहिए। कठिन संघर्षों के पश्चात् भारत स्वतन्त्र हुआ है। इससे उसकी उत्तरोत्तर उन्नति होनी निश्चित है किन्तु देश वस्तुतः स्वतन्त्र तब होता है, जब औद्योगिक क्षेत्र में वह आत्म-निर्भर हो जाता है। भारत और सोवियत रूस केवल सुदिन के ही साथी नहीं हैं। विपत्तियों के बादल उमड़ने पर जब दुर्दिन आ सकते हैं, तब भी दोनों देशों की मैत्री कायम रहेगी।"

सुख-दुख में भी साथी बने रहने की इस घोषणा पर तालियाँ पिट जाती हैं। श्री क्रुश्चेव की यह बात सुनकर अनेक विदेशी संवाददाता दंग हैं। सम्भवतः वह सोच रहे हैं, इस घोषणा का अर्थ क्या है?

अब राज्यपाल बोल रहे हैं। कहते हैं, भारत को पञ्चशील में पूर्ण आस्था है। भारत रूसी जनता की मैत्री को बहुमूल्य समझता है। भारत की नीति उसके प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार की है।

नागरिक स्वागत समाप्त हो रहा है। अब आइये इस उद्यान में। यहाँ भोज का आयोजन है। नगर के विशिष्टजन, विशिष्ट पदाधिकारी उपस्थित हैं, यहाँ। हाँ, भोज की तैयारियाँ एकदम पूर्ण है। वह आ गये अतिथि। आइये, बैठिये। राज्यपाल उपहार स्वरूप ताजमहल की प्रतिमूर्ति, जरी के वस्त्र किमखाब, मुरादाबाद और बनारसी पीतल के सामान भेंट दे रहे हैं।

धन्यवाद। मार्शल स्वीकार करते हैं। अब वह भी अपने देश के उपहार दे रहे हैं। ग्रामोफोन रेकार्ड, कैमरा, रूस में बनी कुछ वस्तुएँ।

श्री क्रुश्चेव कह रहे हैं—"आप लोगों ने हमें कलापूर्ण कृतियाँ दी है। हम आपको इन रेकार्डों में बन्द अपने देश के गीतों को दे रहे हैं और साथ ही हमारी इन चीजों से आपको यह पता चलेगा कि मशीनें क्या बना सकती हैं?"

श्रीमुंशी स्नेहपूर्वक रूसी नेताओं का यह उपहार स्वीकार कर भोज प्रारम्भ कर देते हैं। सुगन्धित पदार्थों की मह-मह। उद्यान के एक कोने में पुलिस के भय से कुछ भिखमंगों का समूह छुपा है। उन्हें यह पता लग चुका है। आज यहाँ भोज है। कुछ देर बाद बचा हुआ जूँठा बाहर आवेगा ही। इसी आशा से खड़े हैं वह।

रंग-बिरंगी पोशाकें। स्त्री पुरुषों की हलचल। हँसी, कहकहे। बड़े ही प्रसन्न वातावरण में भोज चल रहा है। मार्शल भी प्रसन्न हैं।

भोज की समाप्ति पर वह राज्यपाल मुंशी को धन्यवाद देते हैं। श्री क्रुश्चेव याद दिलाते हैं—"और श्रीमती मुंशी को भी ''?"

"हाँ, उन्हें भी।"—मार्शल कहते हैं।

इस पर बड़ा कहकहा लगता है।

दो बज रहा है। दिल्ली वापस लौटने का समय हो गया।

चलिये।

अतिथि हवाई अड्डे की ओर जा रहे हैं। स्वागत, नारे, जनसमूह... हवाई अड्डे पर अतिथि विदा ले रहे हैं। जहाज एकदम तैयार।

घररररर घररर घररर....सरका...घर्र घर्र...ऊपर उठा। और ऊपर। फुर्र...उड़ गया। आकार छोटा होता गया। देखते-देखते आँखों से ओझल।

घड़ी में चार बज रहे हैं। यह दिल्ली है। कुछ ही देर पहिले यह दुःखद समाचार आ चुका है कि बम्बई में उपद्रव हो रहे हैं। मुख्यमन्त्री मुरारजी भाई देसाई पर ढेला फेंका गया। बृहत्तर महाराष्ट्र के नाम पर चौपाटी की एक सभा में बड़ा ही उपद्रव हो रहा है। गत अठारह तारीख को भी ऐसी ही एक घटना घट चुकी है। पालम हवाई अड्डे पर जब नेताओं का स्वागत हो रहा था, तो उस समय बंबई में पुलिस लाठी-चार्ज कर रही थी। भारत एक विशाल देश है। घटनाएँ घटती ही रहती है। फिर भी ऐसे अवसर पर प्रदर्शन, लाठीचार्ज अशोभनीय हैं। २२ तारीख को हमारे सम्मानित अतिथि बंबई भी जाने वाले हैं।

साढ़े चार। मुगल गार्डन। राष्ट्रपति भवन का उद्यान आज, इस समय तो अपनी पूरी जवानी पर है। खुला आसमान। पुष्पो से भरा उद्यान। सैकड़ों टेबिलें, कुर्सियाँ,। राष्ट्रपति की ओर से श्री नेहरू के सहयोग से सम्मानित अतिथियों को राजकीय भोज दिया जा रहा है। बड़ी संख्या में सभी वर्ग के लोग इकट्ठे हैं। जनसाधारण को छोड़कर। वह तो प्रवेश द्वार पर ही भीड़ लगाये हुये हैं। लाउडस्पीकर से गीत प्रसारित हो रहे हैं।

लोगों की चहल-पहल। कोई २००० व्यक्ति इस समय उपस्थित हैं। दिल्ली की पोशाकें खिल रही हैं। महिलाएँ भी हैं।

वह आये नेहरू। वह आ रहे हैं हमारे उपराष्ट्रपति! अब आ गये

अतिथि ! हर्षध्वनि । जनसाधारण का स्वागत गूँज उठता है । अतिथि आ गये अपने स्थान पर । यह रहे हमारे राष्ट्रपति । स्वागत कर रहे हैं अतिथियों का हमारे प्रधान मन्त्री । पंक्तिबद्ध खड़े होकर लोग स्वागत कर रहे हैं अतिथियों का ।

बैठिये ।

देखिये नेहरू बोल रहे हैं—"इस वक्त हम सब लोग जो यहाँ जमा हैं अपने मेहमानों का स्वागत करने के लिये । जब सरकारी मेहमान आते हैं, तो ऐसे भोज दिये जाते हैं । हम लोग यहाँ अलग अलग गुट बनाकर बैठे हैं, पर वास्तव में हम सब एक हैं । दुनिया मे भी गुट हैं, पर हम लोग न तो किसी गुट के साथ हैं और न किसी सैनिक समझौते के पाबन्द हैं । हम तो सिर्फ एक ही गुट के साथ रहना पसन्द करते हैं, जो शांति और सद्भावना का गुट है । हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक मुल्क इस गुट के साथ हों और किसी का इससे विरोध न हो । दूसरे राष्ट्रों से हमारे समझौते भी सद्भावना और सहयोग के लिए ही होंगे ।

रूस जाकर मैंने महसूस किया कि वहाँ सभी लोग शान्ति चाहते हैं और इसमें किसी तरह की देर उन्हें पसन्द नहीं । रूसवासियों की यह ख्वाहिश जान लेने के बाद मुझे विश्वास हो गया कि दोनों देशों के सहयोग और ताल्लुकात बढ़ने की काफी गुञ्जाइश है । रूसी मेहमानों के यहाँ आने से दोनों देशों के सम्बन्ध मजबूत होंगे । आज का यह स्वागत समारोह सिर्फ रूसी ही नहीं समझा जाना चाहिए बल्कि इससे दोनों के आपसी ताल्लुकात की गहराई जाहिर है । इतिहास इस बात का सबूत है कि दोनों देशों में शुरू से ही गहरी दोस्ती और शिरकत का सम्बन्ध है । यह सम्बन्ध रस्मी स्वागत वगैरह से कहीं अधिक माने रखता है । यह जरूर है कि अपने-अपने दायरे में रूस और भारत के रास्ते जुदा हैं लेकिन दोनों के सम्बन्ध पर इसका कोई असर नहीं पड़ सकता । दोनों के ताल्लुकात आज पहले से मजबूत हैं और लगातार वे मजबूत होते जायेंगे ।

रूस और भारत पड़ोसी देश हैं और यह बिलकुल ठीक है कि दोनों की जनता की भलाई के लिए उनमें पड़ोसियो की भावना मौजूद हो। हमारा विश्वास है कि विश्वशांति के लिए भी रूस भारत का सम्बन्ध लाभ-दायक साबित होगा। आज की घड़ी में शान्ति प्रयत्नों का सबसे अधिक महत्व भी है। अपनी आजादी के लिए हमने शान्तिमय तरीके ही अपनाये थे और आजादी के बाद तो शान्ति के प्रति हमारी निष्ठा बढ़ी है। हम लोग केवल साध्य की पवित्रता तक ही सन्तोष नहीं कर लेते बल्कि साध्य की पवित्रता के साथ साथ साधन की पवित्रता के सिद्धान्त में भी हमारी आस्था है। हमारा यह भी विश्वास है कि हिंसा और नफ़रत की भावना के जरिये मानव-समाज का भला नहीं किया जा सकता। भारत चाहता है कि दूसरे देशो में भी दोस्ती और सहयोग का सम्बन्ध कायम हो।

यह सही है कि सैनिक दृष्टि से भारत मजबूत नहीं है लेकिन जनता में हमारा अटूट विश्वास है और इसलिए इससे हम मजबूत हैं, धनी हैं।

रूस यात्रा के समय अपने स्वागत के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।"

तालियों की तुमुल गड़गड़ाहट के बीच रूस के प्रधान मंत्री मार्शल बुलगानिन बोल रहे हैं—"मान्य प्रधान मंत्री महोदय, उपस्थित प्रतिष्ठित सज्जनो। आपका यह मैत्रीपूर्ण स्वागत हम सदा स्मरण रखेंगे। मैं स्पष्टकर दूँ कि भारत रूस मैत्री पंचशील के सिद्धातों पर आधृत है। रूस इन सिद्धातों का दृढ़ता के साथ सदैव समर्थन करता रहेगा तथा सिर्फ भारत ही नहीं अपितु उन राष्ट्रों के साथ भी रूस इनके आधार पर अपना सम्बन्ध स्थिर करेगा जो शान्तिप्रिय हैं और इन सिद्धातों के प्रति जिनकी आस्था प्रकट हो चुकी है। पञ्चशील के सिद्धान्तों से सहयोग करने के लिए प्रस्तुत देशों से भी रूस सम्बन्ध जोड़ेगा। मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि हम लोग शीतयुद्ध के हमेशा विरोधी रहे हैं और हम नहीं चाहते कि उसका दौर बना रहे अथवा उसकी पुनरावृत्ति हो। पारमाणविक और उद्जन शस्त्रास्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए भविष्य में भी हमारा प्रयत्न चलता

रहेगा। इतना ही नहीं परम्परागत शस्त्रीकरण कम करने, यूरोप के लिए सामूहिक सुरक्षा प्रणाली स्थिर करने तथा विश्व की समस्त सरकारों में सम्पर्क बढ़ाने के लिए भी हम कोशिश करते रहेंगे।

अवश्य ही राजनीतिक एवं सामाजिक गठन के विचार से रूस भारत में भिन्नता है और फिर भी शान्ति शब्द की पवित्रता दोनो के लिए समान रूप से है। शान्ति की यह बलवती इच्छा हम लोगों को एक दूसरे के बहुत निकट ले आती है और उलझी हुई अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं के शान्तिपूर्ण समाधान के लिए अधिक सक्रियता के साथ काम करने की आवश्यकता सिद्ध करती है। जेनेवा में चार शक्तियों के हुए सम्मेलन ने तथाकथित शीतयुद्ध की समाप्ति की नयी आशाएँ पैदा कर दी हैं।

चीन, रूस और भारत, एशिया के तीन महत्वपूर्ण राष्ट्र हैं और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, मैत्री और सहयोग के दृढ़ सिद्धान्तों पर आधृत इन तीन देशों के पारस्परिक सम्बन्ध विश्वशान्ति के विचार से विशेष अर्थ रखते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। एशिया की समस्याओं के समाधान और विचार-विनिमय में भारत जिम्मेदारी के साथ भाग ले रहा है। केवल एशिया ही क्यों विश्व की समस्याओं के समाधान के लिए भी उसका योगदान मिल रहा है। प्रत्येक व्यक्ति इस तथ्य को अच्छी तरह समझता है कि भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होने का कारण यह नहीं है कि वह एक बड़ा देश है, बल्कि यह है कि भारत हमेशा दृढ़ता के साथ शान्ति का पक्ष लेकर ही आगे बढ़ता है।

इस वर्ष जून में भारतीय प्रधान मन्त्री ने हमारे देश की यात्रा की थी। इनको अपने देश में अतिथि पाकर हमारी सरकार और जनता ने अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव किया। उसी समय पञ्चशील के सिद्धान्तों में दोनों देशों ने संयुक्त रूप से आस्था प्रकट की और उभय देशों के सम्बन्ध दृढ़ हुए। इतिहास बताता है कि भारत और रूस में सदैव मैत्री

का सम्बन्ध रहा। हमेशा ही एक देश की जनता के हृदय में दूसरे देश की जनता के प्रति आदर भाव रहा है। अच्छे भविष्य के लिए सङ्घर्ष करने में रूस और भारत की जनता को सदा एक दूसरे से नैतिक समर्थन प्राप्त हुआ है। शान्ति के लिए आज चल रहे प्रयत्नों में तो दोनों देशों के बीच अधिक समानता प्रकट है।

जेनेवा में परराष्ट्रमन्त्रि-सम्मेलन हुआ। चार शक्तियों के प्रधानों की वार्ता के उपरान्त यह सम्मेलन आयोजित किया गया। समस्याओं को सुलझा देने के लिए हम लोगों ने यथाशक्ति प्रयत्न किये लेकिन दुःख है कि निर्भीकतापूर्वक स्पष्ट विचार विनिमय स्थल से सम्मेलन का अधिक महत्व नहीं हो सका। फिर भी मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि विफलता के बावजूद रूस की सरकार निराश नहीं हुई है तथा उसे विश्वास है कि समस्याओं के समाधान में अन्ततः चार शक्तियां सफल होकर रहेंगी।

जर्मनी का प्रश्न अभी तक पूर्व रूप में ही बना हुआ है। जरूरत इस बात की है कि अपेक्षित समय और धैर्य के साथ इस प्रश्न को सुलझा लिया जाय। तभी यह प्रश्न सुलझेगा भी। हम लोगों का ऐसा मत है कि जर्मनी का प्रश्न स्वयं वहाँ की जनता पर छोड़ दिया जाय और हम लोग उस मामले में उनकी सहायता मात्र करें।

यह भारत के सक्रिय सहयोग का ही परिणाम है कि एशिया की अनेक समस्याएँ हल कर ली गयी हैं। भविष्य में भी हमारी आशावादिता बनी हुई है और हम आशा करते हैं कि एशिया ही नहीं, पूरे विश्व में शान्तिस्थापनार्थ नेहरूजी अपनी सरकार के साथ सक्रिय रूप से प्रयत्न जारी रखेंगे।

नेहरूजी शान्ति के वीर सेनानी हैं। मैं भारत सरकार के नव भारत निर्माणकार्य की हार्दिक सफलता चाहता हूँ।"

मार्शल का भाषण समाप्त होता है। भोज की रस्मी कार्यवाहियाँ होती हैं। अब भोज प्रारम्भ हो गया है। राजकीय भोज!

भारत और रूस की मैत्री के प्रतीक स्वरूप एक सुन्दर केक दोनों प्रधानमन्त्री एक साथ काटते हैं।

सुगन्धि से वातारण महक रहा है। स्वादिष्ट भोजन करते हुए इन २००० व्यक्तियों में से कोई भी एक क्या इस समय यह कल्पना कर सकता है कि आज भारत के सैकड़ों नागरिकों को भोजन नहीं मिला होगा? क्या इनमें से एक भी यह सोच सकता है कि दूर कहीं किसी गाँव में एक परिवार को अभी तक भोजन प्राप्त नहीं हुआ है? कोई एक मजदूर भूखा है अथवा बाहर कहीं भिखमंगों का झुण्ड इनके शेष जूँठन को कुत्तों के साथ चाटने के लिये छुपा है?

नहीं।

भोज चलने दीजिए। राजकीय भोज।

इन्हें देख रहे हैं न। यह हैं श्री···जब मार्शल उठेंगे और अतिथियों से बातें करते हुये घूमेंगे तो आप भी साथ हो जाँयगे। एक कैमरामैन साथ लाये हैं। उसे आदेश है कि तत्काल फोटो ले ले।

उठिये। भोज समाप्त हो गया। मार्शल और उनके साथी बिखर गये हैं। प्रधान मन्त्री के साथ लोगों से मिल रहे हैं। परिचय प्राप्तकर रहे हैं।

"क्लिक् क्लिक···घिर्र घिर्र घिर्रर्रर्र···"

"आप लोग कब तक फोटो लेते रहेंगे?"—मार्शल कह रहे हैं।

"जब तक आप साथ हैं।"

"क्या यह पूरी न होगी?"

"न।"

"फिल्म की कमी तो नहीं पड़ेगी?"

"नहीं, बराबर लेते जाँयगे। पर्याप्त है हमारे पास।"—कैमरामैन के इस उत्तर से सब खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। श्री क्रुश्चेव का स्थूल और भारी शरीर हँसी से हिल उठता है।

समय भागता जा रहा है।

राष्ट्रपति चले गये हैं। उपराष्ट्रपति भी जा चुके हैं। नेहरू भी जा रहे हैं। पर अतिथि अभी भी घिरे हुये हैं। खूब बातें कर रहे हैं। सभी विषयों की बातें हो रही है।

"अंग्रेजी के माध्यम से हमारे देश की पुस्तकें आपके यहाँ अनूदित होती हैं। अच्छा अबकी बार हम लोग हिन्दी ही सीखकर आयेंगे।"—क्रुश्चेव कहते हैं। वाह! उन भारतीयों को यह कैसा करारा उत्तर है, जो धारावाहिक अंग्रेजी बोलते हैं।

लगभग ४५ मिनिट तक अतिथि उपस्थित लोगों के साथ रहते हैं।

"अच्छा अब विदा। विश्राम का समय हो रहा है!"

अतिथि अपने उन कक्षों में चले जाते हैं, जहाँ उनको ठहराया गया है।

मार्शल के हाथ में रूस के पत्र रख दिये जाते हैं। केवल आठ घण्टे में मास्को से सभी दैनिक पत्र एवं डाक मार्शल के पास काबुल के रास्ते आ जाती है। मार्शल का सम्बन्ध अपने देश से बराबर बना हुआ है।

आज सोमवार है। २१ नवम्बर १९५५। सवेरा हो गया है। अतिथि जाग उठे हैं और चाय-पान आदि के पश्चात् इस समय एकदम तैयार है। देखिये देहली विश्वविद्यालय के एक प्रमुख अधिकारी आए हुये हैं। आप मार्शल से यह कहना चाहते हैं कि देहली विश्वविद्यालय उन्हें सम्मानित उपाधि से विभूषित करना चाहता है।

अधिकारी महोदय मार्शल से मिल रहे हैं। दुभाषिये की मदद से अपनी बात सामने रखते हैं।

मार्शल की भौंहों पर बल पड़ जाते हैं—"खेद है! हम यह उपाधि न ले सकेंगे। हमारे देश में श्रम करके ही उपाधि ली जाती है! ऐसे नहीं। हम भी इसी परम्परा में हैं।"

अधिकारी महोदय लौट रहे हैं। उनका चेहरा उदास पड़ गया है! वाह! हो तो ऐसा ही! धिक्कार है, उन नेताओं को और उन विश्व-विद्यालयों को जो बिना श्रम के ही नेतागिरी के नाम पर डाक्टर की उपाधि लेते और देते हैं।

अब चल रहे हैं सम्मानित अतिथि। चमचमाती कारें। आगे पीछे पुलिस की व्यवस्था। बिना किसी व्यवधान के हमारे अतिथि इण्डियागेट के पास बच्चों के पार्क की ओर जा रहे हैं।

यही है इण्डियागेट!

यह रहा बच्चों का पार्क! यह सड़क जो इण्डियागेट के तले जाती है, घुमक्कड़ों को बड़ी प्रिय है। साथ ही साथ इसी सड़क पर प्रायः पंडित नेहरू को घुड़सवारी करते देखा जा सकता है।

हरी-हरी घास से आच्छादित बच्चों के इस पार्क में एकदम सांस्कृतिक वातावरण उपस्थित है।

केले के खम्भों से बना द्वार। आम्र के पत्तियों के घने घने बन्दनवार। फूल मालाएँ! कुंकुम के थाल, आरती, हाथ में लिये बालिकाएँ पंक्तिबद्ध खड़ी हैं। और वह मैदान में २००० बालक बालिकाएँ, सफेद सलवारें, पीली कुरतियाँ, सफेद पैजामा नीले कुरते। सैनिकों की तरह खड़ी हैं बालक बालिकाओं की कतारें। इनका प्रशिक्षण भोंसला राष्ट्रीय अनुशासन योजना के अन्तर्गत हुआ है।

वह आ गये अतिथि!

सावधान!

मीठी मीठी ध्वनि में स्वागत वाद्य बज रहे हैं। अतिथि श्रीनेहरू और डा० राधाकृष्णन् के साथ प्रवेशद्वार के निकट हैं।

यह बढ़ी एक बालिका !

स्वागत है। पुष्प वर्षा। कुंकुम का थाल उठा। माथे पर तिलक ! आरती उतारी जा रही है। फिर पुष्प वर्षा। भारतीय परम्परा के अनुसार एक विजयी सैनिक, शान्ति के सैनिक के रूप में स्वागत है इस देश में अतिथि। तुम चिरञ्जीवी हो !

अतिथि आगे बढ़ रहे हैं।

पुष्प वर्षा अनवरत हो रही है। पंक्तिबद्ध बालिकाएँ खड़ी हैं। ऐसा सांस्कृतिक वातावरण देखकर अतिथियों का हृदय भर आया है।

विशेष रूप से निर्मित दर्शक एवं स्वागत मञ्च पर अतिथि बैठ गये हैं।

सोवियत रूस के राष्ट्रीय गीत की धुन बज रही है।

गीत समाप्त ! बजा बिगुल। धुत्तुर धुत्तुर धुत्तुर धुत्तुर धुत्तु धुत्तुर ! होशयार। आगे बढ़ो ! देखिये, बालक बालिकाओं की पंक्तियाँ बढ़ रही हैं आगे। एक साथ कवायद देखिये। सैकड़ों हाथ एक साथ चल रहे हैं। सैकड़ों पैर एक साथ उठ रहे हैं। नीली, सफेद लहरें ! अहा ! कितना मनोरम दृश्य। हमारे यह बच्चे कवायद में किसी सेना का मुकाबला कर सकते हैं। अतिथि मुग्ध हो देख रहे हैं।

भारत माता की जय !

मार्चपास्ट हो रहा है। सलामी देकर हमारे भविष्य आगे बढ़ गये हैं।

झम्म झम्म झम्म झम्म ! झनक झनक ! झन ! झन ! झम्म !

लेजिमों का प्रदर्शन ! वाह ! कैसे कलापूर्ण ढङ्ग से एक साथ सैकड़ों लेजिमें उठ रही हैं। एक साथ ध्वनि, जैसे कोई एक ही वाद्य किसी के कुशल हाथों से अपने स्वर दे रहा हो। झम्म झम्म झम्म झनक !

अपना प्रदर्शन करता हुआ यह दल बढ़ गया। अब यह बालक आये। मालखम्भ का व्यायाम प्रदर्शन देखिए। कितने कुशल हैं बच्चे !

झननझनन ··थप्प थप्प ···टप्प टप्प ··झनन झनन !

लड़कियों का यह समूह। गरबा नृत्य हो रहा है। झूम झूमकर थपोड़ी पीट-पीट कर यह लड़कियाँ नाच रही हैं। वाह ! एक-सी पोशाकें। कितना मोहक दृश्य है।

अब देखिये भारतराष्ट्र वन्दना !

राष्ट्रीय गीत। अतिथियों को उपहार। धन्यवाद !

मञ्च से अतिथि उतर रहे हैं। हुमायूँ मकबरे के पास मैदान में बालचर एकत्रित हैं। देशके स्काउट, गर्ल्सगाइड। अपनी विशिष्ट भूषा में।

आइये अतिथि ! स्वागत है हमारी ओर से।

तीन प्रवेशद्वारों को पारकर आ रहे हैं अतिथि ! समय १० बजे दिन का है। सूर्य की किरणों से सारा वातावरण जगमगा रहा है। स्वागत ! दो नन्हें-नन्हें बच्चे सूत की मालाएँ लिये हुए हैं। बहुत नीचे झुकना पड़ा है अतिथियों को। सब मुस्करा रहे हैं। अब मञ्च पर हैं अतिथि। सामूहिक गान हो रहा है। बालचरों का सामूहिक गान !

अब पं० हृदयनाथ कुँजरू बालचरों की ओर अतिथियों का स्वागत कर रहे हैं। अपने संगठन का विवरण भी दे रहे हैं।

श्री क्रुश्चेव स्वागत का उत्तर दे रहे हैं।

"मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं अपनी ओर से, मार्शल बुलगानिन की ओर से, और अपने अन्य साथियों की ओर से आपको इस स्वागत-समारोह के लिये धन्यवाद दूँ। विशेषकर हम आपके प्रधानमन्त्री को धन्यवाद देते हैं, जिनके निमन्त्रण पर ही हमें भारत आने का सौभाग्य मिला। आप लोगों को यहाँ देख कर हमें अपने देश के बच्चे याद आते हैं। जिन्हें हम वहाँ पर 'पायनियर' कहते हैं। हमें यह देखकर बेहद खुशी हुई है कि आप लोगों को कैम्पों में भाग लेने का बहुत शौक है। हमारे यहाँ भी बच्चों के इस तरह के कैम्प गरमियों में लगते हैं, जिनमें वे बड़े चाव और उत्साह से शामिल होते हैं।

आज हमें यहाँ आपके बीच में आकर बहुत ही अच्छा लग रहा है। आप लोग यहाँ पर जो मेहनत कर रहे हैं, उससे भावना मजबूत बनती है। और वह भावना जिन्दगी में रूह फूँकने का काम करती है। उससे आप अच्छे काम करते हैं और जो लोग काम नहीं करते, वे इन्सान की खिदमत नहीं कर सकते। मैं क्या कहूँ, कहना बहुत कुछ चाहता हूँ लेकिन वक्त की बहुत कमी है। लेकिन उसके बावजूद मैं यह जरूर कहूँगा कि आपने यहाँ पर जो हमारा स्वागत किया है, हम उसके लिये आपको धन्यवाद देते हैं। मैं समझता हूँ कि यह बात अच्छी ही नहीं बल्कि जरूरी भी है।

आपके देश ने अपने प्रधानमन्त्री के नेतृत्व में जो आजादी पाई है, उसका रूस पर बहुत बड़ा और अच्छा असर हुआ है। इससे हमारी दोस्ती बहुत मजबूत हुई है और मुझे आशा है कि दिन प्रतिदिन उसमें तरक्की होती जायगी। आपकी पहली पञ्चवर्षीय योजना में हुई प्रगति को देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है और हमें विश्वास है कि आपको अपनी दूसरी पञ्चवर्षीय योजना में भी, जो शुरू होने वाली है, बड़ी कामयाबी मिलेगी। मगर काश्तकारी, मशीनों और उद्योगों के बिना तरक्की नहीं हो सकती। हमारा अपना अनुभव है कि मशीनों से ही किसी देश की उन्नति हो सकती है, इसके साथ ही मशीनों और ट्रैक्टरों आदि की मदद से काश्त करके इन्सान की भी सेवा होती है और उसका भारी लाभ होता है। इसलिये यदि आप सही अर्थों में आजादी चाहते हैं, तो यह निहायत जरूरी है कि आपके यहाँ उद्योगों का जोर हो। क्योंकि इसी के जरिये इन्सान की सही सेवा होना मुमकिन है। आप लोगों की भावना बड़ी जबरदस्त हो रही है और हम कामना करते हैं कि आप उसका सही उपयोग कर अपने देश को लाभ पहुँचायें।

हम जब यहाँ आये तो आपके द्वारा लगाये गये नारों में हमने अपने लोगों और अपनी सरकारों की दोस्ती की भावना देखी, एक ऐसी भावना,

जिसमें दोस्ती हमेशा का कायम रहने का माद्दा दिखाई देता है। हमारी दोस्ती काफी पुरानी है और मुझे विश्वास है कि आप उस दोस्ती को और भी गहरा बनाने की कोशिश करेंगे।

इस अवसर पर मैं आपको अच्छी से अच्छी बधाई देता हूँ।"

इस स्वागत के उपरान्त अतिथियों को गार्ड आफ आनर दिया जा रहा है। अब उन्हें दस्तकारी की चीजें दिखलायी जा रही हैं।

अब फिर वह दर्शक मञ्च पर आ रहे हैं।

यह क्या है ? खाट ! नेहरू खाट पर बैठ जाते हैं। बतलाते हैं घायलों को स्काउट इसी पर लिटाकर ले जाते हैं।

अच्छा !

श्रीक्रुश्चेव नेहरू जी के उठने पर उस पर बैठते हैं। चूँचरं ··मरं तड़ाक् ! बापरे ! क्रुश्चेव का भारी भरकम शरीर। टूट गई खाट !

हँसी का कहकहा लग गया है। टूटी खाट में धँसे क्रुश्चेव को नेहरूजी उठा रहे हैं। हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गये। यह तो खूब रही। स्वयं मार्शल जोर से अट्टहास कर उठते हैं। हमारे देश में आकर हमारे यह अतिथि कितनी जल्दी हम से घुलमिल गये हैं।

यह रहा मञ्च। बैठिये। अतिथि बैठ जाते हैं।

अब स्काउटों का प्रदर्शन हो रहा है।

पि पी पिप्प पी पीईं ई ई पिप्प ! पिप्प ! सीटी बजी होशयार ! वह आग लगी। दौड़ो, बचाओ ! पानी की बाल्टियाँ, सीढ़ियाँ, रस्से, स्ट्रेचर, भाग-दौड़, आग की धधकती लपटें, उनमें फँसे लोग।

भाग दौड़ ! शोरगुल। देखते देखते बालचरों ने आग पर काबू पास लिया है और आग में फँसे लोगों को निकाल लिया है। वाह !

अब व्यायाम प्रदर्शन हो रहा।

हुमायूँ अकबरे के बाहर भीड़ लगी है। यहाँ तक कि चहारदीवारी पर भी लोगों की भीड़ चढ़ी हुई है।

स्काउटों का व्यायाम समाप्त होता है। अब नृत्य!

झमानाना झम है छे···होय···होय···यह आया बालक बालिकाओं का दल! सबके हाथों में लाल रूमाल हिल रहे हैं। यह पठान नृत्य हो रहा है!

छिप्पा छिप्पा···हो···जानानानाजन झमझम् होय होय...अस्सादे गफलूँ वारियाँ···होय ...लाल रूमाल हिल रहे हैं। मनोहारी दृश्य है।

पठान नृत्य करते हुआ बालक-बालिकाओं का समूह आगे बढ़ जाता है।

स्काउटों का विशिष्ट छल्ला और २४ स्कार्फ अतिथियों को उपहार स्वरूप दे रहे हैं। तालिओं की गड़गड़ाहट के बीच यह आयोजन समाप्त होता है।

चलिये भारतीय कृषि अनुसन्धान शाला और राष्ट्रीय भौतिक प्रयोग शाला!

रास्ते पर भीड़ एकत्रित है। नेताओं का जयकार हो रहा है। हर्ष-ध्वनिओं के बीच रूसी नेता आगे बढ़ते जा रहे हैं। यह है भौतिक प्रयोग शाला। यहाँ सूर्यशक्ति के कार्य लेने की प्रविधियों का परीक्षण हो रहा है।

आइये। प्रयोगशाला के डायरेक्टर के. एम. कृष्णन् अतिथियों का स्वागत कर रहे हैं। अपने विभागों का प्रदर्शन दिखा रहे हैं। यह है सूर्य्य चूल्हा। श्री क्रुश्चेव स्वयं एक बड़े इञ्जीनियर हैं। मशीनों के निर्माण में दिलचस्पी लेते हैं और मशीनीकरण में उनका विश्वास है। बड़े ध्यान से प्रत्येक यन्त्र को देख रहे हैं।

इलेक्ट्रोन सूक्ष्मवीक्षण यन्त्र, हीलियम लिक्विफायर, रेडियो सक्रियता नापने का यन्त्र, सूर्यतापी चूल्हा, सूर्य की शक्ति से चलने वाला इञ्जिन।

श्रीकृष्णन कह रहे हैं—"सूर्य की शक्ति का उपयोग। हमारे लिये

आपकी अपेक्षा कहीं अधिक आवश्यक है। आपके पास काफी मात्रा में तेल मौजूद है, जब कि हमारी स्थिति ऐसी नहीं है।"

"निसन्देह रूस प्रभूत मात्रा में तेल का उत्पादन करता है, किन्तु रूस के लिये सूर्य की शक्ति उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी कि भारत के लिये। इस पर हमारे यहाँ भी काम हो रहा है!"

भौतिकशाला देखने के पश्चात् अतिथि कृषि अनुसन्धान शाला जा रहे हैं। देखिये दर्शक पुस्तिका पर हस्ताक्षर कर रहे हैं। अब प्रवेश कर रहे हैं। कृषि अनुसन्धानशाला के डायरेक्टर श्री डी० निवासन् उन्हें सब दिखला रहे हैं।

लगभग ४५ मिनिट पश्चात् हमारे अतिथि वापस लौट रहे हैं। राष्ट्रपति भवन और वहाँ से संसद के दोनों सदनों में जाँयगे। अभी तैयार होना है।

अरे! यह क्या!! अखबार वाले शोर मचा रहे हैं। बम्बई में गोलियाँ···सैकड़ों व्यक्ति घायल...बम्बई में दनादन गोलियाँ चल रही हैं। उपद्रवी भीड़ और पुलिस के बीच फ्लोरा-फाउन्टेन पर संघर्ष हो रहा है। रणक्षेत्र का सा दृश्य है। ट्रामें बसें जलायी जा रही हैं। अश्रु गैस, लाठियाँ, गोलियाँ, सारे बम्बई में हड़ताल है आज! गिरफ्तारियाँ हो रही हैं। नगर में सैनिकों का पहरा है!

धिक् प्रदर्शनकारियों पर, धिक् बम्बई सरकार पर!

ऐसे पुनीत अवसर पर महान बम्बई में यह काण्ड···अशोभन!

आइये, हम अब दोनों सदनों की सम्मिलित बैठक में चलें। आज का यह समय बड़ा ऐतिहासिक है। सम्भवतः इतिहास का यह पहला अवसर है, जब कि महान सोवियत संघ का प्रधानमन्त्री किसी गैर कम्यु-निस्ट देश की संसद में भाषण देने जा रहा है।

अरे! बड़ी भीड़ है। दर्शक गैलरी खचाखच भरी हुई है। अनेक मन्त्री स्थानाभाव के कारण पीछे पड़ गये हैं। अरे! हमारे इन मन्त्री

महोदय को देखिये, जगह नहीं मिली, तो पत्र प्रतिनिधियों के साथ बैठ गये हैं। आज संसद भवन का प्रत्येक कोना भरा हुआ है। हरे गलीचे बिछे हुये हैं।

यह आये हमारे अतिथि! राष्ट्रपति-कक्ष में प्रवेश करते ही तालियों से हाल गड़गड़ा उठता है।

अरे! देखिए तो। आज यह नेता अपने राष्ट्र की विशेष प्रकार की वेशभूषा धारण करके आये हैं। सोवियत समाज में यह वेशभूषा सर्वाधिक सम्मानित मानी जाती है।

आइए! स्वागत है। उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् स्वागत भाषण दे रहे हैं।

सदनों की सम्मिलित बैठक में अब प्रधान मन्त्री मार्शल बुलगानिन का भाषण होगा। दुभाषिए उनकी बगल से आ जाते हैं।

सुनिये मार्शल बुलगानिन बोल रहे हैं :—

"सबसे पहले यहाँ के मञ्चसे बोलने का आपने जो अवसर मुझे दिया है उसके लिए मैं आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। इसे मैं भारी सम्मान समझता हूँ।

दिल्ली के नागरिकों द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में मुझे अवसर मिला आपकी गौरवशाली राजधानी के नागरिकों से मिलने का, आपको और आपकी सरकार के प्रति, हम जहाँ भी गये वहाँ के स्वागत के लिए कृतज्ञता प्रकट करने का सुअवसर हमें मिला था। सोवियत जनता की ओर से महान भारतीय जनता को हमने प्रेमपूर्ण शुभ कामनाएँ पहुँचाईं। रामलीला मैदान में लाखों की संख्या में जनसमूह को देखकर हम अत्यन्त गद्-गद् हो गये। जिस एकता तथा निष्ठा से लोगों ने हमारा स्वागत किया उससे हमें विश्वास हो गया कि भारतीय जनता सोवियट जनता की सच्ची और निस्वार्थ मित्र है। इस मैत्री को व्यापक बनाने के लिए सोवियट जनता जो कुछ भी कर सकेगी, उसमें कुछ उठा न रखेगी।

हमारी जनता की मित्रता की कड़ी दूर अतीत में पाई जाती है। आज से ५ शताब्दी पूर्व, जब कि पहले यूरोपीय जहाज भी आपके तट को नहीं छू सके थे, एक रूसी अन्वेषक निकितिन भारत आया था और उसने एक पुस्तक लिखी थी, जो कि उस समय के लिए एक महत्वपूर्ण पुस्तक थी। यह आपके आश्चर्यजनक देशके बारे में पुस्तक थी, जिस देशमें उसने कई वर्ष विताये थे और जिसे उसने खूब प्रेम किया था। यह भारत की रूसियों द्वारा प्रथम खोज थी।

हमारे देशों के बीच सम्बन्ध धीरे-धीरे बढ़े। भारत के बारे में रूस में कुछ प्रकाशन हुए। रूस के लोगों ने आपके आश्चर्यजनक साहित्य से आपके देश के बारे में जानकारी प्राप्त की और ज्ञान प्राप्त किया। भारत के महान नाटककार महाकवि कालिदास के ग्रंथों के अनुवाद रूस में १८वीं शताब्दी में प्रकाशित हुए। इसके बाद भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुवाद व्यापक रूप से प्रकाशित किये गये। इसके बाद हमारे यहाँ अक्तूबर की महान् क्रान्ति की विजय के पश्चात् दोनों देशों की जनता के सम्बन्ध और भी दृढ़ हुए। १ नवम्बर १६१८ में रूस में प्रथम भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का आगमन हुआ, जिसका श्री लेनिन ने स्वागत किया। यह इस बात का प्रमाण है कि उस समय हमारे देश में होने वाली प्रगतियों के प्रति भारत में कितनी दिलचस्पी थी। आपकी जनता ने उपनिवेशवाद तथा मातृ भूमि की स्वतन्त्रता के लिए जो निस्वार्थ तथा निर्भीक संघर्ष किया उसके प्रति सोवियट जनता में दीर्घ सहानुभूति थी।

जैसा कि विदित है भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेता महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

स्वतन्त्र भारत में रूसी जनता की दिलचस्पी उसके इतिहास, संस्कृति, जनता के जीवन और उन परिवर्तनों के प्रति है जो आपके देश में हो रहे हैं। हमारे देश में कई भारतीय प्रदर्शनियों को देख सोवियट नागरिकों को प्रसन्नता प्राप्त हुई है। सोवियट जनता ने भारतीय साहित्य के प्रति

बड़ी रुचि प्रकट की है। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाएँ तो हमारे देश में कई बार प्रकाशित की जा चुकी हैं और अब एक सम्पूर्ण ग्रंथ के रूप में प्रकाशित होंगी।

सोवियट अकादमी आव साइन्सेज ने भारती महाकवि तुलसीदास की रचनाएँ प्रकाशित की हैं। प्रेमचन्द जैसे विख्यात लेखक तथा अन्य लेखकों की रचनाओं का अनुवाद और प्रकाशन हो चुका है।

श्री नेहरू की पुस्तक 'भारत की खोज' भी रूसी में प्रकाशित हो चुकी है। उनकी पुस्तक से सोवियट पाठकों को आपके देश की नयी और रोचक बातें मालूम हुई हैं। इन सबने जनता को कितना ज्ञान कराया है इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं है।

प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू की सोवियट संघ की यात्रा से भारत के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को विकसित करने में बड़ी सुविधा हो गयी। पण्डित नेहरू की यह यात्रा हमारी जनता की एक महत्वपूर्ण घटना थी। उनकी इस यात्रा से यह प्रकट हो गया कि हम दोनों देश एक दूसरे से सीख सकते हैं और लाभ उठा सकते हैं।

वर्तमान समय में भारत तथा सोवियट संघ में सहयोग अनेक प्रकार का है। सांस्कृतिक सम्बन्धों के अतिरिक्त यह सहयोग आर्थिक क्षेत्र में भी है और शान्ति की सुरक्षा करने तथा अन्तरराष्ट्रीय तनाव कम करने की दिशा में भी है।

हम जिस युग में रह रहे हैं, उसके महान् परिवर्तनों तथा वैज्ञानिक शोधों ने मानव जगत की सांस्कृतिक और आर्थिक सम्भावनाओं के अभूतपूर्व विकास के लिए मार्ग खोल दिया है। इसके साथ ही हम प्रतिगामी शक्तियों द्वारा इतिहास की प्रगति को पीछे मोड़ने, मानव-मानस की खोजों द्वारा जनता को हानि पहुँचाने के लिए उनके इस्तेमाल करने, विज्ञान एवं प्रविधि की सफलताओं द्वारा सांस्कृतिक एवं सांसारिक कष्टों को नष्ट करने और करोड़ों व्यक्तियों का नाश करने के प्रयत्नों की उपेक्षा नहीं

कर सकते। इस तथ्य के कारण देशों की सरकारों, संसदों तथा जनता पर संसार के भविष्य के सम्बन्ध में एक विशेष दायित्व आ जाता है। सोवियट जनता और सोवियट सरकार इस दायित्व को पूरी तरह समझती है और शान्ति तथा उन्नति की रक्षा के लिए जो भी बन रहा है कर रही है।

सोवियट जनता को यह बड़ा सन्तोष है कि इस बात में हमारे दोनों देशों की जनता और सरकारों के मत भिन्न नहीं हैं। शान्ति को सुदृढ़ करने के लिए भारत के योगदान की सोवियट संघ बड़ी कद्र करता है। भारत, चीनी गणतन्त्र तथा सोवियट संघ के परस्पर प्रयत्नों के फलस्वरुप कोरिया में विरामसन्धि पर हस्ताक्षर हुए और हिन्दचीन मे युद्ध की लपटें बुझीं। भारत चीनी गणतन्त्र को संयुक्त राष्ट्र संघ में उसका समुचित स्थान दिलाने के लिए पूर्ण प्रयत्न करता रहा है। भारत सरकार चीनी के राष्ट्रीय हितों और कानूनी अधिकारियों को ध्यान में रखते हुए ताईवान प्रश्न को शान्तिपूर्ण तरीकों से हल करना चाहती है। एशिया और अफ्रीका के देशों का प्रथम सम्मेलन बुलाने में भारत एक आयोजक था और उसने उसमें प्रमुख भूमिका अदा की। विश्व शांति के दृढ़ करने तथा दोनों महाद्वीपों के शांतिप्रिय निवासियों के अधिकारों और राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करने में इस सम्मेलन के महत्व को हम जितना कहें कम है। शान्तिपूर्ण निर्माण के लिए अणु तथा उद्जन बमों पर रोक लगाने तथा शस्त्रो को कम करने में भारत सरकार की नीति से सोवियट संघ सहमत है और उसका हार्दिक समर्थन करता है।

सामूहिक शांति की रक्षा के लिए आक्रामक सैनिक गठबन्धन की नीति के विरुद्ध तथा अन्तरराष्ट्रीय प्रश्नों को सुलझाने के लिए भारत सरकार के प्रयत्नों का सोवियट संघ की जनता सम्मान करती है। प्रसिद्ध पञ्चशील सिद्धान्तों पर आधृत सोवियट-भारत सम्बन्ध विभिन्न सामाजिक राजनैतिक प्रणालियों वाले राज्यों में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व तथा मित्रता पूर्ण सहयोग की सम्भावनाओं के सिद्धान्त की यथार्थता सिद्ध करते हैं।

इस महत्वपूर्ण सिद्धाँत के अधिकाधिक समर्थक प्राप्त होते जा रहे हैं और मैं यह आशा प्रगट करना पसन्द करूँगा कि इसे उन लोगों का बहुमत स्वीकार कर लेगा, जो आज वातचीत द्वारा अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं के शांतिपूर्ण हल के विपरीत हैं और बल की स्थिति से वैदेशिक नीति पर चल रहे हैं।

सोवियट संघ की वैदेशिक नीति सभी राष्ट्रों में शान्ति तथा मित्रता की नीति है—शान्ति के लिए युद्ध के विपरीत तथा दूसरे राज्यों में विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध क्रियाशील तथा निरन्तर संघर्ष की नीति है। अपने महान नेता लेनिन के उपदेशों पर चलते हुए अपनी नीति को हम सभी राष्ट्रों के प्रति सम्मान पर आधारित कर रहे हैं। वह नीति इस विषय पर भी आधारित है कि प्रत्येक राष्ट्र को अपनी इच्छा और हितों के अनुसार स्वतन्त्र राष्ट्रीय विकास के अधिकार हैं।

सोवियट संघ यह मानता है कि कोई भी आक्रमण राष्ट्र की आत्मा और सम्मान को ठेस पहुँचाता है, बड़े भारी भौतिक मूल्यों को नष्ट करता है और मानव जीवन को नष्ट करता है, जो हम सबको प्रिय है। यही कारण है कि हम विवादग्रस्त अन्तरराष्ट्रीय प्रश्नों को हल करने के लिए युद्ध के माध्यम को अस्वीकार करते हैं। यही कारण है कि बिना हल हुए मसलों को हम शान्ति से हल करने के पक्ष में हैं। इस दिशा में शान्तिपूर्ण देशों के प्रयत्नों ने जिनमें भारत तथा सोवियत संघ के प्रयत्न भी शामिल हैं, ठोस परिणाम उत्पन्न किये हैं और विशेषतः चार शक्तियों के प्रधानों के जेनेवा सम्मेलन के परिणामों को प्रभावित किया है।

इस सम्मेलन ने सहयोग की भावना से काम किया और अन्तरराष्ट्रीय तनाव को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस सम्मेलन ने यह सम्भव बना दिया कि चार शक्तियों के विदेशमन्त्री ऐसी समस्याओं

जैसे निःशस्त्रीकरण, यूरोपीय सुरक्षा, और जर्मनी तथा पूर्व पश्चिम में संपर्क के विकास के प्रश्नों पर चर्चा कर सके। इस सम्मेलन में, जिसने हाल में अपना काम समाप्त किया है, सोवियट संघ ने जेनेवा भावना के अनुसार काम करते हुए सभी प्रश्नों पर एकमत निश्चयों पर आने का प्रयत्न किया।

सभी जानते हैं कि निःशस्त्रीकरण की समस्या मानवता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है, क्योंकि पुराने हथियारों के उत्पादन में वृद्धि संसार के लोगों में भय उत्पन्न करती है। सोवियट संघ सदा से निःशस्त्रीकरण और अणु तथा उद्जन हथियारों पर पाबन्दी लगाने का समर्थक है। सोवियट सरकार इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कई वर्षों से संघर्ष करती आयी है। निःशस्त्रीकरण समस्या का सबसे महत्वपूर्ण पहलू, जैसा हम देखते हैं आणुविक अस्त्रों पर पाबन्दी लगाना है और हथियारों की दौड़ को समाप्त करना है।

सोवियट संघ ने सदाशयता दिखाते हुए और वास्तविक निःशस्त्रीकरण की प्राप्ति तथा अणु और उद्जन अस्त्रों पर पाबन्दी के लिए उन प्रस्तावों को मान लिया, जो पश्चिमी शक्तियों ने इस वर्ष के प्रारम्भ में रखे थे। अमेरिका, सोवियत संघ, चीनी गणतन्त्र, ग्रेट ब्रिटेन व फ्रांस की सैन्य शक्ति के स्तर पर तथा उन तिथियों के बारे में भी जब आणविक अस्त्रों की पाबन्दी लागू की जायगी। विदेशी शक्तियों ने घोषित किया कि वह आणुविक अस्त्रों पर पाबन्दी के लिए रूढ़िवादी अस्त्रों की ७५% कमी चाहते हैं। हमने इस सुझाव को भी स्वीकार कर लिया।

इसके अतिरिक्त, इस नियम का पालन करते हुए कि 'शब्दों से अधिक कार्य का प्रभाव पड़ता है' सोवियट सरकार ने निर्णय किया कि अपनी सेना में ६ लाख ४० हजार लोगों की कमी कर दे और यह निर्णय अधिकांशतः कार्यान्वित हो गया है। लोगों में पारस्परिक विश्वास उत्पन्न करने के लिए यह बड़ा ठोस योगदान है।

हमारे प्रस्तावों में यह व्यवस्था है कि एक ऐसी प्रभावपूर्ण नियन्त्रण-प्रणाली हो जो शस्त्रों की कमी कराये तथा आणविक शस्त्रों पर पाबन्दी लगाये, जिसमें विभिन्न राज्यों पर नियन्त्रण चौकी बनाना भी सम्मिलित है ताकि एक राज्य दूसरे राज्यपर एकाएक आक्रमण न कर सकें। हमें यह खूब स्पष्ट है कि नियन्त्रण का प्रश्न मूल प्रश्न 'निःशस्त्रीकरण' को सामने रखकर ही तय हो सकता है। निःशस्त्रीकरण का प्रश्न हल किये बिना निःशस्त्रीकरण के नियन्त्रण के प्रश्न को तय करने का प्रयत्न सामान्य जनता की बुद्धि और आकाँक्षाओं के विपरीत है।

हमें बड़ा खेद है कि निःशस्त्रीकरण के प्रश्न पर तथा अणु और उद्जन अस्त्रों की पाबन्दी के प्रश्न पर गतिरोध समाप्त करने के हमारे प्रयत्नों का कोई ठोस परिणाम न निकल सका। वास्तव में संयुक्त राज्य अमेरिका, इंगलैण्ड और फ्रांस उन सुझावों से मुकर गये हैं, जो उन्होंने इस वर्ष के प्रारम्भ में रखे थे। यह बात कहना आवश्यक है कि पश्चिमी राष्ट्र अपने सुझावों से पीछे हट रहे हैं और जो नये प्रस्ताव दे रहे हैं उनसे निःशस्त्रीकरण की समस्या कम से कम दस वर्ष पूर्व की स्थिति में पहुँच जाती है। इन कठिनाइयों के बाद भी सोवियट सरकार आगे प्रयत्न करेगी कि निःशस्त्रीकरण की समस्या हल करने तथा आणुविक-उद्जन अस्त्रों की पाबन्दी के लिए अत्यधिक प्रयत्न करेगी।

संसद के सदस्यो! अब मैं आपके समक्ष यूरोप की सुरक्षा पर कुछ कहना चाहता हूँ। यूरोप भारत से बहुत दूर है, पर यह संसार का वह क्षेत्र है जो कई शताब्दियों से सारे संसार को प्रभावित करता रहा है। यह याद रखना पर्याप्त है कि प्रथम तथा द्वितीय महायुद्ध यूरोप से ही प्रारम्भ हुए।

संसार की जनता में जो चिंता है उसका कारण यह है, कि यूरोप में सैनिक गुटबन्दियाँ हैं। विदेशी सेनाओं के अनेक यूरोपीय देशों की भूमि पर सैनिक अड्डे हैं। सैनिक गठबन्धन की नीति, जैसा श्री नेहरू ने अक्सर

कहा है, शान्ति की ओर नहीं ले जा रही है; अन्तरराष्ट्रीय तनाव कम नहीं करती, बल्कि राज्यों के सम्बन्धों में कटुता ला रही है और अन्त में युद्ध की ओर ले जाती है जैसा कि सर्वविदित है, हमारा भी यही मत है।

सोवियट सरकार सैनिक गुटबन्दी बनाने के विरुद्ध है और जो गुट बन गये हैं, उन्हें तोड़ने के पक्ष में हैं। यूरोप में हम सामूहिक सुरक्षा की एक प्रणाली बनाना चाहते हैं, जिसमें सब यूरोपीय शक्तियां और संयुक्तराज्य अमेरिका हो। इस प्रस्ताव का, जो पिछले वर्ष रखा गया था, इस आधार पर पश्चिमी शक्तियों ने विरोध किया कि इससे उत्तरी अतलान्तक गुट नष्ट कर दिया जायगा, जो रक्षात्मक उद्देश्यों के लिए बनाया गया है। जब हमने नाटो में जाने की इच्छा प्रकट की तो पश्चिमी राष्ट्रों ने हमें अस्वीकार कर दिया और इस प्रकार अपने कथन की असत्यता प्रकट कर दी और इस संघटन के आक्रामक रूप का नग्न स्वरूप दिखला दिया।

इन घटनाओं तथा स्थितियों को ध्यान में रखते हुए, पेरिस समझौते, जिनसे जर्मन जनतन्त्र 'नाटो' में आ गया है, सोवियट तथा अन्य पूर्वी यूरोपीय राज्यों को बाध्य होना पड़ा कि अपनी सुरक्षा के लिए अतिरिक्त कदम उठायें और इस वर्ष वसन्त में वारसा-सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। वारसा-सन्धि पश्चिमी राष्ट्रों की स्थिति के कारण हुई और हम उसे, यूरोपीय सुरक्षा प्रणाली बनते ही, और पश्चिमी शक्तियों के 'नाटो' तथा पेरिस समझौते भङ्ग होते ही समाप्त करने को तैयार हैं।

सैनिक गठबन्धन करने और सैनिक अड्डे बनाने की नीति से अन्तरराष्ट्रीय विश्वास उत्पन्न नहीं होता और लोगों के शान्तिपूर्ण विकास में बाधा पड़ती है।

इसे ध्यान में रख कर सोवियट संघ ने चीनी भूमि के पोर्ट आर्थर में तथा फिनलैण्ड में पोरकालाउड में अपने अड्डे छोड़ दिये और अब सोवियट संघ का किसी विदेशी क्षेत्र में कोई सैनिक अड्डा नहीं है। यदि अन्य शक्तियां, जिनके विदेशों में अड्डे हैं सोवियट संघ का उदाहरण मानें

ो यह लोगों में तनाव को कम करने में महत्वपूर्ण योग हो और जेनेवा ावना की ठोस कार्यों द्वारा पुष्टि हो ।

यह खेद की बात है कि कुछ देश इस बारे में भी जेनेवा भावना को ारूप नहीं देते। यह इस बात से सिद्ध होता है कि बदनाम दक्षिण पूर्वी .शिया सन्धि संगठन को व्यापक और दृढ़ बनाने के प्रयत्न मुख्यतः उन ाक्तियों द्वारा हो रहे हैं, जो गैर एशियावासी हैं। यह इस बात से भी माणित होती है कि भारत तथा सोवियट संघ की सीमा के निकट र्व तथा मध्यपूर्व में एक सैनिक गुटबन्दी की जा रही है। इन स्थितियों ा सोवियट सरकार अपना यह कर्तव्य समझती है कि शान्ति तथा अन्तर-ाष्ट्रीय सहयोग के शत्रुओं के दावपेचों के प्रति जागरूक रहे। निस्सन्देह ावसे विवादग्रस्त प्रश्न जर्मनी की एकता का है। शान्ति का तकाजा है के संयुक्त जर्मनी शान्तिपूर्ण जनतान्त्रिक विकास के मार्ग पर चले। इसी आधार पर सोवियट संघ अपनी नीति निश्चित करता है। हमारी समझ में जर्मन समस्या का समाधान मुख्यतः जर्मनों का अपना प्रश्न है और बड़ी शक्तियों का काम है शान्तिपूर्ण तथा जनतान्त्रिक विकास के मार्ग में जर्मनी की एकता में सहायता देना। सोवियट संघ ने सम्पूर्ण जर्मन कौन्सिल बनाने का प्रस्ताव किया, जिससे यह सुगम होती। पिछले ६ महीनों से सोवियट संघ ने यूरोप में विश्वास का वातावरण बनाने के लिए बहुत से कदम उठाये हैं। एशिया की स्थिति भी ऐसी है कि उसका सुधार करने में प्रयत्न की आवश्यकता है। सोवियट संघ भारत के सहयोग से जेनेवा सम्मेलन के फैसले कार्यान्वित कराने का प्रयत्न करेगा।

संसद सदस्यों, हमारे दोनों देशों की विदेश नीतियों में बड़ी समानता है। हम सभी एक ही उद्देश्य के लिए प्रयत्नशील हैं—अन्तरराष्ट्रीय तनाव कम करना, युद्ध रोकना, मानव-जाति को उसके आतंक से बचाना तथा संसार के लोगों को उनके परिश्रम का पुरस्कार मिलने देना। इससे ज्यादा पवित्र क्या हो सकता है।

आप अपने ही मार्ग पर चल रहे हैं। आप अपने देश को एक अग्रगामी राज्य के रूप में परिवर्तित करने को प्रयत्नशील हैं सोवियट जनता आपके प्रयत्नों तथा उद्देश्यो से पूर्ण रूप से सहमत है तथा सहानुभूति रखती है।

हम आपके साथ अपनी आर्थिक और वैज्ञानिक सुविधाओं का आदान-प्रदान करने को उद्यत हैं। यह हमारी जनता की इच्छाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप है। धन्यवाद !"

अब बोल रहे हैं श्री क्रुश्चेव—

"माननीय अध्यक्ष और माननीय सभासदों भारतीय गण राज की संसद में भाषण करने का गौरव प्रदान करने के लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

हम आपके प्रधान मंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू के कृपा पूर्ण आमन्त्रण पर मैत्रीपूर्ण भारतीय जनता को सोवियट जनता की गहरी आदर-भावना और सच्ची सहानुभूति से अवगत कराने और भारतीय जनता के जीवन और कार्यों से परचित होने के लिए मैत्री यात्रा पर आपके देश में आये हैं।

भारतीय जनता ने हमारा जैसा हार्दिक और मैत्रीपूर्ण स्वागत किया उसकी हमने कल्पना भी नहीं की थी। हम भारतीय जनता की इस सच्ची प्रसन्नता और दोस्ती की भावना को सोवियट जनता के अन्य छोटे-बड़े देशों के प्रति किये गये निःस्वार्थ कार्यों का पुरस्कार समझते हैं। भारतीय जनता ने हमारे प्रति जो आत्यन्तिक प्रेम भाव प्रदर्शित किया है, हम समझते हैं वह सोवियट जनता द्वारा साम्राज्यवादी दासता के खिलाफ संघर्ष करने वाली जनता के संघर्षों का सक्रिय समर्थन और विश्व में स्थायी और सुदीर्घकालीन शान्ति के हमारे प्रयत्नों के लिए है।

ऐतिहासिक महत्व के विभिन्न स्थानों के भ्रमण और सत्कार परायण भारतीय जनता से मिलने के अवसर अवसरों हमें 'हिन्दी रूसी भाई भाई' शब्द सुनने और पढ़ने को मिले।

हमारी सभी आकाँक्षाए, हमारे सभी क्रियालाप इन शब्दों में निहित है। भावना और कार्य में भारत और रूस के लोग सहोदर भाई की तरह हैं। यह आज की स्थिति है और यही युगों तक रहेगी।

हमें आपका और भारत की महान, स्वातन्त्र्यप्रिय और प्रतिभाशाली जनता का अभिनन्दन करते हुए और सोवियट जनता की शुभकामनाए प्रेषित करते हुए हर्ष हो रहा है।

इस संसद के मंच से मैं कहना चाहता हूँ कि हमारे देशों की जनता की मैत्री का विकास शताब्दियों पहले से हो रहा था और यह मैत्री कभी आपसी तनावों और गलतफहमियों के कारण धूमिल नहीं हुई।

आज जब कि भारत ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है हमारे दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध दृढ़तर होता जा रहा है और इसका मेल हमारे दोनों राष्ट्रों के मुख्य हितों और भारत चीन द्वारा उद्घोषित शांति और सहअस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों से भी बैठता है। इस सिद्धान्तों को विश्व की बहुसंख्यक जनतावाले भारत, चीन, सोवियट रूस आदि राष्ट्रों ने मान्यता दे दी है।

कई सदियों तक भारत गुलाम था। आपके अद्भुत देश को जिसने मानव सांस्कृतिक इतिहास को बहुत कुछ दिया है, उपनिवेशवादियों ने अधिकारच्युत बना रखा।

सोवियत जनता भारतीय जनता के अपनी मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता के लिए किए गये संघर्षों को सदा सहानुभूति की दृष्टि से देखती रही है है क्योंकि भूतकाल में सोवियट जनता को भी विदेशी प्रपीड़कों के हाथों बहुत यातना और अत्याचार सहन करना पड़ा था।

हमारे दूरदर्शी नेता और शिक्षक लेनिन ने १६२३ में ही लिखा था कि रूस, भारत, चीन और विश्व की बहुसंख्यक जातिवाले अन्य राष्ट्र बहुत तेजी के साथ मुक्ति संग्राम की ओर अग्रसर हो रहे हैं और उन्होंने इस

संघर्ष में विजय की पहले से ही भविष्यवाणी कर दी थी। इतिहास क्रम ने उस भविष्यवाणी को पूर्णतया सही सिद्ध किया।

हम उस युग में रहे हैं, जब अनेक देशों की जनता के जीवन में ऐतिहासिक परिवर्तन हुआ है, जब राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्रामों के प्रबल आघातों से उपनिवेशवादी व्यवस्था भूलुण्ठित हो रही है।

चीन की महान् जनता ने बहुत बड़ी-बड़ी जीतें हासिल की हैं और वह सफलतापूर्वक नये और स्वतन्त्र जीवन का निर्माण कर रही है। भारत की महान जनता द्वारा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति का सभी देशों की प्रगतिशील जनता ने स्वागत किया था। हिन्देशिया, बर्मा और कई दूसरे देशों की जनता ने भी विदेशी आधिपत्य का जूआ उतार फैंका है।

इन देशों की आबादी मनुष्य जाति की संख्या के आधे से भी अधिक है। इन देशों की जनता ने अपने लिए जिस रास्ते को चुन रखा है उससे विमुख करने की साम्राज्यवादियों की सभी चालें निश्चित रूप से विफल होंगी।

भारत द्वारा राज्य प्रभुसत्ता और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति की घटना का जबर्दस्त ऐतिहासिक महत्व है। भारत की जनता के लिए स्वतन्त्र और निर्बाध विकास का मार्ग खुल गया है, इसे सोवियत जनता अत्यन्त सन्तोष और हर्ष की भावना से देखती है। भारत की जनता अपने स्वतन्त्र राज्य की उन्नति कर देश को समृद्ध करेगी और सांस्कृतिक तथा आर्थिक प्रगति को सफल बनायेगी। इस महान कार्य की पूर्ति में भारतीय जनता सक्षम है।

भारतीय जनता की स्थायी और सुदीर्घकालीन शान्ति की आकांक्षा को सोवियत जनता भली भाँति समझती है, क्योंकि निर्माण कार्य शान्ति-कालीन स्थिति में ही पूरे किये जा सकते हैं।

सचमुच पूर्ण स्वतन्त्र होने और जनता की खुशहाली के लिए हर देश का अपना ऐसा विकसित अर्थतन्त्र होना चाहिये जो विदेशी पूँजी पर

निर्भर न हो, यह सामाजिक विकास की धारा ने स्वतः स्पष्ट कर दिया है। इतिहास के अनुभव से यह प्रकट हो रहा है कि अविकसित देशों को दबाने के लिए उपनिवेशवादी अनेक तरह के हथकण्डे अपना रहे हैं। वे हर तरह के सम्भव साधनों से इन देशों के राष्ट्रीय उद्योगों के विकास के मार्ग में रोड़े अटका रहे हैं। उन्हें भय है कि राष्ट्रीय उद्योगों के विकास में, नये बुद्धिजीवी वर्ग के उद्भाव से, जनता के जीवन-स्तर के उन्नयन से, पहले के गुलाम देश शक्तिशाली होंगे और वे निर्बाध विकास के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

हम भारत के उन नेताओं की क्रान्तिदर्शी दृष्टि का अभिनन्दन करते हैं, जो इस स्थिति को प्रत्यक्ष देख रहे हैं और जो समझा रहे हैं कि भारत की स्वतन्त्रता के लिए खतरे की घातक आशंका कहाँ से है और जो ऐसे सङ्कट के खिलाफ संघर्षरत हैं।

हमारी यह हार्दिक कामना है कि आपका अपना शक्तिशाली राष्ट्रीय उद्योग होगा, विज्ञान, संस्कृति और शिक्षा का आपके देश में विकास होगा, आपके देश की जनता को सदा सफलता और सुख प्राप्त हो। हम यहाँ प्रकट करते हैं कि हम महान् लेनिन के उन अमर उपदेशों से अनुप्रेरित हैं, जिसमें उन्होंने बताया था कि हर देश की जनता को अपने इच्छानुकूल समाज-व्यवस्था में बिना बाहरी राज्यों के हस्तक्षेप के रहने का अधिकार है।

हम पर अक्सर दूसरे देशों में कम्युनिस्ट-विचारों के निर्यात का आरोप किया जाता है। हमारे बारे में और भी बहुत सी वाहियात बातें कही जाती हैं। जब कहीं भी उत्पीड़ित जनता द्वारा विदेशी प्रभुत्व को समाप्त करने का सक्रिय प्रयत्न होता है, उसे मास्को द्वारा प्रेरित कहा जाता है।

अपने चुने हुए समाजवादी मार्ग पर आगे बढ़कर सोवियट जनता ने विकास की दिशा में महान् सफलताएँ प्राप्त की हैं, लेकिन हमने भी किसी

को बाधित नहीं किया और न हम किसी पर राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी अपने विचार लादने को तैयार हैं।

कोई आश्चर्य कर सकता है कि सोवियट रूस के सम्बन्ध में इन झूठों को कौन गढ़ रहा है ? इन झूठों को गढ़ने वाले हैं दुनिया के प्रतिक्रियावादी मण्डल जो बदनाम करने वाले इन झूठों का उपयोग कर जनता को भयभीत करना चाहते हैं, युद्ध के आतंक की स्थिति पैदा करना चाहते हैं।

वे चाहते हैं कि हमारे देश के बारे में लोगों की जानकारी कम बनी रहे। कारण, रूसी समाजवादी गणतत्र संघ विषयक सत्य की जानकारी प्रतिक्रियावादी शक्तियों के लिए, उपनिवेशवादियों के लिए और वैसे लोगों के लिए, जो एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति द्वारा शोषण जारी रखने के लिए एक व्यक्ति द्वारा दूसरे को दबा रखना चाहते हैं, घातक है।

वह सत्य यह है कि हमारे देश के श्रमिकों और किसानों के सोवियट राज्य की स्थापना द्वारा रूसी, यूक्रेनी, बायलो रूसी, उजबेक, ताजिक, अजरबैजानी और अन्य राष्ट्रों एवं राष्ट्रों के लोगों को अपने आर्थिक और राष्ट्रीय साँस्कृतिक विकास की वास्तविक स्वतन्त्रता मिल गयी है और वे अपनी रचनात्मक शक्ति को स्फूर्ति प्रदान करने योग्य हो गये हैं।

रूसी संघ एक ही विचार धारा का बहुप्रदेशीय राज्य है जिसमें १६ समान पदवाले गणतन्त्र संघ सम्मिलित हैं, जिनमें प्रत्येक की अपनी विकसित वित्तीय स्थिति और अपनी मौलिक संस्कृति वर्तमान है। रूसी संघ में प्रत्येक नागरिक को चाहे वह किसी देश या जाति का हो, पूरी समानता दृढ़ रूप में प्राप्त है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में अधिकारों पर बन्धन या इसका विपर्यय, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में किसी विशेष देश या जातिवाले के लिए लाभों की गुञ्जाइश कानूनन दण्डनीय है। हमारे देश के सभी लोग एक प्रसन्न परिवार की भाँति मिलकर रहते हैं। हमारे सोवियट राज्य के बल का सूत्र हमारे यहाँ के लोगों की मैत्री ही है।

जारशाही का तख्ता उलटकर सोवियट जनता ने क्या प्राप्त किया है, इसकी स्पष्ट जानकारी के लिए निम्नलिखित आङ्कड़ों का उल्लेख किया जा सकता है। सन् १९५५ में रूस का औद्योगिक उत्पादन सन् १९१३ के मुकाबले २७ गुना बढ़ा, उत्पादन के साधनों में ६० गुनी वृद्धि हुई, जनोपयोगी सामान का उत्पादन ११ गुना बढ़ा, बिजली उत्पादन ८६ गुना और यन्त्रों के निर्माण-उद्योग में १६० गुनी वृद्धि हुई।

रूस सरकार ने उद्योगों के विकास के साथ ही कृषि विकास पर और भी अधिक ध्यान दिया। सामुदायिक कृषि में संलग्न किसान मशीनों के सहारे कृषि उत्पादन बढ़ाने में बहुत सफल हुए।

आज सोवियट संघ ऊँचे दर्जे का औद्योगिक विकास वाला राष्ट्र है और आर्थिक विकास में उसी स्तर पर पहुँच गया है, जो स्तर प्राविधिक प्रगतिवाले पूँजीवादी देशों का है।

अब सम्पूर्ण विश्व यह स्वीकार करता है कि हमारे देश ने सांस्कृतिक विकास में असाधारण प्रगति की है। अक्तूबर क्रान्ति से पूर्व जारशाही रूस की ७६ प्रतिशत जनता अशिक्षित थी, पर द्वितीय महायुद्ध से भी पहले ही हमारे देश में निरक्षरता समाप्त हो चुकी थी। इस वर्ष रूस में ३॥ करोड़ छात्र प्राथमिक, माध्यमिक, प्राविधिक और अन्य स्कूलों में पढ़ रहे हैं। कालेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाने वालों की संख्या १७ लाख से अधिक है।

सोवियट राज्य के आरम्भिक वर्षों में ही बड़ी संख्या में स्कूलों और श्रमिकों की शिक्षा का आयोजन सम्पूर्ण राष्ट्र में किया गया था। अर्धशिक्षित मजदूर और किसान भी उनमें पढ़ते थे, जिससे आगे चलकर वे ही लोग माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा ग्रहण कर सकें। अब हमारे पण्डित एवं विद्वानों की चामत्कारिक श्रेणी तैयार हो गयी है। इस समय सोवियट संघ के भीतर राष्ट्रीय वित्त के विभिन्न क्षेत्रों में उच्चतर एवं माध्यमिक प्राविधिक शिक्षा प्राप्त ५५ लाख से अधिक विशेषज्ञ कार्य कर रहे हैं। इस समय

रूस में २ लाख १७ हजार आम शिक्षा स्कूल, ३ हजार ७ सौ ६६ प्राविधिक एवं पेशा शिक्षा स्कूल, ७ सौ ६८ कालेज तथा विश्वविद्यालय कार्य कर रहे हैं। अब सोवियट संघ में ऐसी भूमि का सम्भव हो गयी है, जिसमें आगे के वर्षों में १० वर्षों का माध्यमिक शिक्षा के सर्वव्यापी बनाने की योजना चरितार्थ की जा सके। यह सत्य है कि स्वर्ग अभी ही उतर नहीं आया है। अभी बहुत कुछ खामियाँ शेष हैं। लेकिन, उन खामियों पर हमारी दृष्टि है और उनसे भी मुक्त होने का पूरा प्रयत्न किया जायगा।

विदेशी राजपुरुषों से वार्त्ता में और विदेशी अखबारों को पढ़ने में सोवियट संघ के कम्युनिस्ट दल के बारे में बहुत सी भ्रांत धारणाएँ देखने को मिलती हैं। सोवियट संघ के कम्युनिस्ट दल के महामन्त्री की हैसियत से मैं इस बारे में भी कुछ कहना चाहूँगा। यह सही है कि सोवियट संघ के कम्युनिस्ट दल के बारे में नाना प्रकार की किम्वदन्तियाँ प्रचलित हैं। इसमें आश्चर्य की भी कोई बात नहीं, कारण, हमारा दल पुराने पूँजीवादी समाज की जगह उससे मौलिक रूप में भिन्न नयी। कम्युनिस्ट समाज बनाने के लिए, विशाल श्रमिक जनसमुदाय को जुटाने और संघटित करने में अभी लगा है।

मैं आशा करता हूँ कि आप मेरे इस कथन में प्रचारवादिता के प्रयत्न की आशंका न करने लगेंगे। हम विचारधाराओं के प्रश्न पर न केवल प्रत्येक राष्ट्र वरन् प्रत्येक व्यक्ति की आस्था और आदर्श की दृष्टि से ही मनन करते हैं, हमारे देश में ऐसे लोग हैं जो कम्युनिस्ट दल के सदस्य नहीं हैं। कम्युनिस्ट दल के सदस्यों की संख्या कुल ८० लाख है और कम्युनिस्ट तरुण संघ में १ करोड़ ८५ लाख युवक सम्मिलित हैं जब कि सोवियट संघ की आबादी २० करोड़ है। इस प्रकार, हमारे देश में बड़ी संख्या ऐसे लोगों की ही है, जो कम्युनिस्ट नहीं हैं और उसके लिए प्रयत्नशील भी नहीं हैं। परन्तु यह अवश्य है कि संपूर्ण आबादी कम्युनिस्ट दल के पीछे सम्बद्ध है और उसे ही अपना नेता एवं संघटनकर्ता मानती है। हमारे देश में जनता और दल अविभाज्य हैं।

विचारधारा और आस्था का प्रश्न व्यक्तिगत है। कम्युनिस्ट और गैर कम्युनिस्ट, आस्तिक और नास्तिक हमारे देश में साथ मिलकर और सहकारात्मक मैत्रीपूर्वक जनकल्याण के लिए कार्य करते हैं। सोवियट संघ के सभी नागरिकों की धार्मिक परम्पराओं और विश्वासों की स्वाधीनता को मान्यता प्राप्त है। धार्मिक स्वतन्त्रता और आस्था की आजादी न केवल घोषित ही कर रखी गयी है, वरन् सोवियट संघ के नागरिक को संवैधानिक अधिकार के रूप में उसका दृढ़ भरोसा दे रखा गया है। सोवियट नागरिकों में ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, बपतिस्मावादी और अन्य धर्मों के भी अनुयायी हैं।

हमारे महान गुरु श्री लेनिन ने जो अन्य लोगों की अपेक्षा आधुनिक समाज विकास के नियमों का उत्तमताज्ञान रखते थे, रूसी जनता के सर्वोपरि गतिशील अंश के रूप में श्रमिक श्रेणी के अग्रगामी यूथ की तरह कम्युनिस्ट दल का संघटन किया। श्रमिकों की महान क्षमता और शक्ति का मूल्य समाप्त कर ही उन्होंने इन्हें उस सामन्ती दासता एवं पूँजीवादी जीवन शैली के विरुद्ध आक्रमण के लिए उभारा, जिसने रूसी जनता को जकड़ बन्द कर रखा था। यह कार्य श्री लेनिन ने केवल अपने ही देश की जनता की प्रसन्नता और आजादी के नाम पर नहीं किया। वह जानते थे कि इससे दूसरे देशों के भी लोगो को सहायता मिलेगी।

अक्तूबर की महान क्रान्ति ने मानवता के जीवन में नवयुग का शुभारम्भ किया। श्री जवाहरलाल नेहरू ने 'डिसकवरी आव इण्डिया' नामक अपने ग्रंथ में कहा है—'सोवियट क्रान्ति ने मानव समाज को महान् प्रगति प्रदान की और ऐसी ज्वाला भड़कायी, जिसे बुझा पाना असम्भव है। इस क्रान्ति ने ऐसी नवीन सभ्यता को जन्म दिया जिस ओर विश्व अपने पग बढ़ा सकता है।' [रूसी अनुवाद से पुनः अनुवादित] हम आपके इस कथन से पूर्णतः सहमत हैं।

कहा जाता है कि क्रान्ति के समय बहुत से लोगों की अनावश्यक रूप से हत्याएँ हुईं। बात ऐसी नहीं है। अक्तूबर वाली समाजवादी क्रान्ति तो

अत्यन्त रक्तहीन महान् क्रान्ति थी। अपने हाथों में सत्ता ग्रहणकर लेने के बाद श्रमिक वर्ग ने उन बाधकों और पीड़कों को अन्धा-धुन्ध दण्ड देना नहीं शुरू किया, जो सदियों से उसका शोषण करते रहे, प्रत्युत् अक्टूबर क्रान्ति के बाद के प्रथम मास में अनेक जारशाही पक्ष के प्रतिक्रियावादी जनरल पेरोल पर रिहा भी किए गये। पर, बाद में इन लोगों ने अपनी वह प्रतिज्ञा भङ्ग की, जिस पर ही उन्हें रिहा किया गया था और अपने ही लोगों से तलवार लेकर लड़ने लगे थे। सोवियट जनतन्त्र को तो अपेक्षा थी शान्ति की। लेनिन और किसानों मजदूरों की सरकार ने इस शान्ति की घोषणा भी की, पर हमें बाध्य होकर रक्तरञ्जित युद्धका मार्ग अपनाने को विवश किया गया। यह पथ ही लोगों ने अपने आप नहीं अपनाया। यह केवल प्रचार नहीं, वरन् ऐतिहासिक सत्य है कि सोवियट रूस के विरुद्ध पूर्णतः शस्त्रसज्ज फ्राँसीसियों, अंग्रेजों, अमेरिकनों जापानियों और अन्य आक्रमणकारियों को भी युद्ध में उतारा गया।

यह लड़ाई हम लोगों के लिए बड़ी मर्हगी पड़ी। पर हम करते क्या? हमें मजबूरन उसमें जूझना पड़ा। किन्तु मैं फिर भी कहता हूँ कि हमारे लिए कोई दूसरा मार्ग था ही नहीं। हम पर हमला हुआ। वे लोग सोवियट संघ को ध्वस्त कर देना चाहते थे, उसकी धज्जी उड़ा देना चाह रहे थे। किन्तु लेनिन, कम्युनिस्ट पार्टी और अपनी समस्त जनता की आत्मा की सम्मान-रक्षा के लिए हमने अपने सर नीचे नहीं झुकाये, पराक्रमी शत्रु के सामने आत्म-समर्पण नहीं किया। हमारे देश का श्रमजीवी वर्ग, जिसमें विभिन्न जातियों के लोग हैं, अपनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में संघटित होकर पवित्र देश भक्ति युद्ध के लिए कमर कसकर तैयार हो गया। हमने अपने शत्रुओं को परास्त किया और मूक जनता की प्रभावशाली शक्ति के रूप में सोवियट पूर्वराज्य की दृढ़ताक स्थापना की।

जिस शान्ति की हमें आकांक्षा थी, उसको हमने पाया। सोवियट जनता, जिसकी कार्यशक्ति अपरिमेय है अपने देश के शान्तिपूर्ण

पुनर्निर्माण में पुनः लग गयी है। इस क्षेत्र में उसने अनुपम उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। शान्तिपूर्ण कार्य में दत्तचित्त रहते हुये हम जानते हैं कि प्रतिगामी शक्तियाँ अभी लुप्त नहीं हुई हैं। सोवियट देश के, जहाँ की जनता अपने परिश्रम के फल का उपभोग कर रही थी, अस्तित्व से भय खाकर हमारे शत्रुओं ने हमारे देश के पीछे हिटलरी फासिस्टवाद का खूँखार कुत्ता लगाया। यह सर्व विदित है कि फासिस्टों के आक्रमण का अंत कैसा हुआ! मुक्त मानवता के लिये दुर्दान्त संकट का प्रतीक नात्सीवाद की कब्र खोदकर फेंक दी गयी और हिटलर का सर्वनाश हो गया।

द्वितीय महायुद्ध ने हमारे देश को बहुत गहरा नुकसान पहुँचाया। उस समय दुर्दिनों से कम्युनिस्ट पार्टी की सत्प्रेरणा से सोवियट जनता ने संकट का सामना किया। पीछे नहीं हटी। उसने युद्ध के बाद की भीषण स्थिति पर पूर्ण विजय प्राप्त की।

अपनी असाधारण कार्यक्षमता से जनता नये कारखानों, मशीनों तथा विश्व में सबसे बड़े विद्युत कारखाने का निर्माण कर रही है।

मैं जो यह सब हाल बता रहा हूँ यह इसलिए नहीं कि मैं चाहता हूँ कि आप भी अपना विकास सोवियट तरीके पर ही करने को विवश हों। मेरे कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि किस कठिन परिस्थिति में हमारे देश की जनता को काम करना पड़ा, गुजरना पड़ा, उस स्थिति का पूर्ण दृश्य आपकी समझ में आ जाय। यह मार्ग निर्भ्रान्त है। इसी मार्ग पर चलकर हमारे देश की जनता ने बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ, विजय प्राप्त किये। यदि आप हमारे इस अनुभव का थोड़ा बहुत भी उपयोग अर्थ-व्यवस्था अथवा संस्कृति के क्षेत्रों में करना चाहेंगे तो हम निःस्वार्थ भाव से मनोयोगपूर्वक, जैसा एक मित्र का कर्तव्य है, आपका पूर्ण सहयोग करने को तैयार हैं और यथाशक्य सहायता कर सकेंगे।

हमारे देश की जनता बहुत बड़े-बड़े रचनात्मक कार्यों में दत्तचित्त

है। सोवियट संघ के साँस्कृतिक तथा आर्थिक अभ्युदय लक्ष्य तक पहुँचने तथा जनता के भौतिक कल्याण के निमित्त अपेक्षाकृत अधिक ऊपर उठने के विचार से सम्प्रति सोवियट संघ जनता की अर्थ व्यवस्था की सभी शाखाओं को विकसित करने के महाकार्यक्रम को पूरा करने में संलग्न है। केवल शान्ति पूर्ण कार्यों से ही हमें आनन्द और बल मिलता है। शान्ति-स्थापना के लिए हम निरन्तर सचेष्ट हैं। इतना ही नहीं, अन्य देशों के साथ अपने सम्बन्ध को शान्तिपूर्ण ढङ्ग से विकसित करने को भी हम यत्नशील हैं। फिर भी यह बता देना आवश्यक होगा कि कुछ ऐसे देश हैं जो शान्तिप्रसार के कार्य में हमारा साथ पूर्ण रूप से नहीं देते। दो देशों की जनता के बीच व्यापारिक तथा साँस्कृतिक सम्बन्ध कायम करने के हम समर्थक हैं। आज समस्त संसार अच्छी तरह जान रहा है कि अन्तर राष्ट्रीय सम्बन्धों में तनाव कम करने के लिए सोवियट संघ प्राणपण से लगा हुआ है।

हमारा लक्ष्य शान्ति है, राज्यो का शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व है। अन्य राज्यों की आन्तरिक समाजिक व्यवस्था से हमें कोई मतलब नहीं। हमारे राष्ट्र की परराष्ट्रनीति में निहित सभी बातें इसका विश्वस्त प्रमाण हैं।

विश्व जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं में जेनेवा सम्मेलन का बड़ा उच्च स्थान है। इस सम्मेलन में चार महान् राष्ट्रों के प्रधानों में वार्ताएँ हुईं। इस सम्मेलन के हम लोग उपकृत हैं, जिसने अन्तर-राष्ट्रीय तनाव को एक सीमा तक घटाया है। जेनवा सम्मेलन के चार बड़ों का सम्मेलन निर्देश पत्रों के अनुसार हाल में वहाँ इन देशों के परराष्ट्रमंत्रियों का सम्मेलन हुआ। चूँकि इस सम्मेलन के सामने अत्यधिक उलझी हुई समस्याएँ रही हैं, इसलिए इस सम्मेलन का कोई महान् फल नहीं निकला। प्रथम प्रयास में किसी निष्कर्ष पर पहुँचना भी कठिन था। किन्तु मुझे इस बात का विश्वास है कि यदि जेनेवा में हुए चार बड़ों के सम्मेलन द्वारा निर्देशित व्यवस्था के अनुकूल काम होता गया तो अंतरराष्ट्रीय स्थिति में

तनाव अवश्य घटेगा। समस्त विषम विश्व समस्याओं का हल शनैः शनैः ही होगा।

इस तथ्य से हम आंखें नहीं चुरा सकते कि जेनेवा सम्मेलन की भावना से कतिपय व्यक्तियों का हाजमा खराब हो गया है। कुछ राज्यों में कतिपय क्षेत्र अब भी बदतमीजी की नीति पर चलने की कोशिश कर रहे है क्योंकि वे अपने को बलशाली समझते हैं। वे आणविक शस्त्रास्त्रों की धमकी की नीति का अनुगमन करना चाहते हैं। ऐसी हरकत आधुनिक सभ्यता के लिये लज्जाजनक है।

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद प्रतिगामी शक्तियाँ आणविक शस्त्रास्त्रों से हमें धमकाना चाहती थीं, हमको नीचा दिखाना चाहती थीं। किंतु यह सुस्पष्ट है कि इसका कोई फल नहीं निकला। सोवियट वैज्ञानिकों ने आणविक शक्ति के रहस्यों को पा लिया है। कतिपय युद्धलोलुप विदेशी राजनीतिज्ञों की आक्रमणकारी योजनाओं को विफल कर देने के लिए हमें विवशतः आणविक शस्त्रास्त्रों तथा उद्जन बमों का निर्माण करना पड़ा किंतु इस शस्त्रास्त्र का निर्माण कर हमने तुरन्त घोषणा कर दी कि हमारी मंशा इनके प्रयोग करने की कदापि नहीं है। सोवियट संघ ने आणविक शक्ति का उपयोग शान्ति पूर्ण विकास में कर पहला उदाहरण संसार के सामने रख दिया। हमने प्रस्ताव भी रखे कि कोई राष्ट्र आणविक शस्त्रास्त्रों तथा उद्जन बमों का उपयोग न करे तथा इन पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय। हमने अपने प्रस्तावों में कहा था कि सभी सरकारें इस बात के लिए सौगन्धपूर्वक प्रतिज्ञा लें, किन्तु अभी तक पश्चिमी राष्ट्र इन प्रस्तावों से सहमत नहीं हो सके हैं।

प्रतिगामी शक्तियाँ शान्ति प्रयासों को विफल करने का पूरा प्रयत्न कर रही हैं, किन्तु हमारा दृढ़ विश्वास है कि विजय उन्हीं जातियों और व्यक्तियों की होगी, जो शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं क्योंकि प्रगतिशील मानवता शान्ति का ही स्वप्न देख रही है। हमें इस बात की

बहुत प्रसन्नता है कि इस कार्य में भारत ऐसा अच्छा मित्र हमारे साथ है।

भारत ने विश्व में नये युद्ध को रोकने तथा शाँति स्थापित कराने में जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उसकी सोवियट जनता तथा अन्य देशों की जनता हार्दिक प्रशंसा करती है। भारत ने सक्रिय रूप से कोरिया तथा हिन्द चीन में युद्ध बन्दी का समर्थन किया। अगणित कठिनाइयों के बावजूद कोरिया तथा हिन्द चीन की युद्ध विराम सन्धियों की शर्तों की पूर्ति के लिए भारत प्रयत्नशील है यह अपने विषम किन्तु उच्च अन्तरराष्ट्रीय कर्तव्यों का निर्वाह कर रहा है।

विश्व में अभी बहुत सी कठिन समस्याएँ हैं, जिनको हल नहीं किया जा सकता है। विश्वशाँति की स्थापना के लिए शक्ति लगन और सन्तोष से कार्य करने की बहुत आवश्यकता है, किन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि इस महान् कार्य में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

माननीय सभापति जी तथा संसद् के माननीय सदस्यों! हम सन्तोष के साथ यह कह सकते हैं कि हाल में भारत और रूस दोनों देशों के बीच आर्थिक तथा साँस्कृतिक सम्बन्ध बढ़े तथा दृढ़ हुए हैं। उभय देशों के पारस्परिक अधिक सम्पर्क से दोनों पक्षों को बहुत लाभ है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि इससे दोनों देशों की जनता का पारस्परिक सम्बन्ध और दृढ़ होगा। सन् १९५२ के सोवियट-भारतीय व्यापार समझौता के अनुसार दोनों देशों के बीच व्यापार बड़ी सफलतापूर्वक बढ़ रहा है। इस वर्ष धातु विज्ञान यन्त्र के निर्माण के सम्बन्ध में दोनों देशों में जो समझौता हुआ है, वह हम लोगों के अधिक सम्बन्ध को दृढ़ बनाने की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

भारत सोवियट रूस की सहायता से १० लाख टन इस्पात प्रति वर्ष उत्पादित करेगा। रूस के कार्यकर्ता और इन्जीनियर बड़े उत्साह से उक्त कारखाने के निर्माण सम्बन्धी 'आर्डर' की पूर्ति में लगे हुए है। गणतन्त्र भारत तथा सोवियत रूस के नेताओं के व्यक्तिगत सम्पर्क को हम बड़ा महत्व

देते हैं। भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू की रूस यात्रा का सोवियट जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

सोवियट रूस की जनता शताब्दियों की गौरवपूर्ण ऐतिहासिक भारतीय संस्कृति में गहरी रुचि रखती है। भारतीय साहित्यकारों की अनेक रचनाओं का रूसी भाषा में अनुवाद हो चुका है। महान् भारतीय साहित्यकार तथा श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की हमारे देश में बड़ी प्रसिद्धि है। आधुनिक भारतीय लेखकों की रचनाओं में रूसी जनता बहुत दिलचस्पी लेती है। सोवियट संघ की स्थापना के बाद से आज तक भारतीय कथा साहित्य सम्बन्धी ४० लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। महान् भारतीय जनता के प्रिय नेता महात्मा गाँधी, जिन्होंने आपके देश के इतिहास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है उनकी भी रचनाएँ रूसी भाषा में अनुवादित की गयी हैं। प्रख्यात राजनीतिक और कूटनीतिक गणराज्य भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू की 'डिसकवरी आफ इण्डिया' का प्रकाशन होते ही भारी संख्या में उसकी प्रतियाँ बिकीं।

संस्कृति और कला के क्षेत्रों में तथा प्राविधिक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के परस्पर व्यापक आदान-प्रदान के हम इच्छुक हैं। सोवियट जनता अपने भारतीय बन्धुओं का रूस में सदा स्वागत कर प्रसन्नता का अनुभव करती है। हम एक दूसरे को जितना अधिक समझेंगे, परस्पर सहायता करेंगे हमारी मैत्री उतनी अधिक दृढ़तर होती जायगी। फलस्वरूप संसार में शान्ति को शक्तियाँ भी बलवती बनेंगी। आपने और आपकी जनता ने हमारा तथा हमारे प्रतिनिधिमण्डल का जैसा हार्दिक स्वागत किया है, उसके लिए मैं अनेक धन्यवाद प्रकाश करता हूँ। हम सम्पूर्ण हार्दिकता से मित्र भारतीय जनता की प्रसन्नता तथा सम्पन्नता की कामना करते हैं।

महान् भारतीय जनता जिन्दाबाद!

भारतीय तथा रूसी जनता की मैत्री जिन्दाबाद!

विश्वशान्ति जिन्दाबाद !"

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच हमारे उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन बोल रहे हैं :—सम्मानित अतिथिगण एवं सदस्यों, इस स्वागत के अवसर पर हमें यह न भूल जाना चाहिए कि राष्ट्र की समृद्धि विदेशी आर्थिक एवं प्राविधिक सहायता पर उतनी निर्भर नहीं, जितनी अपनी नैसर्गिक शक्ति, अपनी कार्य क्षमता, अपने नैतिक बल तथा सहकारितापूर्वक सृजनात्मक कार्य करने की शक्ति पर।

विगत रूसी यात्रा के अवसर पर नेहरूजी के प्रति किये गये आत्मीयता एवं उल्लासपूर्ण स्वागत सत्कार से भारत अत्यधिक प्रभावित हुआ है। मुझे पूरी आशा है कि हमारे रूसी अतिथिगण भी भारतीय जनता तथा सरकार की रूसी जनता के प्रति सच्ची मैत्री भावना से अवश्यमेव आश्वस्त हुए होंगे।

उनकी पीढ़ी को सन् १६१७ की महान् रूसी क्रान्ति के बाद से होने वाली प्रगति को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वह क्रान्ति रूस में उस समय प्राप्त विशेष परिस्थिति में अनिवार्य थी, पर आज की स्थिति में वर्तमान घटनागत एवं तथ्यगत परिस्थितियों के विरुद्ध मार्क्स तथा लेनिन के सिद्धान्तों की दुहाई देना निरर्थक है। आज भारत अपने समाज का समाजवादी ढाँचे पर पुनर्निर्माण करने के लिए प्रयत्नशील हैं। लेनिन ने कहा है कि प्रत्येक देश में कभी न कभी समाजवादी व्यवस्था आयेगी ही, क्योंकि वह अनिवार्य होगी। भारत शान्तिपूर्ण तथा अहिंसात्मक तरीके से समाजवादी ढाँचे पर आधृत समाज की ओर अग्रसर है जबकि अन्य राष्ट्रों में समाजवाद आने में कई शतक लगे। अतएव सब राष्ट्रों में समाजवाद केवल समान मार्ग अपनाने से ही न आ सकेगा। भारत का समाजवाद तक पहुँचने का अपना एक अलग मार्ग है और यह हमारी उस विशिष्ट परम्परा के अनुरूप है जो कि उसकी अपनी पृष्ठभूमि में अहिंसा एवं लोकतान्त्रिक प्रणाली के सहारे प्रादुर्भूत हुई है।

किसी देश की प्रगति केवल वैदेशिक सहायता पर निर्भर नहीं रहती। मुझे प्रसन्नता है कि श्री बुलगानिन तथा श्री क्रुश्चेव अपने वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुभवों में भारत को भी साझीदार बनाने के लिए तैयार हैं।

पञ्चशील मे सजीव एवं सशक्त सिद्धान्त निहित हैं। यह कोरा सिद्धान्त नहीं। केवल पञ्चशील अथवा राष्ट्रसंघ घोषणा पत्र (चार्टर) के सिद्धान्तों में केवल आस्था व्यक्त करने से ही विश्व की प्रगति सम्भव नहीं।

भारत की ओर से विश्वास दिलाता हूँ कि दीर्घकालीन विश्वशान्ति स्थापित करने के प्रयत्न में रूसी जनता एवं सरकार को भारतीय जनता तथा सरकार पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्त निरामयः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चि-द्दुख भागभवेत्!"—संस्कृत के इस श्लोक के साथ उपराष्ट्रपति का भाषण समाप्त होता है।

संवाद क बैठक समाप्त! हमारे अतिथि वापस जा रहे हैं। राष्ट्रीय भौतिकशाला में नृत्य-गीत का आयोजन है। आइये, हम भी चलें। सड़क पर बड़ी चहल-पहल है। यह क्या! रेडियो गड़गड़ा रहा है। बम्बई में हड़ताल! गोली वर्षा·······

यह अखबार का पन्ना पढ़िये :—कल रात तक १० व्यक्ति मारे गये, २६६ घायल हुये। घायलों में ११ पुलिस अधिकारी, २२ सिपाही हैं। अब तक १५५ व्यक्ति गिरफ्तार हुये हैं। शिवाजी पार्क, सुपारी बाग रोड में ढेलेबाजी हो रही है। एक पुलिस चौकी जला दी गई है। फ्लोरा फाउन्टेन पर घोर संघर्ष हो रहा है। पुलिस की गोली एक व्यक्ति के सीने में लगी है। रक्त के फव्वारे छूट रहे हैं। उत्तेजित जनता उस आहत व्यक्ति को अपने हाथों पर उठाये पुलिस अधिकारियों पर हमला कर रही सारी बम्बई अस्त-व्यस्त है।"

अखबार पाकेट में रखिये। चलिये राष्ट्रीय भौतिकशाला। देखिये, यहीं है भव्य आयोजन! विशाल रंगमंच जगमगा रहा है। रंग-

बिरंगा प्रकाश ! मञ्च, जैसे इन्द्र का अखाड़ा । आये अतिथि। उपस्थित जनसमूह उठ खड़ा होता है, स्वागत के लिये । आइये । आसीन हो गये अतिथि, सबसे आगे ।

मञ्च पर लाल हरा प्रकाश !

बालक बालिकाओं का एक झुण्ड है मञ्च पर। युवक-युवतियों की रंगीन पोशाकें प्रकाश में झिलमिला रही हैं।

बालकों के कण्ठ से गीत फूट रहा है—"जननी, तेरी जय जय जय... विश्वराज्य के लोकतंत्र में किसको किसका भय !"

अब बालिकाएँ दुहरा रही हैं—"जननी तेरी जय जय जय''''विश्वराज्य के लोकतंत्र में किसको किसका भय'''जननी, तेरी जय जय जय'''।"

गीत समाप्त होता है। राष्ट्रपति मैथिलीशरण द्वारा रचित। तालियों की गड़गड़ाहट ! स्टेज का प्रकाश बदलता है !

छम् छम् छम् छम् छम्म् छम्म्'''मणिपुर की वेशभूषा में आ गयी ये गुलाबी गुलाबी लड़कियाँ, आ गये युवक''''''पग घुँघरू बाजे। नेपथ्य मे बाजा ढोलक'''ढम ढम ढम ढम'''लड़कियों के घुँघरू बाजे छम् छम् छम्'''लहराये घाँघरे'''थेई थेई थेई'''था था था थेई थेई''''

शुरू हो गया मणिपुर नृत्य ! मणिपुरी वेश में, जगमगाते रँगीन प्रकाश में युवतियों का झुण्ड अप्सराओं सा लग रहा है।

दर्शक मंत्र-मुग्ध हैं।

अतिथि देख रहे हैं आश्चर्य से।

था था था थेई थेई'' डिम डिम डिमाक् छम छमाना छम'''

नृत्य थम जाता है। दृश्य पटलता है। आकाशवाणी का आर्केस्ट्रा। मधुर स्वर निकल रहे हैं। वाद्यों के स्वर'''डिक डिक टिम टिम टंग टाँग-टिंम टमटम टिं ठक ठक ठक ट्मिट्मिाक् टिमटिमाक्'''पिंटिंग पिंटिंग'''फिर स्वर''''टिंग टिंग'''टिमटिमाँग'''वाह ! कैसा कर्णप्रिय संगीत है।

तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूँज उठता है।

फिर दृश्य परिवर्तन !

यह हैं कुमारी शान्ताराव ! अहा ! क्या मोहक रूप ! कैसी प्यारी प्यारी आँखें । भरतनाट्यम् की इस नर्त्तकी ने विदेशों में भी भारत का नाम ऊपर उठाया है । देखिये····

वाह ! ठक्का ठक्का ठक्क···थेई थेई ताथेई···ठक्क···कैसे पग उठ रहे हैं, गिर रहे हैं । आँखों का कटीला संचालन, अंग अंग की यह थिरकन···यह यह भृकुटि संचालन, यह मुद्रा···वाह···कमाल ।

शाबास शान्ता !

दर्शकों की विपुल हर्षध्वनि के साथ थियेटर गूँज उठता है ।

दृश्य बदलता है ।

गोरा शरीर, आकर्षक छरहरा बदन···पहिचानते हैं इन्हें···कुमारी रौशन···नीली रोशनी में चेहरा चमक रहा है नीलमणि सा ।

कत्थक नृत्य···

डाँगाडिंग डाँगाडिंग डाँगाडिंगा···डे डे डे ढे ढे ढे···ढाँग···

अङ्ग सञ्चालन, भावपूर्ण मुद्राएँ···वाह···हमारा यह कार्यक्रम देखकर अतिथि कितने प्रसन्न हैं !

शाबास रौशन । खूब···खूब···कमाल ।

मञ्च का प्रकाश बदलता है ।

अब देखिये नागा नृत्य····नागाओं का नृत्य····हूबहू एकदम वहीं का वातावरण···नागा संस्कृति भी हमारे देश की एक प्यारी संस्कृति है ! कैसा आकर्षक नृत्य है ।

दृश्य फिर बदलता है ।

छम्म्····आ गईं मृणालिनी साराभाई····छम्म्····यह हैं च्टन्नी पणिक्कर···

नृत्यनाट्य (बैले) प्रारम्भ हो रहा है । प्रकाश लाल, हरा, नीला, पल पल रङ्ग बदल रहा है । छम्मर छम्म छम्मर छम्म्···आकर्षक

मुद्राएँ । अङ्ग सञ्चालक की क्रियाएँ । हमारे इन नृत्यों पर किसी को भी गर्व हो सकता है।

झूम-झूम कर नाच रहे हैं दोनों ! वाद्यों का भी अजीब समाँ बँध गया। इन्द्रपुरी के जैसा गीत, नृत्य का यह आयोजन दिल्ली में अनोखा है।

तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूँज उठता है । इस कार्यक्रम की पूरी फिल्म ली गई है। दो घण्टे तक का लगातार कार्यक्रम''हमारे देश की प्रायः सभी संस्कृतियों के नृत्य, गीत का प्रदर्शन !

मार्शल ने तालियाँ बजायी हैं । श्रीक्रुश्चेव भी अभिनन्दन कर रहे हैं।

इस स्वागत और प्रदर्शन के प्रति मार्शल अपना धन्यवाद प्रकट कर रहे हैं। भाषण के अन्त में फिर जोर से तालिताँ पिट रही हैं। हमारे अतिथि अब वापस जा रहे हैं।

दिल्ली स्टेशन पर एक प्लेटफार्म विशेष रूप से बनाया गया है। इसी प्लेटफार्म पर एक स्पेशल ट्रेन खड़ी है। इसके डिब्बे, इसका इञ्जिन सब कुछ नया है। प्रत्येक डिब्बा और एंजिन अच्छी तरह से सजाया गया है। बीच में मार्शल बुलगानिन और उनके विशिष्ट साथियों का विशेष एयर कण्डीशण्ड कक्ष है, जिसमें सिनेमा, संगीत, पुस्तकालय आदि की पूरी व्यवस्था है। इस ट्रेन में बेतार का यन्त्र भी है।

इसी ट्रेन से अतिथि दौरे पर रवाना होंगे। इञ्जिन चित्तरञ्जन का एकदम नया इञ्जिन है। *C 1013 A* ।

इस प्लेटफार्म के चारों ओर सख्त पहरा है। विशेष व्यक्ति ही प्रवेश पा सकते हैं।

रात के साढ़े आठ का समय। रंगीन प्रकाश और पताकाओं से प्लेटफार्म जगमगा रहा है। ट्रेन जगमगा रही है।

यह आ गये हमारे मंत्री नित्यानन्द कानूनगो, परराष्ट्र सचिव श्री पिल्लई। आप लोग इन नेताओं के साथ बराबर यात्रा में रहेंगे।

सावधान! मोटर साइकल पर यह चालक आ रहा है। आ रहे हैं हमारे अतिथि! साथ हैं श्री नेहरू और उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन्। आइये। प्लेटफार्म तक मोटरें चली आयी हैं। यह उतरे सब।

चलिये।

सब अतिथि ससम्मान ट्रेन में बैठा दिये जाते हैं।

ट्रेन सीटी दे रही है। इञ्जिन खड़खड़ा रहा है। तैयार ''सुरक्षा सैनिक तथा अन्य कर्मचारीगण ट्रेन में बैठ जाते हैं। नेहरू विदा दे रहे हैं। उपस्थित जनों के हाथ हिल रहे हैं। महिलाएँ रूमाल हिला रही हैं। भारत की आपकी यह यात्रा शुभ हो। हमारा देश देखें आप। सहयोग दें, मित्रता का हाथ बढ़ावें। आपका स्नेह पाकर हम गौरवान्वित होंगे।

छुक्क् छुक्क् छैयाँ छुक्क् भक्क'''

ट्रेन हिल रही है। हमारे नेता अतिथियों को विदाई दे रहे हैं। महान भारत की यह यात्रा शुभ हो।

ट्रेन आगे बढ़ रही है। वह जा रही है। हमारे नेता, अधिकारी प्लेटफार्म पर खड़े हैं। ओझल हो गई ट्रेन। लौट रहे हैं हमारे अधिकारी। रौनक है, सजावट है, पर अतिथियों के जाने के कारण सूना सूना सा लग रहा है।

दिल्ली सूनी सी लग रही है।

खड़र'''खड़र'''खड़र'''स्पेशल ट्रेन भागी जा रही है। क्रमशः दिल्ली पीछे छूटती जा रही है। चकाचौंध कर देनेवाला प्रकाश और गगनभेदी नारे अब नहीं। सब शान्त है। अँधकार को चीरती ट्रेन बढ़

रही है। ध्वनि है, तो केवल खड़र खड़र की। भाग रहे हैं केवल प्रहरी और सेवक...रूस और भारत के झण्डों से सजी ट्रेन सरपट पटरियों पर भागी जा रही है। आस-पास के गाँवों में कुछ जागते कुछ ऊँघते लोग आँखें फाड़कर इस विशेष ट्रेन को देख रहे हैं।

ट्रेन रुकती नहीं। सीधी भागती जा रही है। रात भी भागती जा है। ध्रुव तारा घूम रहा है। सप्तर्षि पश्चिम में मुड़ते जा रहे हैं।

ट्रेन में सन्नाटा। अधिकांश सहयोगी सो गये हैं। श्री नित्यानन्द कानूनगो और श्री के. पी. एस. मेनन निद्रामग्न हैं। बेतार के तार से गाड़ी को बराबर ले आने की सूचना मिलती जा रही है। रास्ते में पड़ने वाले क्रासों पर कोई रुकावट नहीं।

ट्रेन भाग रही है। रात भाग रही है। सबेरे की सफेदी आसमान पर फैल रही है। गाड़ी की गति धीमी हो रही है।

रूपड़ छोटा सा स्टेशन। छोटी चाय के लिये गाड़ी रुक रही है। रुक गई। चहल-पहल! पुलिस का सख्त पहरा स्टेशन के चारों ओर पड़ा हुआ है। स्टेशन के बाहर लगभग २००० बच्चे इकट्ठे हैं। कौतूहल से इस गाड़ी को देख रहे हैं। उचक-उचककर देखने का प्रयास कर रहे हैं, पर पुलिस का घेरा। जाने की अनुमति नहीं! प्रवेश निषेध!

अतिथियों को चाय दी जा रही है। पुलिस अधिकारी अपने अपने स्थानों पर मूर्तियों से खड़े हैं।

चाय पान समाप्त! कैमरामैन मार्शल के कुछ चित्र ले ही लेते हैं।

गाड़ी आगे बढ़ने की सीटी। दिन निकल आया है। छुक्क् छुक्क् छुक्क्...गाड़ी आगे बढ़ रही है। रूपड़ और रूपड़ स्टेशन के चारों ओर बिखरे बच्चों का झुण्ड पीछे छूटा जा रहा है। गाड़ी आगे बढ़ रही है।

नंगल के विशिष्ट प्लेटफार्म की ओर गाड़ी भाग रही है। रूसी अतिथि ट्रेन से ही देखते जा रहे हैं।

गाड़ी अपनी गति पर है।

यह रहा प्लेटफार्म ! सशस्त्र पुलिस का कड़ा पहरा ! गाड़ी रुकती है और बाहर नारा उठता है। मार्शल बुलगानिन जिन्दाबाद !

पूरा प्लेटफार्म लाल और हरी झण्डियों से लहरा रहा है। फूल मालाएँ स्थान स्थान पर झूल रही हैं। मार्शल अपने साथियों के साथ उतर रहे हैं। पंजाब के राज्यपाल तथा भाकड़ा बाँध के जनरल मैनेजर श्री एस० डी० खुनगर स्वागत कर रहे हैं। आइये, अभिनन्दन है आपका। संसार के सबसे बड़े बाँध, हमारे गौरव, भाकड़ा नंगल बाँध को देखिये।

स्वागत समारोह के उपरान्त सम्मानित अतिथि बाहर आ रहे हैं। वह हैं चमचमाती मोटरें। पत्रकार, विशिष्ट व्यक्ति, सम्मानित अतिथि और उनके सभी साथी कारों में बैठे रहे हैं। आगे आगे मोटर साइकिलें हैं जिन पर अपनी वर्दी में सेना और पुलिस के विशिष्ट अधिकारी बैठे हैं।

घर्र घर्र···फटाफटा फटफट···

आगे वाली मोटर साइकिल का इञ्जिन घरघराया। मार्च ! चल पड़ा दल !

देखिये बाँध तक जानेवाले इस आठ मील लम्बे रास्ते पर सैकड़ों द्वार बने हुये हैं। तोरण द्वार। लाल हरी झण्डियाँ फहरा रही हैं। स्थान स्थान पर सजावट है। मार्ग के दोनों ओर पंक्तिबद्ध होकर जनता खड़ी है। सबकी निगाहें इसी ओर हैं। हजारों ग्रामीण और नागरिक आज यहाँ तड़के से ही आकर खड़े हैं। इस आठ मील लम्बे मार्ग पर कोई डेढ़ लाख से कम जनता न होगी !

यह गई मोटर साइकिल। वह आ रहा है काफिला !

शिवालक पहाड़ी की यह घुमावदार सड़क ! पहाड़ी हवा फहरा रही है। लाल नीली हरी पीली झंडियाँ फहरा रही हैं। हजारों छात्रों के

हाथों में रूस और भारत की झण्डियाँ हैं। ३० कारों का काफिला आ रहा है।

"हिन्दी रूसी भाई भाई······"

गगनभेदी नारा गूँज उठता है। मार्शल हाथ हिला रहे हैं। कदम कदम पर जनता दिल खोलकर स्वागत कर रही हैं। नारों से कान के परदे फटे जा रहे हैं। कदम-कदम पर गगनभेदी नारे। सैकड़ों कंठों की पुकार *विश्वशान्ति हो······*

देखो सम्मानित अतिथियो, भारत विश्वशान्ति के लिये किस प्रकार चीख रहा है। नेहरू ही नहीं भारत की यह कोटि कोटि जनता आज शान्ति की पुकार कर रही है। देख लो अपनी आँखों यह नेहरू का नारा नहीं इस देश के बच्चे-बच्चे का नारा है। हमें शान्ति चाहिये। विश्व को शान्ति चाहिए। मानव को शान्ति चाहिए। यह बूढ़ी औरत भी भीड़ की चपेट में पड़कर चीख रही है, विश्व शान्ति अमर हो। देखो इस बुढ़िया को गोर्की की माँ की तरह यह भी आज चीख रही है···अरे नासमझो शान्ति दो! ...*माँ की गोद का यह बच्चा, स्कूल के पढ़ने वाले यह बालक स्वतंत्र* भारत का यह नवयुवक···चीख रहे हैं। माँग रहे हैं, शान्ति! हमें शान्ति चाहिए। मानव को शान्ति चहिए। सब शान्ति की पुकार कर रहे हैं।

आठ मील लम्बे इस मार्ग पर सर्वत्र पुष्प वर्षा होती है। नारे लगाए जा रहे हैं। सम्मानित अतिथि बढ़ते जा रहे हैं भारतीय जनता को अभिवादन करते हुए।

यह रहा भाँकड़ा बाँध! आज श्रमिकों में विशेष उत्साह है। दोपहर *की तेज धूप से बचने के लिए महान अतिथि स्ट्रा हैट्स लगाए हुए हैं* बड़ी बड़ी मशीनें और क्रेनें काम कर रही हैं, मशीनों की घरघराहट हो रही और बीच बीच में यहाँ काम करने वाले ७० हजार श्रमिक नेताओं का जय जयकार गूँज उठता है।

पंजाब के राज्यपाल श्री चन्देश्वरप्रसाद नारायण सिंह के साथ मार्शल बुलगानिन छोटी पहाड़ी पर खड़े हैं। यह वही स्थान है, जहाँ गत १७ नवम्बर १९५४ को नेहरू जी ने अंतिम खण्ड की नींव में मशाले का कड़ाहा गिराया था। मार्शल कह रहे हैं—"साथियो, यह विशाल निर्माण कार्य देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह देखकर हमें अपने देश में होनेवाले निर्माण कार्यों की स्मृति आ जाती है। यह पहाड़ी है। भारत और रूस के बीच खड़ी पर्वतमाला दोनों देशों की सतत बढ़ती हुई मैत्री में बाधक नहीं हो सकती है। सोवियत क्रान्ति से आज तक के ३८ वर्षों में से १८ वर्ष युद्ध में ही बीते, फिर भी समाजवाद की स्थापना में सोवियत रूस सफल रहा। मैं आशा करता हूँ कि भारत की जनता भी देश के नवनिर्माण में हमारी ही तरह सफल होगी।" और अन्त में मार्शल हिन्दी में···हिन्दी रूसी एक हैं···हिन्दी रूसी भाई भाई···" कहते हैं।

हुर्रा! ७० हजार श्रमिकों और एक बड़ी संख्या में एकत्रित नागरिकों का समूह हर्षध्वनि कर उठता है।

अब सम्मानित अतिथि कार्यों का निरीक्षण कर रहे हैं! मशीनों की घड़घड़ाहट के कारण जोर से बोलना पड़ रहा है। देख रहे हैं जनाब ख्रुश्चेव का···एकदम मशीनी आदमी हैं। एक बड़े क्रेन को सीमेंट और मिट्टी से भरा कड़ाहा गिराते देखकर राज्यपाल से कहते हैं—"मुझे इस प्रकार के निर्माण कार्यों के प्रति विशेष दिलचस्पी है।" राज्यपाल क्या कहें? मुस्कराकर रह जाते हैं।

यह देखिये, यह है डाइवर्सन और पेनस्टाक टेनल! यह है डाउन-स्ट्रीट काफर डेम। यह है कांक्रीट फैक्टरी!

सुरंगों को देखकर ख्रुश्चेव कहते हैं—"बमों से बचने के लिये यह स्थान तो बड़ा ही सुरक्षित है।"

यह हैं श्री स्लाउकम! आप अमेरिकन हैं और बाँध पर कार्य करने

वाले ३०० इञ्जीनियरों को आप निर्देश देते हैं। मार्शल और क्रुश्चेव आपसे मिल रहे हैं।

क्रुश्चेव हाथ मिलाने के उपरान्त कहते हैं—"हम लोग अमेरिका के शत्रु नहीं हैं। हम लोग तो आपके मित्र होना चाहते हैं। हम प्राविधिक तथा अन्य क्षेत्रों के अपने अनुभवों का अमेरिकी इञ्जीनियरों से आदान-प्रदान करना चाहते हैं।"

"पर ऐसा होता कहाँ है?

"जो अमेरिकी रूस की यात्रा करना चाहता है, उसे तो अनुमति पत्र मिल जाता है, पर जो रूसी अमेरिका की यात्रा करना चाहता है, उसे आपकी सरकार इजाजत नहीं देती है!"

"........."

"फिर भी हम लोगों के विकास एवं निर्माण अभियान के प्रारम्भिक दिनों में अमेरिकी इञ्जीनियरों ने हमारी बड़ी सहायता की है। वे बड़े ही अच्छे इञ्जीनियर थे। अब तो हम अमेरिकी इञ्जीनियरों से प्रतिद्वन्द्विता कर सकते हैं!"—अमेरिकन चुप रह जाता है। अब लगातार दो घंटे तक भाकड़ा बाँध का निरीक्षण कार्य समाप्त कर तीसरे पहरे हमारे सम्मानित अतिथिगण नंगल बाँध की ओर रवाना होते हैं।

फिर वही स्वागत! वही धूमधाम। मशीनों की गरजना के साथ सोवियत नेताओं की जयजयकार पहाड़ियों में गूँज रही है।

मोटरों का काफिला आगे बढ़ रहा है। नेतागण नङ्गल बाँध वापस लौट रहे हैं। नङ्गल बाँध भाकड़ा से छोटा है, पर भाकड़ा से सम्बन्धित है।

गङ्गवाल विद्युत केन्द्र का निरीक्षण कर काफिला आगे बढ़ रहा है। यही है गङ्गवाल का विशाल विद्युत केन्द्र! यहाँ से पञ्जाब के कुछ हिस्सों से लेकर दिल्ली तक बिजली दी जायगी। भारत का सबसे बड़ा बिजली घर!

यह रहा नङ्गल बाँध। श्रमिकों के झुण्ड मार्शल और उनके साथियों का स्वागत करते हैं।

काफिला बढ़ रहा है। खटाक्! सब रुक गये। अधिकारी घबड़ा गये। अरे! यह क्या हो गया। दौड़े सब! सनसनी सी फैल गयी!

ओह! मार्शल का टोप उड़ गया। नाले में जा गिरा। भई खूब बचाया। इससे पहले कि वह तनिक भी खराब हो सके, डी० आई० जी० श्री अश्विनीकुमार लपककर उठा लाये हैं। मार्शल का है! मार्शल को वापस! मार्शल धन्यवाद दे रहे हैं।

नङ्गल बाँध का निरीक्षण कर श्रीक्रुश्चेव अत्यन्त प्रसन्न हैं।

"भारतीयों के स्वागत से मैं इतना प्रसन्न हो गया हूँ कि भारत आने की तिथि ही याद नहीं है। भारतीयों के स्वागत से मैं यह भूलने लगा हूँ कि कुछ दिन पूर्व मैं सोवियत यूनियन में था!"

पञ्जाब के सिंचाई मंत्री चौधरी लहरीसिंह रूस के सांस्कृतिक मंत्री श्री मिखालोव से पूछ रहे हैं:—"क्या आप थक तो नहीं गये?"

"जी नहीं। मैं अपने मित्रों से कहूँगा कि भारत को देखने से २० वर्ष जवानी की स्थिति आ जाती है!"

शाम घिर आयी है। अब पञ्जाब राज्य सरकार की ओर से भोज का आयोजन है। विशाल मैदान में शामियान तना है। भोज की भारी तैयारियाँ पूरी हैं।

अतिथियों का स्वागत करते हैं पटियाला महाराज।

स्वागत स्वरूप दो सौ वर्ष पुरानी दो तलवारें दोनों मान्य अतिथियों को भेंट करते हैं।

श्रीक्रुश्चेव उपहार स्वरूप तलवार पाकर कहते हैं—"मैं और बुलगानिन इन तलवारों को रूस ले जाकर दिखायेंगे। निस्सन्देह रूस के बहुत से जनरलों को इन तलवारों के प्रति ईर्षा होगी। क्या पृथ्वी पर कोई एक भी ऐसा सैनिक है, जो अच्छा शस्त्र पसन्द न करे!"

तलवार तो ले ली श्रीक्रुश्चेव ने, पर खोल नहीं पा रहे हैं।

"देखिये ऐसे!"—और पञ्जाब के मुख्यमंत्री श्री भीमसेन सच्चर

की पत्नी श्रीमती राचर ने उन्हें म्यान से तलवार निकालकर उसे खोलना सिखलाया !

इस पर बड़ा क़हक़हा लगता है । गोलम टोल, घुटा सिर, डाढ़ी मूँछ सफाचट, स्थूलकाय श्रीक्रुश्चेव खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं ।

"अच्छा ! तो हमारी ओर से लीजिये ये कैमरा ।"

रूस में बना कैमरा/पटियाला महाराज को भेंट करते हैं श्रीक्रुश्चेव । महारानी पटियाला को स्कार्फ और सोवेनर भेंट करते हैं ।

श्रीक्रुश्चेव हैं बड़े खुशमिजाज । कुछ देर पहले आप जनाब कुछ कार्डों पर एक पेन से हस्ताक्षर कर रहे थे । एक अमेरिकी रिपोर्टर पास खड़ा देख रहा था । बोले—"मैं उस कलम से हस्ताक्षर कर रहा हूँ, जिसे एक अमेरिकी सिनेटर ने भेंट किया था । आप चाहें तो इसका प्रयोग कर सकते हैं ।"

बेचारा रिपोर्टर झेंपकर रह जाता है ।

इसी प्रकार दिल्ली में आपने एक मजाक मार्शल के साथ किया । आप तो टमाटर खाने लगे और मार्शल को मिर्चें दिखाते हुये बोले—"आप इसका स्वाद लें !"—बेचारे मार्शल झेंप गये !

देखिये ! प्रारम्भ हो गया है भोज का आयोजन ! श्रीक्रुश्चेव खड़े होते हैं । कह रहे हैं—"सम्मानित साथियो, मित्रो, हमारा सौभाग्य है कि आज हम इस विशाल निर्माण कार्य को देख सके । मेरा विचार है रूस भारत को प्राविधिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता देगा । आप लोगों ने सुना होगा, पढ़ा होगा । आपके रेडियो और सम्वाद पत्र कह रहे हैं । दो चतुर रूसी सौदागर भारत गये हैं । बुलगानिन और क्रुश्चेव बड़े ही चालाक व्यक्ति हैं । इनके साथ सावधानी से व्यवहार करो । आप लोग काफी संख्या में बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ स्थापित करना चाहते हैं । मुझे इस बात में बड़ी प्रसन्नता है कि आप बड़े-बड़े कल-कारखानों का निर्माण करना चाहते हैं । इस कार्य में यदि आप हमारी और हमारे देश की सहायता चाहते

हैं तो कहिये और निश्चय ही हम आपकी सहायता करेंगे। यदि आप विद्युत् शक्ति केन्द्रों की स्थापना करना चाहते हैं और उसके लिए आप हमारे प्राविधिक ज्ञान से लाभ उठाना चाहते हैं, तो आप हमसे अपना मन्तव्य मात्र कहिये, हमारी सहायता आपके लिए उपस्थित हो जायगी। यदि आप अपने देशवासियों को किसी भी विषय की रूस में शिक्षा दिलाना चाहते हैं तो निश्चय ही उन्हें हमारे यहाँ भेजिये !

यदि यह चतुराई या चालाकी है तब तो निश्चय ही हम चालाक हैं। हमारा मुख्य लक्ष्य भारत रूस मैत्री है।

लोग यह प्रश्न कर सकते हैं कि भारत तथा सोवियट रूस की जनता का जीवन क्रम भिन्न होते हुए दोनों देशों में कौन-सी समानता है ? ऐसे प्रश्नकर्ताओं को मेरा उत्तर यही है कि युद्ध और शान्ति के सम्बन्ध में मतैक्य होने पर दृष्टिगत भेद, विचार मतभेद, जनजीवन गत भेद तथा सरकार गत विभिन्नता कोई अर्थ नहीं रखती। युद्ध का निवारण करने तथा शान्ति को बल प्रदान करने में हर देश को सहयोग करना होगा। प्रसन्नता की बात है कि भारत तथा रूस की मित्रता उसी दृढ़ आधार पर प्रतिष्ठित है।

सोवियट रूस इस सिद्धान्त में विश्वास करता है कि किसी भी देश को दूसरे देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। यही कारण है कि हमने श्री नेहरू तथा श्री चाओ एन लाई द्वारा उद्घोषित और प्रतिपादित पञ्चशील का हार्दिक समर्थन किया है।

सोवियत मित्रों की तलाश कर रहा है। हम दूध, हलों, ट्रैक्टरों तथा सूती कपड़ों का उत्पादन बढ़ाने के लिए उदजन बमों का निर्माण बन्द कर देंगे। सोवियत यूनियन आत्मरक्षा के लिए ही सशस्त्र बनेगा। प्रारम्भ में १४ देशों ने बारी बारी से सोवियत यूनियन पर हमले किये। किन्तु लेनिन ने देश को आक्रमण विफल करने के योग्य बनाया। जो तलवार लेकर सोवियट आयेगा, उसका विनाश तलवार से ही होगा। रूस के शत्रुओं

को हिटलर की दुर्दशा का स्मरण करना चाहिये। भारत को अपने उच्च तथाकथित मित्रों से सतर्क रहना चाहिये जो उसके विकास को ईर्ष्या की निगाह से देख रहे हैं।

मार्शल बुलगानिन नेहरू के नाम दोस्ती का जाम लेते हैं और हिन्दी में हिंदी रूसी भाई भाई कहते हैं।

भोज आरम्भ है। महारानी पटियाला तथा अन्य महिलाएँ अपनी भारतीय वेश और रूपरङ्ग में खूब खिल रही हैं। प्रसन्नता का वातावरण है।

भोज समाप्त होता है।

कुछ देर के विश्राम के पश्चात् लोक गीत और लोक नृत्यों का कार्य-क्रम प्रारम्भ होता है। पञ्जाब के लोक गीत···पञ्जाब की ढोलक के विशिष्ट स्वर! सोणी-महिवाल के दर्दीले गीत! टप्पा!

नाच रही हैं पञ्जाबी युवतियाँ, पञ्जाब की ग्रामीण भूषायें। सौन्दर्य और सजावट की जगमगाहट विभोर कर रही है दर्शकों को।

ढोलक पर खटखट···स्त्रियों का सम्मिलित स्वर!

"छोटा घड़ा चक लच्छिए···तरे लक नूँ जरब न आवे···होय···छोटा घड़ा"—थपोड़ियों से भी एक अजीब संगीत निकल रहा है।

नृत्य और गीत के इस कार्यक्रम से अतिथियों की थकावट दूर हो जाती है।

एक चित्र नर्तक नर्त्तकियों के साथ उतरवाकर सम्मानित अतिथि विश्राम के लिये चले जाते हैं।

स्पेशल ट्रेन अम्बाला की ओर भाग रही है।

यह अम्बाला है। अम्बाला स्टेशन का एक प्लेटफार्म विशेष रूप से सजाया गया है। अभी सबेरा नहीं हुआ है। फिर भी पच्चीसों बसों से आसपास के हजारों लोग अम्बाला स्टेशन से लेकर अम्बाला हवाई अड्डे के रास्ते पर खड़े हो गये हैं। स्कूल और कालेजों के हजारों छात्र, छात्राएँ, रङ्गबिरङ्गी पोशाकों में सड़कके दोनों ओर आगे खड़े हैं। उनके पीछे नागरिक

हैं। छात्र-समूह लाल और हरे झण्डे लिये हुये हैं। सारा मार्ग खूब सजाया गया है।

अभी सूरज नहीं निकला।

आ गयी स्पेशल ट्रेन। अम्बाला। गाड़ी रुकी। सम्मानित अतिथि उतरे। एक रूसी प्लेटफार्म पर अखबार विक्रेता से कहता है···"राम राम!" पत्र विक्रेता दङ्ग। एकदम भारतीय अभिनन्दन। तभी गगनभेदी नारे, स्वागत, अम्बाला डिवीजन के कमिश्नर श्री कैहलोन मार्शल का स्वागत करते हैं। श्रीक्रुश्चेव दूसरे रास्ते से बाहर आते हैं। उनका स्वागत डिप्टी कमिश्नर श्री आर० एन० चोपड़ा कर रहे हैं।

यह हैं विधान सभा के एक सदस्य हाथ मिलाने पर श्रीक्रुश्चेव से कहते है—"मैं कम्युनिस्ट हूँ।"

"आप किसी भी राजनैतिक विचारधारा के हों, इससे मुझे मतलब नहीं। आप भारतीय हैं, यही मेरे लिये प्रसन्नता की बात है!···

सम्मानित अतिथियों की मोटरकार बेलपत्तों और झण्डियों से सुसज्जित है। अतिथि बैठते हैं। नारे लग रहे हैं। अपार भीड़ खड़ी है।

कारों के आगे हवाई सेना के ६ अग्रिम अधिकारी मोटर साइकिलों पर हैं।

जुलूस आगे बढ़ा। प्रातः कालीन सूर्य की सुनहली किरणें अतिथियों का स्वागत कर रही हैं। अहा! क्या मनोरम दृश्य है।

"मार्शल बुलगानिन, जिन्दाबाद!"

"श्रीक्रुश्चेव···जिन्दाबाद!"

मार्शल भूरा लंबा कोट पहिने हैं और क्रुश्चेव इसी रङ्ग के सूट में हैं। हैट हिलाकर जनाभिवादन का उत्तर दे रहे हैं।

सड़क के दोनों ओर पंक्तिबद्ध अनुशासित जनता खड़ी है। जुलूस बढ़ रहा है। ग्राण्डट्रंक रोड, माल रोड, क्लेंबर रोड पर खड़ी जनता को

सुबह की सर्दी की तनिक भी परवाह नहीं। नारे लग रहे हैं। उल्लास के पूरे वेग के साथ हर्षध्वनि हो रही है।

जुलूस हवाई अड्डे की ओर बढ़ रहा है।

यह रहा हवाई अड्डा। दो मील का रास्ता तय करने में बीस मिनिट लग गये।

"अम्बाला की जनता द्वारा किये सत्कार से हम प्रसन्न हैं।"

जहाज तैयार खड़ा है। रूसी नेता, विधान सभाइयों, सिविल अधि-कारियों, जन प्रतिनिधियों से हाथ मिला रहे हैं।

जहाज में बैठने से पहले एक बार फिर हैट हिलाते हैं।

६ बजकर ३५ मिनिट।

घर्र घर्र···रर रर···जहाज की पंखी घूमी। उड़ा जहाज!

विदा! भाखड़ा नङ्गल बाँध विदा। तुम भारत की जनता की समृद्धि में सहायता बनो!

जहाज और ऊपर उठ रहा है। हिमालय की ओर बढ़ रहा है। हिमालय, हिमाच्छित पर्वत···सफेद···चमकदार···सूर्य की किरणें पड़ रही हैं। चमक रहा है एकदम चाँदी सा। लगता है, चाँदी की परतें ही परतें बिछी हैं। याद आ रहा है दिनकर का गीत—"मेरे नगपति, मेरे विशाल···" भारत का यह प्रहरी···सचमुच सजग और विकट प्रहरी है।

यह है त्रिशूल!

अतिथियों को तलहटी का यह त्रिशूल दिखलाया जा रहा है।

मँडरा रहा है जहाज! दूर दूर तक चमकीली बर्फ···बर्फीली हवा··· कहीं कहीं सतरङ्गा प्रकाश···जैसे नीलपरी की सतरङ्गी साड़ी का आँचल फहरा रहा है। दूर दूर तक श्वेत धरती···

यान जा रहा है हरिद्वार और हलद्वानी के इलाके की ओर। यही है धवल गंगा। कलकल करती भागीरथी गंगा! उत्तरप्रदेश की पुण्य—

सलिला···यही है हरिद्वार···भागीरथ भारत का पहिला इञ्जीनियर था····
यही हैं गंगा माता····अहा ! कैसी धवल धारा।

अब यान इज्जतनगर हवाई अड्डे की ओर मुड़ रहा है। घड़ी में सुबह के ८ बज रहे हैं।

भारत और रूस के झण्डे लहराता हुआ हवाई जहाज, हवाई अड्डे पर उतर रहा है। जनता की हर्षध्वनि से वातावरण गूँज रहा है। नेताओं के दर्शनों के लिये जनता आतुर हो उठी है। घेरा न टूट जाय इसके लिये आतुर जनता को सशस्त्र पुलिस पीछे ढकेल रही है। सोवियत नेता विमान से उतर रहे हैं। मा० सम्पूर्णानन्द आगे बढ़े हैं। स्वागत ! अतिथियों को माला पहिना रहे हैं। अतिथियों को अपने साथियों का परिचय दे रहे हैं। यह हैं उपमंत्री श्री राममूर्ति। आप चीफ सेक्रेटरी श्री आदित्य···आप जी० ओ० सी०, यह हैं आई० जी० पुलिस··· आदि ·· आइये !

हवाई अड्डे पर ही एक मण्डप विशेष रूप से बनाया गया है। मण्डप खूब सजा हुआ है। अतिथि जैसे ही मण्डप में प्रवेश करते हैं, केसरिया साड़ियाँ पहिने हुये ६० महिलाएँ एक साथ शंख ध्वनि करती हैं—धुत्त धुत्तू धुत्तू धू धू तू तू धुत्तू धुत्तू···

अब अतिथियों को माला पहिनायी जा रही हैं। नगरपालिका और जिला बोर्ड के अध्यक्ष माला पहिनाते हैं। मान-पत्र दे रहे हैं। मान-पत्र पढ़ने का समय नहीं है। कार्यक्रम अत्यन्त संक्षिप्त है।

इस समारोह के उपरान्त मार्शल और उनके साथी खुली मोटर पर राजकीय खेती फार्म की ओर रवाना हो रहे हैं। पचास मील लम्बा मार्ग तय करना है। और पचास मील लंबे इस मार्ग पर लाखों जनता इकट्ठी है। स्थान स्थान पर सजावट, तोरण द्वार, झण्डियाँ, जनता की भीड़, स्वागत द्वार हैं। हिन्दी और रूसी दोनों भाषाओं में अंकित नारे स्वागत द्वारों पर झूल रहे हैं।

"द्वरो पोजालोवात" (स्वागतम्)

"दाज्दा वस्तुतिर द्रजबामेजद नौरोदामी इन्दोई इस ससर" (भारत और रूसी जनता की मैत्री अमर रहे)

"प्रीब्येत गोसपोदीनू बुलगानिनू गोसपोदीनू क्रु श्चेवनू" (श्री बुलगानिन और श्रीक्रु श्चेव को शुभ कामनाएँ)

जुलूस आगे बढ़ रहा है। कतार की कतार कारें। पुष्प वर्षा। नारे, अपार जनसमूह टूटा पड़ रहा है। देहली के बाद यह दूसरा भव्य स्वागत हो रहा है। स्थान स्थान पर तोरण द्वार, लोगों के ठट के ठट। घरों, मकानों, छतों से फूलों की वर्षा। हिन्दी रूसी भाई भाई! नारा क्रु श्चेव भी गुनगुनाते चल रहे हैं।

नेता चले जा रहे हैं। स्वागत करती जा रही है, जनता। सोवियत देश के महान नेताओ, सुनो भारतीय जनता की पुकार। उद्जन बमों का विस्फोट, परीक्षण बन्द कर दो। तुम्हारे स्वागत में खड़ी यह माताएँ, यह नन्हें नन्हें दुधमुँहे बच्चे तुमसे भीख माँग रहे हैं। मानव के कल्याण के लिये ऐसे घातक अस्त्रों को रोक दो।

अब पुनः कारों का काफिला तेजी से बरेली नैनीताल राजपथ पर भागता जा रहा है। सूनी सड़क पर आज जितना जमावड़ा इससे पहले कभी न था। यह गोकुलनगर! यहाँ लोग टूटे पड़ रहे हैं। तोरण द्वार से पुष्प वर्षा होती है। नारों से वनप्रान्त गूँज उठता है। काफिला रुकता नहीं। यह है किच्छा! यहाँ भी अपार भीड़ है। नैनीताल बरेली इस पथ पर दो दर्जन तोरण द्वार पार कर नेतागण निर्दिष्ट स्थान की ओर बढ़े चले जा रहे हैं।

साथ हैं इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस, साथ हैं श्री महेशेन्द्र शंकर माथुर, और आयुक्त श्री आर० एन० डे०।

जिला बोर्ड अध्यक्ष पं० दरबारीलाल शर्मा भी साथ हैं।

यह है बहेरी ग्राम!

"ओराऊँ धुर' ओराऊँ धुर' ''हाथी स्वागत कर रहे हैं। दो दर्जन हाथी पंक्तिबद्ध होकर सूँड़ उठाकर अभिवादन कर रहे हैं।

रुक गयी कार। हाथी बढ़ा। अपनी सूँड़ से उसने दोनों अतिथियों को मालाएँ पहिनायी हैं। ऐसा स्वागत पाकर अतिथि कितने प्रसन्न हैं!

बड़ा जुलूस। सड़क के दोनों ओर ग्रामीणों के झुण्ड खड़े हैं। स्वागत होता जा रहा है। कभी की शान्त, खामोश पड़ी रहने वाली इस सड़क पर आज कितना मानव समूह एकत्रित है।

रुद्रपुर'''तराई भवन'''जहाँ १९४७ में घुसना सुगम न था। हिंसक सिंह, बाघ, तेंदुओं का राज्य था। जहाँ की घास १२ से २० फुट ऊँची, सघन वृक्षावलियाँ, जहाँ की धरती सूर्य के दर्शन न कर पाती थी आज विस्थापित बस गये हैं। खेती होती है। १६००० एकड़ के राजकीय फार्म का प्रशासनिक कार्यालय तराई भवन में है।

खूब सजा हुआ है। सहस्त्रों कुमाँऊ के और आसपास के ग्रामीण एकत्र हैं। इसका ही उद्घाटन है। आ गये मार्शल। हर्षध्वनि, जयजयकार। मार्शल बुलगानिन भवन के आर-पार लगे रेशमी फीते को सोने की कैंची से काटते हैं। २० तोले सोने की यह कैंची लगभग २००० रुपये की है। लखनऊ के चतुर कारीगरों ने इसे बनाया है। इसके मकराकृत फलों का चित्र प्रसिद्ध कलाकार श्री असितकुमार हलधर ने बनाया है।

उद्घाटन के उपरान्त यह कैंची मार्शल को भेंट कर दी जाती है। उत्तरप्रदेशीय सरकार की ओर से श्री सम्पूर्णानन्द, हाथी दाँत के दो लैम्प, सिगरेट केस, पुस्तकें रखने के दो रैक, दो छड़ियाँ तथा जिन्दा बाघ का बच्चा भेंट करते हैं। मार्शल, सम्पूर्णानंद जी को एक कैमरा और एक गुलूबन्द भेंट करते हैं।

"इसे दूध पिलाइये!"—एक पत्रकार मार्शल से कहता है। बाघ का बच्चा शीशी से दूध पी रहा है।

मार्शल बाघ के बच्चे को पुचकारने बढ़ते हैं, पर तब तक रक्षा

गार्ड कूद पड़ता है आगे—"नहीं, नहीं !"—और मार्शल को पीछे हट जाना पड़ता है।

यह देखिये, एक पेंसिल एक अमरीकी संवाददाता को दिखलाते हुये इशारा कर श्री क्रुश्चेव कहते हैं—"यह पेंसिल आपके एक साथी ने मास्को में भेंट की थी। मैं इस पेंसिल को रूस और अमरीकी जनता की मैत्री के प्रतीक स्वरूप रखे हुए हूँ।"

अब उक्त संवाददाता के अनुरोध पर श्री क्रुश्चेव यह पेंसिल अपने हाथ में लेकर एक फोटो खिंचवा रहे हैं।

यह राजकीय कृषि फार्म है। यह है कुक्कटशाला। दोनों रूसी नेता मुर्गी के नन्हें नन्हें बच्चे अपने हाथों पर बैठा लेते हैं।

क्लिक् क्लिच खटाखट ! फोटोग्राफर दनादन फोटो ले रहे हैं।

श्री क्रुश्चेव हँस रहे हैं। कहते हैं—"लो, अब मैं एक तगड़े मुरगे को अपने हाथ में लेकर फोटो खिंचवाऊँगा ! खींचिये !"

क्लिक् क्लिक्···घिर घिर घिर घिर····मूवी कैमरा।

"पर श्रीमान आप लोग यह न लिख भेजें कि बोलशेविक भारतीय मुर्गियाँ मारे डाल रहे हैं।"

यह गाय भैंसों के बाँधने का स्थान है। एक गाय को श्रीक्रुश्चेव पुचकारते हैं। वह पीछे हटकर रस्सी को तोड़कर भागने के लिये उछल कूद करती है।

"शायद डरती है, मुझसे !"—क्रुश्चेव कहते हैं।

"यह नहीं डरेगा, आइये।" एक बछड़ा सामने आता है, पर वह भी श्रीक्रुश्चेव को देखकर भड़कता है। बड़ी हँसी होती है।

राजकीय कृषि फार्म का निरीक्षण कर अतिथियों का दल खुली मोटर कारों में रवाना हो रहा है।

माननीय सम्पूर्णानन्द दोनों अतिथियों के बीच बैठे हैं। बातें हो रही

हैं खेती, चिड़ियों, और किस्से कहानियों की। दुभाषिये मदद कर रहे हैं। (सुविधा के लिये) सम्पूर्णानन्द अंग्रेजी बोल रहे हैं।

"यह कौन चिड़िया है?"

"सोन!"

"और यह?"—आकाश में उड़ती चिड़ियों के बारे में सोवियत नेता पूछते हैं।

"नहीं मालूम!"—सम्पूर्णानन्द कहते हैं।

यह कालाढूङ्गी जङ्गल का मनोरम दृश्य···धूप छाँव का रास्ता···तोते उड़ रहे हैं···हरे हरे···गुलाबी महावरी, लाल चोंचें!

"यह क्या है?"

"तोते···"

"बड़े सुन्दर हैं!"

"हम आपके लिये कुछ तोते दिल्ली भेज देंगे!"

यह हाथी खड़े हैं। काफिला रुकता है। मा० सम्पूर्णानन्दजी अतिथियों के साथ हाथी पर बैठते हैं। हाथी की सवारी। जङ्गल में घूमते हैं।

"हम जिन्दगी में एक ख्वाब देखा करते थे कि हाथी पर चढ़े हैं, आज यह सपना पूरा हुआ! कोई बीस साल पहिले ऊँट पर चढ़े थे। यह कुछ-कुछ वैसा ही है!"

हाथियों के समूह से विदा लेकर अब काफिला वापिस लौट रहा है। कारें भाग रही हैं, हवाई अड्डे की ओर। हवाई अड्डे पर फिर भीड़ का प्रबल वेग उमड़ आया है। विमान खड़ा है। अब नेतागण विदा ले रहे हैं।

"हमें भूल न जाइयेगा।"—मुख्य मंत्री कहते हैं।

"आपने जितना सत्कार किया है, इससे अच्छा आपका हम अपने देश में न कर पाते!"—ख्रुश्चेव कह रहे हैं।

तो विदा उत्तरप्रदेश! विदा प्यारे साथियो! बुलगानिन अपना हैट

हिला-हिलाकर जनता का अभिवादन-स्वीकार कर रहे हैं, तो श्रीक्रुश्चेव झुक-झुककर नमस्कार कर रहे हैं। भारतीय ढंग से।

बड़ी भाग-दौड़, भीड़-भाड़। घड़ी में पौने एक बजा है। घर्र घर्र···जहाज उड़ गया। अतिथि विदा। मा० सम्पूर्णानन्दजी वापस लौट रहे हैं। अचानक रुक जाना पड़ता है। बेतार के तार से यह कैसा संदेश?

"हमारे साथ के दो रूसी पत्रकार गायब हैं? वहीं छूट गये!"

हलचल मच जाती है। पुलिस अधिकारियों की मोटरें चारों ओर दौड़ रही हैं। बरेली के पुलिस सुपरिंटेंडेंट स्वयं दौड़ रहे हैं।

यह रहे ४५ मील दूर माला फार्म में। दल के साथ छूट गये थे ये लोग। आइये। इन्हें लेकर मोटर भाग रही है और वे विशेष वायुयान द्वारा बम्बई भेजे जा रहे हैं।

यह बम्बई है। भारत की महानगरी। कल तक जहाँ पुलिस और जनसमूह लड़ रहे थे। बसों ट्रामों पर हमला किया जा रहा था, आज वहीं पूर्णशान्ति है। एकदम शान्ति! सारी नगरी सजावट कर रही है। सड़कों पर बिखरे ईंट पत्थर हटाये जा रहे हैं। रोशनी के लिये दीपावली जैसी व्यवस्थाएँ की जा रही हैं। बड़ी-बड़ी इमारतों पर रूसी भारतीय झण्डे फहरा रहे हैं। स्थान-स्थान पर तोरण द्वार खड़े किये जा रहे हैं। कल तक की अशान्त महानगरी अपने प्रिय नेताओं का स्वागत करने के लिये महोल्लास से भर गई है।

शान्ताक्रुज हवाई अड्डे पर एक विशाल मञ्च कलात्मक ढंग से बनाया गया है। सरदार वल्लभभाई पटेल स्टेडियम भी खूब सजाया गया है। रंग-

तिरंगी पताकाएँ, रूस और भारत की झण्डियाँ...महानगरी बम्बई में सर्वत्र स्वागत की तैयारियाँ। लोगों ने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि जितना स्वागत रूस में श्री नेहरू का हुआ, उससे कहीं अधिक हम इन नेताओं का करेंगे।

आइये हवाई अड्डे पर। गजब! कितनी विशाल भीड़। इस भीड़ की तुलना बम्बई के समुद्र से ही की जा सकती है! लाखों व्यक्तियों की भीड़! पुलिस, मिलिस्ट्री, स्वयंसेवक पीछे पड़ गये हैं। उबलते हुए इस मानवसागर को कौन रोक सकता है!

समय भाग रहा है। नारों से आकाश गूँज रहा है।

४ बजकर ३१ मिनिट। वह चमका वायुयान! लाखों आँखें उस वायुयान की ओर देख रही हैं। उतर रहा है जहाज। इसी में हैं हमारे अतिथि! जहाज जमीन छू रहा है! रुका! सबसे पहिले बाहर आ रहे हैं, सलेटी रंग का सूट पहिने मार्शल बुलगानिन! उनके पीछे हैं श्री क्रुश्चेव, और अब उनके साथी।

लाखों व्यक्तियों की हर्षध्वनि! शायद नेहरू का भी अपने देश में इतना स्वागत कभी न किया गया हो!

आगे बढ़े बम्बई के राज्यपाल श्रीहरेकृष्ण मेहताब, श्रीमुरार जी देसाई, बम्बई मेयर श्री एन० सी० पुपलाका! लाखों व्यक्तियों का गगन-भेदी जयजयकार। राज्यपाल अतिथियों से हाथ मिला रहे हैं। अब राज्य पाल मुख्यमन्त्री, मेयर तथा उपस्थित मन्त्रियों और अफसरों का परिचय करा रहे हैं। परिचय का एक लम्बा और ऊबा देनेवाला सिलसिला चल रहा है। वहाँ चलिये। रूसी नेताओं को इधर-उधर जाते देख जनता बराबर मैत्री और शान्ति के नारे लगा रही है।

"जनमनगण..." राष्ट्रीय धुन बज रही है।

रूस के राष्ट्रीय गीत की धुन बज रही है।

नारे उठ रहे हैं। दसों दिशाएँ गूँज रही हैं। रूसी नेता नौसैनिक

गार्ड आफ आनर का निरीक्षण कर रहे हैं। निरीक्षण समाप्त ! स्वागत समारोह में बच्चों को प्रमुख स्थान दिया गया है। कितना सुन्दर बच्चा ! मार्शल बच्चे को उठाकर उसका चुम्बन लेते हैं। हुर्रा......जोर की हर्षध्वनि से गगन काँप उठता है। मार्शल ! इन्हीं बच्चों का ख्याल रखो ! यही बच्चे दामन फैलाकर चीख रहे हैं, विश्व में शान्ति हो। हमें शान्ति चाहिये। मार्शल ! ये बच्चे तुम्हारे ऐसे ही चुम्बन चाहते हैं, बम के गोले, मशीनगनों की गोलियाँ, नहीं !

मणिपुरी वेश में मेयर की दो छोटी छोटी बच्चियाँ। मणिपुरीवेश ! जैसे पश्चिमी-भारत, पूर्व-भारत में अपने अतिथि का स्वागत करने आया है।

स्वागत है मार्शल ! स्वागत है क्रुश्चेव ! बच्चियाँ सच्चे मोतियों की बरसा करती हैं। पुष्प मालाएँ पहिनाकर फूलों के गुच्छे भेंट कर रही हैं।

मंच की ओर बढ़ रहे हैं नेता ! आये मञ्च पर ! बजे बिगुल···बड़े बड़े बिगुल···भोंपू भोपू भोंपू भोप्पप्प भू भोप्प···भोप्पा···बजी शहनाइयाँ··· धीती धीती धीतिती धीतिती धी···बजा चौघड़ा संगीत...धत्तर धत्तर धत धा धत्तर धा···पुष्प वर्षा···लाख लाख रूस भारत के झण्डे लहराये··· सफेद कबूतर उड़े···घनघोर हर्षध्वनि···

मञ्च पर मुरारजी। बोल रहे हैं—"आप लोगों ने इसके पूर्व भारत की राजधानी दिल्ली तथा अन्य कतिपय नगरों को देखा है और आज सर्वसमन्वयी विश्व नगरी बम्बई में पदार्पण किया है। आप लोगों का स्वागत करने में हमें हार्दिक और अतीव प्रसन्नता हो रही है।

नेहरूजी की रूस यात्रा से रूस और भारत की मैत्री दृढ़ हुई। अब आप लोगों की भारत-यात्रा से दोनों देशों की मैत्री दृढ़तर होगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने हम लोगों को संसार के अन्य देशों के साथ शांतिपूर्वक रहने की शिक्षा दी है। अब हम पंचशील के महान् सिद्धान्त से निर्दिष्ट और परिचालित हैं। पञ्चशील सिद्धान्त को दोनों ही

देशों के निवासियों ने मान्य किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम लोगों के प्रयत्न से संसार में शांति और सद्भाव स्थापित होगा तथा मानवमात्र का कल्याण चरितार्थ होगा। हम आपका अपने नगर में हार्दिक स्वागत करते हैं, जयहिन्द !"

गगनभेदी तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मार्शल रूसी में कह रहे हैं—"प्रिय मित्रगण ! मैं आप लोगों के इस हार्दिक और मैत्रीपूर्ण स्वागत के लिए अत्यधिक हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। श्री निकिता क्रूश्चेव तथा मेरे अन्य सभी मित्र, जो मेरे साथ भारत की यात्रा के लिए आये हैं आप लोगों से तथा बम्बई के सभी नागरिकों से मिलकर प्रसन्न हुए।

हम आप इस नगर के इतिहास को भलीभाँति जानते हैं। हम लोग इस महान नगर में यहाँ के नागरिकों से व्यक्तिगत रूप से मिलने के हेतु तथा आपकी आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सफलताओं को अपनी आँखों देखने के हेतु आये हैं।

मेरे प्रिय मित्रो ! मैं सोवियट रूस की जनता की ओर से आप लोगों हार्दिक और मैत्रीपूर्ण स्वागत के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।"

१२ फुट ऊँचे बने कलात्मक मञ्च पर दिया गया श्री बुलगानिन यह भाषण दो सौ लाउडस्पीकरों से प्रसारित हो रहा है। मञ्च अत्यन्त ही कलापूर्ण ढङ्ग से सजाया गया है। मार्शल और क्रुश्चेव दोनों ही तिन कों के बने सुन्दर हैटस् पहिने हैं। मञ्च से उतर रहे हैं। मोटर पर बैठते हैं। मोटर के साथ सम्मानित अतिथि चल रहे हैं। मोटर साइकिलों पर आगे-आगे पुलिस और सेना के अधिकारी। हवाई अड्डे से लेकर सरदार वल्लभभाई स्टेडियम तक ११ मील लम्बे इस मार्ग में कोई १० लाख से अधिक जनता की भीड़। पताकाएँ, नारे, हर्षध्वनि, पुष्प-वर्षा, तोरण द्वार...सर्वत्र स्वागत...अपार भीड़ के कारण मोटरों का काफिला धीरे धीरे चल रहा है। जयजयकार हो रहा है।

यह क्या ? एक बालिका ने गाँधी टोपियाँ नेताओं को दी हैं। हैट उतारकर नेताओं ने गाँधी टोपियाँ पहन लीं। तुमुल हर्षध्वनि। रूस के महान नेताओं के सिर पर गाँधी टोपियाँ ... कानों के परदे फाड़ देने वाली हर्षध्वनि हो रही है। गाँधी टोपी पहिने रूसी नेता आगे बढ़ रहे हैं। कदम कदम पर कानों के परदे चीर देने वाला शोर ... तालियों की गगन भेदी गड़गड़ाहट ...

१२ मील लम्बे मार्ग पर तने तोरण द्वारों को पार करते हुये, अपार जनसमूह का अभिवादन स्वीकार करते हुये निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार १५ मिनिट लेट रूसी नेता स्टेडियम में आये हैं। इस समय शाम के ६॥ बज रहे हैं। शक्तिशाली आर्क लैम्पों से अत्यधिक सुन्दर ढङ्ग से सजा मञ्च जगमगा रहा है। मञ्च पर म्युनिसिपल चिह्न तथा फूलों से भारतीय और रूसी झण्डे बहुत ही कलापूर्ण ढङ्ग से बनाये गये हैं। मञ्च पर आते ही हर्षध्वनि होती है। रूसी नेताओं को गांधी टोपी पहने देख जनता गला फाड़-फाड़कर स्वागत कर रही है। इस विशाल स्टेडियम में १० लाख से अधिक जनसमूह एकत्रित है। ५० हजार से अधिक जनता बाहर खड़ी है। हजारों बल्ब जगमगा रहे हैं। भारी बम्बई जगमगा रही है। पचासों स्पीकरों पर स्वागत सभा प्रारम्भ होने जा रही है। बज रहा है भारत का राष्ट्र गीत, बज रहा है सोवियत रूस का राष्ट्र गीत।

अब बम्बई के मेयर श्री पुपला का अभिनन्दन कर रहे हैं, रूस के इन दो महान सुपुत्रों का। मान पत्र पढ़ रहे हैं। बम्बई कारपोरेशन के इतिहास में पहिली बार हाथ बने सिल्क पर हिन्दी में छपे मानपत्र रूसी नेताओं को चन्दन की मंजूषाओं में उपहार स्वरूप दिये जा रहे हैं।

तुमुल करतल ध्वनि के बीच मार्शल खड़े हुये हैं। सिर पर गाँधी टोपी, गले में फूलों की मालाएँ। माइक के पास आये, बोल रहे हैं। दुभाषिया भाषण का अनुवाद अंग्रेजी में करने के लिये एकदम तैयार। बोल रहे हैं, मार्शल—"मुख्य मन्त्री महोदय, साथियो, आप सबने जिस

उल्लास के साथ मेरा स्वागत किया है, वह निस्सन्देह अविस्मरणीय है। भारत अब स्वतन्त्र हो गया है और भारतवासियों की आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने की इच्छा के प्रति रूस की पूरी सहानुभूति है और भारत के आर्थिक नवनिर्माण में वह सहयोग देने को तैयार है।

भारत से आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाने को हम लोग इच्छुक हैं और इसके लिए हम एक दूसरे को अपने वैज्ञानिक और प्राविधिक ज्ञान से अवगत कराना चाहते हैं। इससे दोनों देशों का हित होगा।

हमारे महान नेता लेनिन ने विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले राष्ट्रों के शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व का जो सिद्धान्त स्थिर किया था, रूस आज उसी का अनुगमन कर रहा है। रूस की परराष्ट्रीयनीति अन्तरराष्ट्रीय तनातनी कम करने, राष्ट्रों में आपसी विश्वास बढ़ाने, अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं को आपसी वार्ता से हल करने तथा स्थायी तौर से शान्ति की स्थापना के हेतु सभी के लिए सुरक्षा की व्यवस्था करने के पक्ष में है।

रूसी जनता को इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि भारतीय जनता शान्ति स्थापनार्थ उन देशों के साथ सहयोग कर रही है, जो शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व में विश्वास करते हैं।

भारत ने ही सबसे पहले चीन के साथ राष्ट्रों के शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए पञ्चशील के सिद्धान्तों की घोषणा की। विश्वशान्ति के लिए नेहरूजी ने जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ। भारत के प्रधान मन्त्री यह अच्छी तरह जानते हैं कि राष्ट्रों की रक्षा का एकमात्र उपाय सह-अस्तित्व ही रह गया है अन्यथा उनका विनाश निश्चित है।

परमाणु शस्त्रों पर रोक लगाने, तृतीय विश्वयुद्ध रोकने तथा अन्तर-राष्ट्रीय झगड़ों को आपसी बातचीत के जरिये हल करने के लिए भारत सरकार जो कार्य कर रही है उसके लिए रूस की ओर से मैं भारत के प्रति हार्दिक सम्मान व्यक्त करता हूँ। रूस की सरकार तथा वहाँ की जनता भारत के उक्त कार्यों अच्छी तरह परिचित है।

चीन भारत और रूस के संयुक्त प्रयत्नों से ही कोरिया और हिन्दचीन में युद्ध रुक सका। राष्ट्र संघ में चीन को उसका उपयुक्त स्थान दिलाने के लिए रूस और भारत आज भी प्रयत्नशील हैं। भारत सरकार फारमोसा की समस्या भी शान्तिपूर्ण ढङ्ग से हल करना चाहती है।

बान्दुङ्ग में हुए एशियाई अफ्रीकी सम्मेलन के आयोजकों में भारत भी था। विश्व में शान्ति की स्थापना को बल देने और एशियाई अफ्रीकी जनता के राष्ट्रीय अधिकारों और हितों की रक्षा में इस सम्मेलन ने बहुत महत्वपूर्ण योग दिया है।

भारत आज एशिया में, जहाँ उपनिवेशवाद तेजी से समाप्त होता जा रहा है, बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए भारत जो संघर्ष कर रहा है, उससे हम लोगों की पूरी सहानुभूति है और भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण में योग देने को हम लोग तैयार हैं।

रूस प्राविधिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सभी राष्ट्रों के साथ उनकी सामाजिक व्यवस्था का खयाल किये बिना ही, घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है।

विश्वशान्ति के लिए संघर्ष करने वाले देशों में भारत आज अग्रिम पंक्ति में है। इसके लिए रूसी जनता भारत का हार्दिक अभिनन्दन करती है।

हम रूसियों को अभी भारत से बहुत कुछ सीखना है। भारतीय विज्ञान बहुत प्राचीन है और इसने बहुत से प्रमुख वैज्ञानिकों को उत्पन्न किया है। यदि भारत के प्रमुख वैज्ञानिक रूस आयें, तो हमें उनका स्वागत करने में प्रसन्नता होगी।

अभी हाल में जेनेवा में हुए परमाणु वैज्ञानिक सम्मेलन में भारत के डाक्टर भाभा को जो अध्यक्ष बनाया गया था, उस पर रूस को भी गर्व है। यहाँ पर ही मैं फिल्म उद्योग की भी प्रशंसा करता हूँ कि रूसियों को कुछ भारतीय चित्र बहुत पसन्द आये हैं।

बम्बई को एक महान औद्योगिक नगर तथा आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में हम लोग अच्छी तरह जानते हैं। स्वातन्त्र्य संग्राम में महत्वपूर्ण योग देने के लिए बधाई देता हूँ—हिन्दी रूसी मैत्री जिन्दाबाद !"

मार्शल के पश्चात् श्रीक्रुश्चेव कहते हैं:—"मित्रो, इस अवसर पर मुझे घोषित करते हुये परम प्रसन्नता हो रही है यदि दुनिया के किसी भी व्यक्ति से पूछा जाय कि वह शांति चाहता है या युद्ध तो वह शांति के पक्ष में ही अपना मत देगा। जो लोग शान्ति के विरोधी हैं वे भी खुले आम यह कहने का साहस नहीं कर सकते कि वे युद्ध के पक्ष में हैं। कुछ लोग शान्ति का यह मतलब लगाते हैं कि उसमें एक राष्ट्र को दूसरे के अधीन होना चाहिये। यही कारण है कि हाल में ही जेनेवा में हुआ चार बड़े राष्ट्रों के परराष्ट्रमन्त्रियों का सम्मेलन सफल न हो सका।

हम लोग शान्ति का दूसरा अर्थ लगाते हैं। हम पूरे विश्व में शान्ति चाहते हैं। हम चाहते हैं कि किसी राष्ट्र को किसी दूसरे राष्ट्र के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न हो। हम लोग इन्हीं सिद्धान्तों के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जिन्हें भारत और चीन ने संयुक्त रूप से पञ्चशील के नाम से घोषित किया है।

मुझे मेरे मित्र कामरेड बुल्गानिन को तथा मेरे साथ आये हमारे सभी मित्रों को विश्वास है कि अन्ततः शान्ति और सत्य की ही विजय होगी, किंतु इसके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। हम अपने शान्ति-प्रयत्नों में कोई ढिलाई नहीं कर सकते।

विश्व में स्थायी रूप से शान्ति स्थापित करने के कार्य में भारत और रूस परस्पर सहयोगी हैं। हम लोग प्रसन्नतापूर्वक विश्व में उपनिवेशवाद को अन्तिम सासें गिनते हुए देख रहे हैं। हमने भारत के नगरों और गाँवों में देखा है कि स्वतन्त्र भारत के नवनिर्माण से यहाँ की जनता खुशी

से फूली नहीं समा रही है। यहाँ के लोग अपने भाग्य के निर्माता स्वयं होना चाहते हैं।

रूस की जनता आप लोगों की सफलता की कामना करती है! मुझे विश्वास है कि भारत और रूस इन दो महान् देशों की मैत्री अटूट होगी।

भारत और रूस में बहुत सी बातों में समानता है। शान्ति सम्बन्धी सभी मामलों में उनमें मतैक्य है। हम लोग सभी उपायों से दोनों देशों की की यह मैत्री और दृढ़ करना चाहते हैं।

"हिन्दी-रूसी भाई भाई!"

लाखों तालियों की गड़गड़ाहट से आसमान गूँजता है, अब बम्बई नगर निगम की ओर से उपहार दिये जा रहे हैं। प्रबल भीड़ टूट पड़ने को है। सभा मार्शल को देखना चाहते हैं। मुरारजी समझ आते हैं। सारी व्यवस्था गड़बड़ न हो जाय। इस उद्देश्य से खुली जीप में नेताओं को लेकर क्रीड़ांगण में घूमते हैं। जय-जयकार......नारे... हर्षध्वनि!

समारोह समाप्त!

मोटरों का काफिला फिर मार्ग पर बढ़ रहा है। मार्ग के दोनों ओर विपुल जनता खड़ी है। बड़ी बड़ी अट्टालिकाएँ जगमगा रही हैं। प्रकाश तो इस समय ऐसा है कि जैसे न्यूयार्क शहर की रात हो। मोटरों का काफिला राज भवन की ओर जा रहा है। स्टेडियम से भवन तक के लम्बे मार्ग पर यही दृश्य है। पताकाएँ, तोरणद्वार, नारे, उल्लास, पुष्प वर्षा, सड़क के दोनों ओर की अट्टालिकाओं पर महिलाओं के झुण्ड....वहाँ से पुष्पवर्षा, नेता अभिवादन का उत्तर हाथ जोड़कर देते जा रहे हैं।

राज भवन जगमगा रहा है। अतिथि प्रवेश कर रहे हैं। समुद्र की की ठंडी हवा का झोंका अतिथियों का अभिषेक करता है।

विशेष रूप से निर्मित थियेटर में रूसी अतिथि लोक-नृत्य मराठीनृत्यों

पवाड़े और लावनियाँ सुनते हैं। संक्षिप्त कार्यक्रम है। थोड़ी ही देर में समाप्त हो जाता है। नेता रात्रि विश्राम के लिये चले जाते हैं।

यह है बम्बई का ब्राबोन स्टेडियम! यहीं बड़े बड़े मैचों का आयोजन होता है। यह विशाल स्टेडियम क्रिकेट के मैचों के लिये प्रसिद्ध है, जहाँ अपार जनता इन खेलों को देखने के लिए एकत्रित होती है। आज निराला दृश्य है। ऐसा दृश्य शायद नेहरू के जन्मदिवस पर भी न रहा हो।

स्पेशल ट्रेनों में आये हजार-हजार बच्चे रंग-बिरंगी पोशाकों में विक्टोरिया टरमिनिस (बोरीबंदर) और चर्चगेट स्टेशन पर उतर कर ब्राबोन स्टेडियम की ओर बढ़े जा रहे हैं। लाल हरी झंडियाँ। छात्र-छात्राओं के समूह। नीली और सफेद पोशाकें।

स्टेडियम के उत्तर में १२ फुट ऊँचा मञ्च बना है। ३० फुट ऊँचे भवन की छत पर सैकड़ों लोग समारोह देखने के लिये चढ़ गये हैं।

देखते देखते कोई डेढ़ लाख लड़के-लड़कियों से सारा स्टेडियम तिल-तिल भर जाता है। जैसे बम्बई महानगरी के सारे बच्चे नेताओं के स्वागत में उमड़ आये हैं। बम्बई के इतिहास में बच्चों का इतना बड़ा आयोजन कभी नहीं हुआ। गुब्बारो, झण्डियों और रङ्गबिरङ्गी पोशाकों की अजीब छटा है। बच्चों का शोर, धिनधिनाहट···मञ्च के ही सामने कोई ५,००० लड़के ड्रिल के लिए एकदम तैयार, पंक्तिबद्ध। जाने कब से खड़े हैं।

राजभवन से चले आ रहे हैं अतिथि। मार्शल और क्रुश्चेव, तिनकों के हैट्स्, माथे पर तिलक, गले में फूलों की मालाएँ···राजभवन से स्टेडियम तक का ५ मील लंबा रास्ता जनसमूह से भरा है। स्वागत, सजावट, गगनभेदी जयजयकार! पुलिस अधिकारियों की भाग-दौड़। लगता है, बम्बई की जनता ने अपने इन अतिथियों को सिर माथे उठा लिया है।

स्टेडियम में प्रवेश कर रहे हैं अतिथि । आते ही शोर से मैदान भर जाता है। धक्कम धुक्की ! भीड़ का दबाव चारों ओर बढ़ता है। एक पर एक बच्चे चँपे जा रहे हैं। जैसे लाखों कबूतर के बच्चे एक झुण्ड में गूटरगूँ चूँ चूँ कर रहे हों, ऐसा दृश्य है । स्टेडियम के उत्तर-पश्चिमी प्रवेश द्वार पर बाहर ठठकी भीड़ भीतर प्रवेश पाने के लिये टूट पड़ती है। द्वार का एक फाटक भीड़ के भारी दबाव के कारण टूट पड़ता है। अरे ! गिर गया बच्चों पर ! दब गये लड़के। मर गये ! मर गये ! शोर ! हड़कम्प मचता है, पर तत्काल एन० सी० सी० के अधिकारी, पुलिस कप्तान दौड़ पड़ते हैं। भीड़ पर डण्डे। भीड़ हट जाती है। गिरा फाटक उठाया गया, तत्काल ! आधे दर्जन बच्चे उसके नीचे दबे हैं। तत्काल उठाया जाता है। खून ! लो ! मार्शल ! तुम्हारे स्वागत में खून से अभिषेक कर रहे हैं, बच्चे ! इन बच्चों के लिये शान्ति के कदम उठाओ। लड़कों को तुरन्त प्राथमिक उपचार के उपरान्त वहाँ से हटा दिया जाता है।

अतिथि मञ्च पर आ गये हैं।

हो ! हो !! हो !! हो !!! तुमुल करतल ध्वनि से स्वागत होता है ! बच्चों की अपार भीड़ हर्ष से गगनभेदी नारे लगा रही है। कुछ देर पहिले बच्चों को यह ट्रेनिंग दी गई थी कि जैसे ही अतिथि आवें, वैसे ही "जय रूस" की ध्वनि से उनका स्वागत किया जावे, पर आते ही "जय रूस" के स्थान पर "जय हिन्द" की ध्वनि हो रही है !

मञ्च पर अतिथियों के अतिरिक्त मुरारजी देसाई, पुपलाका, उच्चाधिकारी एवं शिक्षाविद् उपस्थित हैं।

अतिथि हैट्स् हिलाकर अभिवादन स्वीकार कर रहे हैं हुर्रा···हुर्रा··· लाखों झण्डियाँ हिल रही हैं। हजारों रंगबिरंगे गुब्बारे बच्चों ने छोड़े हैं। गैस के गुब्बारे, ऊपर उड़ रहे हैं, हजार-हजार गुब्बारों से आकाश भर गया है। रंगबिरंगे गुब्बारे। सूरज की रोशनी भी गुब्बारों सी रंगीन हो

गई है। अद्भुत आह्लादकारी दृश्य है! कुछ देर के लिये पूरा मैदान रंगीन प्रकाश से भर गया है! रंगबिरंगा प्रकाश।

फड़ फड़ फड़ फड़ फड़ !!!

पचीसों कबूतर! श्वेत कपोत! शान्ति के प्रतीक···पंख फहराये उड़ रहे हैं। बच्चों ने उड़ाये हैं। दो कबूतर अतिथियों के पास ही मड़रा रहे हैं। एक रूसी महिला का हाथ बढ़ता है। कबूतर पकड़ा जाते हैं। एक मार्शल को, एक क्रुश्चेव को दिया गया है। दोनों अपने हाथों पर उसे लेकर थपथपा रहे हैं और फिर उड़ा देते हैं।

जैसे समुद्र गरजता है, जैसे प्रलय के मेघ गरजते हैं, वैसे ही इस दृश्य को देखकर डेढ़ लाख बच्चों के कंठ हर्षध्वनि करते हैं।

अतिथियों के और सामने आते ही मजदूर कुलियों की पोशाकों में खड़े, टोकरी फावड़ा लिये, छात्र-छात्राओं का एक दल ढोलक पर झूम उठा है!

ढमक ढमक ढमक ढम्म! झूम रहे हैं कुली वेशधारी बालक बालिकाएँ··· और तभी सैकड़ों बंशियों की धुन पर नाच उठती हैं बालिकाएँ···बाँसुरियों की तान, झूम झूम कर नाचती हुयी लड़कियों की थपोड़ियों की आवाज··· और भी अनेक झुण्ड ढोलक की थापों पर नाच उठे हैं।

हँसी खुशी नाच के वातावरण से मुग्ध, खड़े हैं दर्शक।

ढमक ढमक ढम्म! नाच रहे हैं लड़के लड़कियाँ

बाँसुरियो की मधुर मधुर धुन पर झूम रही हैं लड़कियाँ! नृत्य और वाद्यों का अजीब समाँ।

यह झूमा, वह झूमा झुण्ड, वह देखिये गोल घेरे में झूमती नाचती सैकड़ों लड़कियाँ···थड़ थड़ थड़ थड़···ढिमक ढिमक ढम ढम ढम··· और बाँसुरियों की धुन····

अतिथि इतने आनन्द से भर गये हैं कि बार बार ताली बजा उठते हैं। हर्षध्वनि करते हैं।

यह हो रहा है मछुओं का नृत्य। मछुओं की पोशाक, जाल, बाँस लिये और मछेरियाँ सिर पर टोकरियाँ लिये···कैसे झूम झूम कर नाच रहे हैं, गा रहे, बच्चे। देखो रूस के भाग्य-विधाता···देश के ये बच्चे···हजारों बच्चे किस हँसी खुशी से तुम्हारे सम्मान में झूम रहे हैं। आशीर्वाद दो, इन बच्चों को! अभयदान दो इन्हें, इनकी यह हँसी खुशी सदा कायम रहे और जब जब तुम भारत आओ, तब तब ये बच्चे तुम्हारा ऐसा ही स्वागत सदा सदा करते रहें।

ड्रिल···५,००० बच्चों की, नन्हें नन्हें बच्चों की ड्रिल···नीली सफेद पोशाकें···

अब लेजिम प्रदर्शन!

झन···झम्मक झन···झन झन झमाक झम्म झमाक्।

दोनों नेता अपने गले में स्काउटों की तरह रूमाल बाँध लेते हैं। इस पर फिर बड़े जोर से हर्षध्वनि होती है।

यह है मुमताज···दस साल की एक छोटी सी लड़की···मंच पर माइक के सामने आती है। सब शान्त हैं। मुमताज बच्चों की ओर से दोनों नेताओं को माला पहिनाती है और अब माइक की ओर मुँह कर बोलती है। शाबास बच्ची! साहस है। एकदम बच्चों की सी भोली और तोतली आवाज में, टूटी फूटी हिन्दी में कह रही है:—"हम आपका यहाँ स्वागत करते हैं और आपसे प्रार्थना है कि आप हमारा शुभ कामनाओं का सनेस रूस के बच्चों, महान सोवियत रूस के बच्चों तक पहुँचा दें। श्रीमान, हमारे यहाँ सूर्य की किरणें प्रचुर मात्रा में हैं और आपका यहाँ हिम है! हम उपहार स्वरूप आपको सूरज की किरनें भेंट करते और आपसे बर्फ लेते, पर ऐसा नहीं हो सकता है। अतएव हम केवल अपनी शुभ कामनाएँ आपको भेंट करते हैं।"

मुमताज के स्वागत भाषण के पश्चात् श्रीक्रुश्चेव बोलने के लिये खड़े हुये हैं। उनके उठते ही नारा लगा—"हिन्दी रूसी भाई भाई···" डेढ़

लाख बच्चों के कंठों से निकला यह नारा गगन में गूँज उठता है। इतना शोर और हो-हल्ला बच्चे कर रहे हैं कि श्रीक्रुश्चेव का भाषण पास बैठे प्रेस-रिपोर्टरों तक को सुनायी नहीं पड़ रहा है। दुभाषिया अनुवादित कर रहा है, पर सुनायी नहीं पड़ता (भाषण जैसा सुना और समझ सका) "भारत के बच्चो···भविष्य तुम्हारा है···स्वतन्त्र भारत का निर्माण तुम्हें करना है···आर्थिक और राजनैतिक उन्नति तुम पर निर्भर है······मैं वायदा करता हूँ कि तुम्हारा सन्देश सोवियत रूस के बच्चों तक पहुँचा दूँगा···(भारी शोर गुल हो रहा है। बच्चों से भरे स्टेडियम में लगातार "हिन्दी रूसी भाई भाई" के नारे उठे रहे हैं। कभी इन कोने से, कभी उस कोने से। सुनागी नहीं पड़ता श्रीक्रुश्चेव क्या कह रहे हैं)···हिन्दी रूसी भाई भाई ···"

श्रीक्रुश्चेव का भाषण समाप्त हो गया है। तालियों की विकट गड़-गड़ाहट के बीच अतिथियो को सोफा सेट, ड्राइङ्ग रूम का सामान (जिसे बच्चों ने बनाया है) सीप के खिलौने तथा बच्चों की कुछ पेंटिंग्स् उपहार स्वरूप दी जा रही हैं।

समारोह समाप्त ! अतिथि चल पड़े । वह गये। मेरिन ड्राइव के सजे हुये रास्ते पर उनकी मोटर जा रही है। जनता स्वागत कर रही है और इधर स्टेडियम में झोले, किताबें, चप्पलें, छोटे छोटे जूते छूट गये हैं। इस विशाल समारोह में १ दर्जन से अधिक बच्चे बेहोश हुये हैं। ६ बच्चे तो ड्रिल करते समय ही गिर पड़े थे। अब तक की सूचना के अनुसार ४० बच्चे लापता हैं।

अतिथि राजभवन लौटे हैं। अब यहाँ से उनकी यात्रा आर्य दुग्ध क्षेत्र की ओर होगी, जो राजभवन से कोई २० मील दूर स्थित है। गोरेगाँव स्थित यह गौशाला, दुग्धशाला साढ़े तीन करोड़ रुपयों के व्यय से बनी है। ३५०० एकड़ भूमि में यह पशुशाला स्थापित हैं। यहाँ १५०० भैसे हैं।

रूस के दोनों यहाँ नेता मोटर पर उसी ओर चले जा रहे हैं। बी मील लम्बे इस मार्ग पर फिर वही उत्साहपूर्ण, उल्लासपूर्ण स्वागत। रहा है। पूरा मार्ग बन्दनवारों, तोरणद्वारों, झण्डियों से सजाया गया है जनता के ठट के ठट स्वागत के लिये खड़े हैं। कारों का काफिला गा गाँव की ओर भाग रहा है! अतिथियों के साथ मास्को स्थित भारतीय रा दूत के० पी० एस० मेनन, उद्योगमंत्री नित्यानंद कानूनगो, बम्बई मेयर पुपलाका, मुख्यमंत्री मुरारजी देसाई भी हैं।

कारें भाग रही हैं।

कालोनी का जैसे कायाकल्प हो गया है। सजावट और स्वच्छ सर्वत्र दृष्टिगत हो रही है। अतिथियों के पहुँचते ही आसपास के निवार हजारों की संख्या में स्वागत करते हैं। और देखिये उनका स्वागत कर र हैं दुग्धशाला के आयुक्त श्री डी० एन० खुरोडी!

श्री खुरोडी अतिथियों का स्वागत करने के उपरान्त अब उन्हें दुग्ध कालोनी दिखला रहे हैं। गाय भैंसों को और उनकी व्यवस्था को दोन नेता ध्यान से देख रहे हैं। विशेषतः श्री क्रुश्चेव बड़ी ही दिलचस्पी सब देख रहे हैं।

"हमारे यहाँ गायें बहुत ही कम दूध देती हैं! आपके यहाँ त अधिक होता होगा?"

"हाँ, पर मवेशियों को पालने रखने का तरीका हमने आप लोग से ही सीखा है!—"श्री क्रुश्चेव कहते हैं—"भारत की संस्कृति औ सभ्यता रूस से कहीं अधिक प्राचीन है पर डेढ़ सौ बरसों तक ब्रिटिश शासन में पिसने के कारण डाँवाडोल हो गई है!"

निरीक्षण कर रहे हैं श्री क्रुश्चेव। पूछते हैं—"आप दिन में कितनी बार गायों को दुहते हैं?"

"दिन में दो बार!"—श्री खुरोडी का उत्तर है।

"प्रत्येक गाय औसत से कितना दूध देती है?"

"हमारे यहाँ भैंसें हैं, जो औसत से प्रतिवर्ष ४॥ हजार पौण्ड दूध देती हैं!"

"मुझे इन आँकड़ों पर सन्देह है!"

"हमारे आँकड़े एकदम ठीक और सही हैं।"

"ओह! आपके यहाँ ब्रिटिश पौण्ड का वजन चलता है ना! ठीक! लेकिन हमारे यहाँ ऐसा नहीं। मैंने गलत हिसाब लगाया था!"—क्रुश्चेव की इस बात पर सभी खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं! बात तो हँसी की है, पर साथ ही साथ भारतीयों पर यह कितना गहरा व्यंग्य है कि अभी भी यहाँ ब्रिटिश वजन चलता है!

अतिथि आगे बढ़ रहे हैं और यह है नारियल का वृक्ष। ७० फुट ऊँचा। उस पर से पुष्प-वर्षा हो रही है! अतिथि चौंक उठते हैं। पुष्प और यहाँ! कैसे आये? देखते हैं कि एक व्यक्ति वृक्ष से सरक रहा है। इतनी तेजी से नीचे आ गया कि उसकी जितनी तारीफ की जाय, कम है!

श्री बुलगानिन अपने पास बुलाते हैं उसे—"यदि मैं भी फुर्ती से चढ़ जाऊँ, तो आप क्या देंगे?"

"........."

दुग्धशाला का माली मेरिया दंग। इतना झेंप गया है वह कि क्या कहे!

"बोलो क्या दोगे? मैं अभी चढ़ता हूँ।"

"जी नहीं!"—मुरारजी बिगड़ते हैं—"मैं आपको इसकी इजाजत नहीं दे सकता!"

इस पर बड़ी हँसी हो रही है। मुरारजी ने जिस ढंग से यह बात कही है, उससे लोगों की हँसी का फव्वारा छूट रहा है।

अब क्रुश्चेव पूछ रहे हैं—"यहाँ कौन सी घास आप उगाते हैं?"

"पारा घास! पेरागुई लेकिन अमेरिका से उसके बीज आते हैं!"

"कितनी पैदा होती होती है?"

"दो लाख पौण्ड प्रति एकड़...वैसे सूखी घास भी हम खरीदते

"दूध में चर्बी कितनी रहती है?"

"सवा सात प्रतिशत।"

"बहुत खूब! हमारे यहाँ तो तीन और चार प्रतिशत ही अच्छा! आपके यहाँ गायें हैं, पर हमारे यहाँ भैंसें अधिक हैं!"

"हमारे यहाँ भैंसें भी पाँच प्रतिशत देती हैं!"

"हुँ, पर यहाँ की नस्ल अच्छी है। फिर भी दूध का उत्पादन है आपके यहाँ! हमारे यहाँ पाँच से छः हजार लिटर उत्पादन अर्थात् आपके यहाँ से ढाई गुना अधिक!"

"तो आप कबसे उनकी देख-भाल कर रहे हैं?"

"अभी तक तो हम लोग इस ओर ध्यान नहीं देते थे, पर अब किया है!"

"हमने भी अभी शुरू किया है!

"किन्तु"—क्रुश्चेव कहते हैं—"देखभाल ऐसे ही नहीं। देख उसे कहते हैं, जिसमें बराबर नियमपूर्वक पौष्टिक शुद्ध और भरपूर अ इन जानवरों को मिले।"

"आपके देश ने और पश्चिमी देशों ने दुधारू जानवरों का संर बहुत बहुत पहले से ही शुरू किया है। हम लोगों को तो स्वतन्त्रत बाद यह अवसर मिला है। यही पाँच छः साल हुये।"

"लेकिन पशु पालन हमने आपसे ही सीखा?"

"फिर भी दूध आपके यहाँ ज्यादा है!"—मुरारजी बोल उठते है

"इसका कारण यह है कि भारत दो सौ बरसों तक गुलाम रहा!"

"हम भी तो रहे! फिर भी आपकी गौ संस्कृति हमसे बड़ी पु है! इनसे मिलिये यह हैं, हमारे उपमन्त्री रेसेलोव। वह आपको बतलावेंगे। कभी आप लोग रूस आइये, तो हम सब दिखलायें आपको

अब अपने आगमन की स्मृति स्वरूप रूसी नेता दुग्ध-उपनिवेश

बादाम के पौधे लगा रहे हैं। जहाँ पौधे लगाये जा रहे हैं, वहीं रूसी और हिन्दी में पट्ट भी लगे हुये हैं।

दुग्ध आयुक्त पूछ रहे हैं—"क्या रूसी पट्ट ठीक लिखे हैं?"

"हाँ!"—श्री बुलगानिन कहते हैं।

श्रीक्रुश्चेव इन पौधों के स्थान पर खड़े होकर रूसी फोटोग्राफरों से चित्र खिंचवा रहे हैं।

अब आइये न्यू इन्स्पेक्शन बंगलो। लंच का आयोजन है।

पूर्णतः निरामिष भोजन परोसा गया है। श्रीखंड, दही, पूरियाँ, तरकारियाँ, टमाटर का रस···प्रथम बार भारतीय पद्धति का निरामिष भोजन रूसियों के लिये परोसा गया है।

गरमी से परीशान हो श्री बुलगानिन ने अपनी जेकेट निकाल दी है, पर क्रुश्चेव जैसे पूर्व सावधान रहे हों। केवल यूरेकियन कमीज पहिन कर ही चले हैं। गले में रूमाल झूल रहा है। एकदम घुटा सिर, डाढ़ी मूँछ सफाचट, स्थूलकाय शरीर, उन्नत लाल ललाट, गहरी तेज आँखें! अद्भुत व्यक्तित्व है यह, जो हर प्रकार से चतुरता का द्योतक है। क्रुश्चेव को बातों में पछाड़ना संभव नहीं।

अतिथि अपना स्थान ग्रहण करते हैं।

अन्य लोग भी बैठ गये हैं।

श्री खुरोडी को धन्यवाद देते हुये श्रीक्रुश्चेव कहते हैं—"अगले वर्ष मास्को में कृषि प्रदर्शनी का आयोजन होगा। मैं आपको वहाँ आने का निमन्त्रण देता हूँ···और तब हम देखेंगे कि जीत किसकी होती है?"

किन्तु मुरारजीभाई देसाई नामक यह दुबला पतला व्यक्ति कम राजनीतिज्ञ नहीं है। तपाक् से कहते हैं, देसाई—"अरे! भाइयों में प्रतियोगिता और विजय की बातें कैसी? हम मित्र हैं और मित्रता के नाते अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहेंगे!"

क्रुश्चेव भला झेंप सकते हैं—"प्रतियोगिता का अर्थ मैंने यहाँ तुलना

के रूप में किया है। फिर हम तुलना करेंगे कि हममें कौन श्रेष्ठ है। हाँ, समाजवादी और पूँजीवादी प्रतियोगता की बात लें, तो अर्थ ही पलट जाता है। समाजवादी अपने सम्बन्ध की सारी बातें बतला देगा, पर पूँजीवादी अपने व्यापार का रहस्य नहीं दे सकता है। यदि वह ऐसा करता है, तो वह मूर्ख कहलायगा।"

"........"

"मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि भारत इनमें से ही कोई रास्ता अपनावे! पूँजीवाद हमेशा घूँसा ताने रहता है जबकि समाजवाद हमेशा हिस्सा बँटाने को तैयार रहता है!"

"लेकिन हम भारत में एक तीसरे ही रास्ते पर हैं!"—श्री देसाई कह रहे हैं—"और यह रास्ता है कि जिससे भलाई एक दूसरे की हो सके उसीका आदान प्रदान!"

इस पर बड़ी जोर की हँसी का ठहाका लगता है।

"चलिये! शुरू कीजिये!"—श्रीखुरोडी कहते हैं और परोसी गयी प्रत्येक वस्तु की विशेषता बतला रहे हैं।

रूसी नेताओं को पूरी और श्रीखंड बहुत पसन्द आता है। बड़ी तारीफ कर रहे हैं। श्रीक्रुश्चेव परोसे गये मिर्च के अचार को मार्शल के सामने रखकर उनका आम का अचार खींच लेते हैं। इस पर बड़ा ठहाका लगता है—"हमारे प्रधानमंत्री को मिर्चें पेश हैं।"

हँसी खुशी के वातावरण में अतिथि पहिली बार विशुद्ध भारतीय भोजन का आस्वादन कर रहे हैं।

भोज की समाप्ति के उपरान्त चाँदी के वर्क में लिपटे बनारसी पान भेंट किये जा रहे हैं। श्री क्रुश्चेव एक पान उठाकर उसे काट काटकर खाने लगते हैं।

"ऐसे नहीं। ऐसे में तो कत्था चू पड़ेगा! ऐसे खाइये।"—मुरारजी एक पान खाकर उन्हें पान खाने का तरीका सिखलाते हैं।

श्री बुलगानिन पान खाने मे कोई रुचि नहीं दिखला रहे है। वे अपनी रूसी सिगरेट का धुंआ उड़ा रहे हैं।

चलिये। कारें आ गयीं।

अतिथियों का यह दल ताता टैक्सटाइल्स मिल्स की ओर जा रहा है। यह लोग भारत में पहिली बार एक व्यक्तिगत संस्थान देखने जा रहे हैं।

मिल चालू है। मशीनों की घरघराहट और जनसमूह की जयजयकार के स्वरो के बीच कारों का समूह ताता मिल्स में प्रवेश करता है। तमाम मजदूर काम छोड़कर इकट्ठे हो गये हैं और उनके स्वागत-नारो से आकाश गूँज रहा है। खादी की टोपी लगाये एक मजदूर, दोनो नेताओं को माल्यप्रदान करता है और महाराष्ट्रीय वेश में एक मजदूरिनी पुष्प वर्षा करती है। लाल रंग की साड़ी, नाक मे बड़ी सी नथ, जूड़े मे गजरा!

स्वागत के पश्चात् परिचय।

"आप हैं श्री होमीमोदी...इस मिल के डायरेक्टर...आप है श्री वी० नजप्पा...टैक्सटाइल्स कमिश्नर..."

मजदूरों के बीच नेता कुछ नहीं बोलते। श्री बुलगानिन हैट हिलाकर अभिवादन स्वीकार कर रहे हैं, पर श्री क्रुश्चेव मजदूरो के दल मे मिल गये हैं और उनसे पूछताछ कर रहे हैं। खाने-पीने, वेतन, मजदूरी के घंटे, घर-परिवार सभी की बातें!

"निकिता, आओ!"—मार्शल पुकारते हैं तब आप जनाब आते है।

मिल देखिये। यह है बच्चों की देखभाल का स्थान! इन बच्चों की माताएँ जब मिल मे काम करती हैं, उनकी देखभाल यहाँ होती है।

कोई चालीस-पचास बच्चे। कोई खेल रहा है। कोई पालने में झूल रहा है। श्री बुलगानिन पालने में पड़े कुछ बच्चो को पुचकारते हैं।

"यहाँ पर देखभाल के अतिरिक्त बच्चों को दूध, कपड़े और खिलाने भी दिये जाते हैं।"—श्री होमी मोदी कह रहे हैं।

"यह बहुत अच्छा है!"

आगे बढ़िये। यहाँ मजदूरों की कैन्टीन में मजदूरों को भोजन, जलपान सस्ते दामों में प्राप्त होता है। श्री बुलगानिन और श्री क्रुश्चेव देख रहे हैं।

"इसका दाम?"—श्री बुलगानिन एक पूरी उठाते हैं।

"एक आना!"

"तो आपका एक आना उधार रहा!"—मार्शल पूरी खा जाते हैं!

"ठीक है!"—श्री होमी कहते हैं—"मास्को आने पर मैं आपसे इकन्नी वसूल कर लूँगा!"

जोर की हँसी का एक ठहाका लगता है। अनुशासित और चुपचाप खड़े मजदूर भी हँस पड़ते हैं। इस मिल के मजदूर बड़े ही अनुशासित ढंग से खड़े हैं। बम्बई के अब तक के अन्य स्वागत समारोहों की नाईं यहाँ भाग दौड़, हलचल नहीं। सब ऐसे खड़े हैं, जैसे अपने ही हों।

टमाटर का एक गिलास रस श्री क्रुश्चेव पीते हैं।

"यह तो कड़ा पेय पदार्थ है!"

"शराब से भी कड़ा?"—मोदी पूछ रहे हैं।

"हाँ!"—क्रुश्चेव कह रहे हैं। उनका रुख मुरारजी की ओर है—"मैं जानता हूँ बम्बई में शराब निषिद्ध है इसलिये मैंने वायुयान में ही पी ली थी!"

"पर आपके यहाँ की वोदका तो बड़ी अच्छी होगी!"

"ओह! वोदका! आपको इतनी प्रिय है! यदि मैं ऐसा जानता तो अपने कोट या पैंट की जेब में, किसी भी प्रकार छिपाकर आपके लिये ले आता!"

क्रुश्चेव की इस बात पर फिर बड़ी जोर का अट्टहास होता है। मुरारजी झेंप जाते हैं।

मजदूरों के अनुशासित संयमित झुण्ड को पार करते हुये रूसी नेता अब मिल के भीतरी भागों को देख रहे हैं। चार विभाग हैं इस मिल में। यह रिंग स्पिनिंग विभाग, यह वाइडिंग वारयिंग डिपार्टमेंट, यह सूत-रंगाई विभाग, यह छपाई विभाग! फैब्रिक की बनायी चीजों में अतिथि *विशेष दिलचस्पी दिखला रहे हैं।*

मिल से बाहर निकल रहे हैं अतिथि! कारों के काफिले नागरिकों के स्वागत के बीच अब ताता मौलिक अनुसन्धान केन्द्र एवं प्रतिष्ठान का निरीक्षण करने जा रहे हैं (बम्बई से २० मील दूर)।

स्थान स्थान पर स्वागत के लिये एकत्रित भीड़ के बीच रूसी नेता यहाँ पहुँच रहे हैं। उनका स्वागत कर रहे हैं श्री जे० आर० डी० ताता और डाक्टर भाभा (होमी जे०) आइये! स्वागत है! अब अनुसन्धान शाला की विभिन्न बातें व मशीन दिखलायी व बतलायी जा रही हैं। जेनेवा में अभी जो परमाणु सम्मेलन हुआ था उसी के अध्यक्ष हैं यह डाक्टर भाभा। आपके ही निर्देशन में भारत में अणुशक्ति का निरीक्षण-परीक्षण यहाँ होता है।

यह है प्रथम भारतीय परमाणु न्यष्टियन्त्र (यह पूर्णतः भारतीय है) इसकी स्थापना इस स्थान से ३ मील दूर ट्रामवे में होगी। नेताओं को वह स्थान भी दिखलाया जाता है। ३ मील के इस रास्ते पर जनता खड़ी है।

डाक्टर भाभा सोवियत अतिथियों को यन्त्रों तथा अब तक की प्रगति का पूरा विवरण देते हैं। यूरेनियम सम्बन्धी बातें भी हो रही हैं, जो वैज्ञानिकों के समझ की बातें हैं।

लगभग आध घण्टा यहाँ व्यतीत कर सोवियत नेता राज्य सरकार के संरक्षण में स्थापित तारापूरवाला एक्यूरियम देखने जा रहे हैं। यहाँ पर

नाना प्रकार की भारतीय मछलियाँ एकत्रित हैं। सोवियत नेता देखते हैं और यह इच्छा व्यक्त करते हैं कि इन मछलियों का चलचित्र तैयार कर, विशेषतः बच्चों के लिये रूस भेजा जाय !

यहाँ का यह प्रदर्शन बड़ा मनोरञ्जक रहा। रङ्गबिरङ्गी तैरती, नीली, पीली, सुनहली मछलियाँ ! "खुदा का सन्देश" नामक मछली सोवियत नेताओं को विशेष पसन्द आती है। सचमुच यह मछली बड़ी अद्भुत है। इसकी पूँछ अरेबिक के उस शब्द से मिलती है, जिसका अर्थ "खुदा का संदेश" होता है।

सूरज की किरणें अब तिरछी हो रही हैं। यहाँ से सोवियत नेता समुद्र में एक डुबकी लगाने जा रहे हैं।

व्यस्तता के कारण अनेक कार्यक्रम बर्खास्त कर दिये गये हैं। जैसा कि कार्यक्रम बनाया है, उसके अनुसार इन नेताओं को लगभग १०० मील मोटर का दौरा करना पड़ेगा। अतएव श्री नित्यानन्द कानूनगो के परामर्श से स्थानीय खादी भण्डार का निरीक्षण, स्थानीय मेट्रो सिनेमा में फिल्म और पश्चिमी संगीत के प्रदर्शन का कार्यक्रम रद्द कर दिया जाता है। सबसे ज्यादा मुसीबत तो उन पत्रकारों की है, जो लगातार मार्शल के दल के साथ भाग रहे हैं।

आइये अब कौंसिल हाल के इस उद्यान में। यहाँ विधान सभा के सदस्यों के साथ श्रीदेसाई की ओर से स्वागत-भोज का आयोजन है। अतिथि आ गये हैं। विधान सभा के सदस्यों से परिचय होता है। मुरारजी स्वागत करते हैं और स्वागत के उत्तर में श्री बुलगानिन कह रहे हैं:—
"मान्य मुख्यमन्त्री महोदय, विधान सभा के सदस्यो और भारत की जनता, 'महात्मा गाँधी के इस महान् देश में उनके महान् शिष्य और उत्तराधिकारी श्री जवाहरलाल नेहरू जैसा प्रधान मन्त्री पाकर निश्चय ही आप लोग धन्य हैं।

हम लोगों के महान् नेता लेनिन ने रूस की जनता के लिए सुखद

और उन्नत भविष्य का नया मार्ग प्रशस्त किया। आप लोगों के महान् नेता महात्मा गाँधी थे।

यद्यपि इन दोनों महान् नेताओं का जीवन दर्शन और सिद्धान्त भिन्न था, पर इनमें अनेक समानताएँ थीं। दोनों ही महान् नेताओं लेनिन और महात्मा गाँधी ने अपने अपने देश की जनता को, देश को स्वतन्त्र करने तथा स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में अपने स्वरूप का निर्माण करने की शिक्षा दी। जिस प्रकार महात्मा गाँधी ने यहाँ भारत के लोगों को उपदेश दिया, मार्ग दिखाया उसी प्रकार वहाँ लेनिन ने सोवियट रूस के लोगों को शिक्षा दी। सोवियट रूस ने पूँजीवाद से अपने को मुक्त किया है तथा भारत ने उपनिवेशवाद से मुक्ति पायी है। अब ये दोनों ही मुक्त देश अपनी अपनी स्वतन्त्रता को सुदृढ़ करते हुए अपने अपने देश की जनता का अर्थविध कल्याण साधन करने में निश्चय ही महती सफलता प्राप्त करेंगे।

प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू की सोवियट रूस की यात्रा और मेरी तथा श्रीक्रुश्चेव की भारत यात्रा दोनों देशों की मैत्री सुदृढ़ करने की दृष्टि से ऐतिहासिक है। रूस और भारत की मैत्री ज्यों-ज्यों दृढ़ होती जायगी त्यों-त्यों विश्वशान्ति सुदृढ़ होती जायगी। जय हिंद!"

श्रीक्रुश्चेव कुछ नहीं बोलते। अब भोज प्रारम्भ होता है। लगभग एक घण्टा यहाँ सदस्यों के साथ रहते हैं। यहाँ से अब महालक्ष्मी की ओर जा रहे हैं। रायल वेस्टर्न इण्डियन टर्फ क्लब के मैदान में भारत रूस सांस्कृतिक सोसायटी की ओर से आयोजन है। विशेष प्रकार के प्रकाश से सारा मैदान आलोकित है। कोई ६०० से ऊपर बम्बई के चुने हुये नागरिक यहाँ उपस्थित हैं। इनमें राज्यपाल, चीफ जस्टिस श्री छागला प्रमुख हैं।

सोसायटी की ओर से बड़ा ही भव्य स्वागत हो रहा है। मार्शल बुलगानिन बहुत ही संक्षेप में स्वागत। उत्तर दे रहे हैं का लगता है, वह बहुत ही थके हुये हैं पर जनाब क्रुश्चेव बोलते ही जा रहे हैं:—"मित्रो, आज इस अवसर पर मैं कहना चाहता हूँ कि

पश्चिमी राष्ट्र गर्वोक्ति की आदत त्याग दें, नहीं तो वे कहीं के न रहेंगे। गर्वोक्ति की आदत हम लोगों को पसन्द नहीं और हम लोगों के लिए वह बहुत खलनेवाली वस्तु सिद्ध होती है।

जेनेवा सम्मेलन ने जैसी स्थिति उत्पन्न कर दी है उस पर रूस को किसी प्रकार का रोष नहीं है। इन समस्याओं के सुलझा लेने का कदाचित अभी उपयुक्त समय नहीं आया है। शायद इनके समाधान के लिए सोवियट रूस को उस समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, जब तक जेनेवा सम्मेलन के उसके सहयोगी राष्ट्र अकड़कर बात करने की आदत त्याग नहीं देते हैं। तब तक प्रतीक्षा करने के लिए वस्तुतः हम तैयार भी हैं। अभी तक हवा का वेग हमारी दिशा की ओर ही है और अनुकूल मौसम के लिए हमें धैर्य रखना है, इन्तजार करना है। उपयुक्त और अनुकूल समय आ जाने पर जनता के हित में तथा उचित ढंग से इन समस्याओं को हल कर सकने में हम लोग समर्थ होंगे। जेनेवा सम्मेलन के परिणामों पर पश्चिम के कुछ राजनीतिज्ञों ने कुछ संयमित ढंग से अपने विचार व्यक्त किये हैं और उनके इस समयपूर्ण स्वर से हम लोग प्रसन्न हैं। स्पष्ट है कि वे लोग स्पष्ट एवं खुले तरीके से अभी इसलिए कुछ कहना नहीं चाहते कि इससे राज्यों की भावनाएँ वेगवान हो जायगी। इससे यह भी प्रकट हो जाता है कि सहअस्तित्व की आवश्यकता है। भारतीय प्रधान मन्त्री ने घोषित किया है कि भारत समाजवादी मार्ग पर अग्रसर होता रहेगा और उनके इस स्पष्टीकरण का मैं प्रशंसक हूँ। अवश्य ही रूस की समाजवादी रूपरेखा भारत में कुछ भिन्न है तथापि समाज निर्माण विषयक आपके निर्णयों के प्रति हमारी शुभकामनाएँ हैं।

समाजवाद अपने को जीवित रखने के लिए किसी से अनुमति नहीं माँगता, हम लोगों का इस प्रकार का अस्तित्व बना हुआ है और हम लोग इसकी रक्षा के लिए कृतसंकल्प हैं। अगर अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए हमने किसी से इजाजत माँगी तो याद रखिये हम लोग

नष्ट हो जायंगे। वैसे हम पूँजीवाद को पसन्द नहीं करते और उसके मुकाबले समाजवादी प्रणाली को श्रेष्ठ समझते हैं फिर भी हम मानते हैं कि पूँजीवाद और समाजवाद में सहअस्तित्व अनिवार्य है।

एक ही नक्षत्र मण्डल के बीच समाजवाद को भी रहना है और पूँजीवाद को भी, अतः मैं पुनः दोहराना चाहता हूँ कि दोनों विभिन्न प्रणालियों के बीच सहअस्तित्व बिलकुल सम्भव है। इसका मतलब यही होता है कि स्वयं जिन्दा रहो और दूसरों को भी जीवित रहने दो। जो भी हो हम लोगों को यथाशक्ति इसके लिए प्रयत्न करना है कि आक्रामक शक्तियाँ नया युद्ध छेड़ने में सफल न होने पायें। आपकी भारत रूस सांस्कृतिक सोसायटी इस दिशा में बहुत कुछ कार्य कर सकती है। हम लोग जितनी अधिक एक दूसरे की सहायता कर सकेंगे, उतना ही शान्ति-पक्ष को भी सुदृढ़ बना सकेंगे। इससे आक्रामक शक्तियों को हम नियन्त्रित भी कर सकते हैं और उन्हें आगे बढ़ने से रोक सकते हैं। आक्रामकों से आक्रमण प्रारम्भ न करने के लिए अनुनय विनय करना कोई अर्थ नहीं रखता। वस्तुतः इससे कुछ लाभ नहीं हो सकता। हम तो केवल अपने कार्यों और प्रयत्नों के बल पर ही हमला रोक सकते हैं, उसका आतंक समाप्त कर सकते हैं।

कुछ लोग अक्सर यह प्रश्न करते हैं कि सहअस्तित्व की व्यावहारिक सम्भावनाएँ कहाँ तक हैं? उदाहरण लेकर यह बात समझायी जा सकती है। एक गर्भिणी स्त्री की ही बात लीजिए। उक्त स्त्री और उसके पति को इस बात का ठीक ठीक पता नहीं हुआ करता कि शिशु का जन्म कब होनेवाला है तथापि वे यह तो निश्चित रूप से जानते ही हैं कि शिशु जन्म लेकर रहेगा। सहअस्तित्व के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। संसार में पहले-पहल जब सर्वहारा राज्य अस्तित्व में आया तो उस समय गिरजा-घरों के घण्टे बजाकर उसका स्वागत नहीं किया गया था बल्कि इसके विपरीत कुछ लोगों ने उस समय यह प्रश्न किया कि इस प्रकार राज्य

व्यवस्था को क्यों अस्तित्व में आने दिया जाय ? केवल प्रश्न ही नहीं पूछे गये बल्कि तदनुकूल कार्य भी किये गये। उदाहरण के लिए अंग्रेजों को ही लीजिये। अंग्रेज हमारे देश में आये और फ्रांस वालों ने ओडेसा में अपने पैर जमाये। अमेरिकियों ने ब्रिटेनवालों का अनुगमन किया और जापान भी पीछे नहीं रहा, लेकिन परिणाम जो कुछ हुआ, वह आप सभी लोग जानते हैं। इन सभी देशों की सेनाएँ हमारे देश से बाहर खदेड़ दी गयी, ठीक वैसे ही जैसे गृहिणी अपने घर से जूँठन, कूड़ा कर्कट आदि बाहर फेंक देती है। प्रसङ्ग यहीं समाप्त नहीं हो जाता। इन्हीं देशों ने द्वितीय महायुद्ध की शुरुआत की और इन्होंने ही हमारे देश के विरुद्ध नये शत्रु की सेनाएँ भेजीं। हमारा अभिप्राय हिटलरी जर्मन सैनिकों से है। हिटलर के सैनिकों ने हमारे देश पर हमला किया और जो कुछ परिणाम रहा, उसे आप जानते ही हैं। हम विजयी हुए और हमारी शक्ति पहले से अधिक बढ़ गयी। अब हम यह कह सकने की स्थिति में हैं कि सोवियट रूस ने पिछले युद्ध के अपने घावों को भर लिया है। हमारी राष्ट्रीय अर्थ प्रणाली भी पुनः संघटित है। हम लोगों ने युद्धोत्तरकालीन प्रथम पञ्चवर्षीय योजना पूर्ण कर ली है और अब हम दूसरी योजना शुरू करने जा रहे हैं। हमारा देश तेजी के साथ प्रगति कर रहा है। अक्तूबर क्रान्ति के शुरू के दिनों का हमें भली-भांति स्मरण है जब रूस के भविष्य को समझ सकने की क्षमता केवल स्वर्गीय महान लेनिन में ही थी।

कुछ लोग पूछते हैं कि सोवियट यूनियन के सम्बन्ध में क्या होने जा रहा है। इस प्रकार के प्रश्नों का यही उत्तर होगा कि रूस में आज किसान और मजदूरों का शासन है। हमारा मतलब इस तरह के एक राज्य से है जहाँ के शासक, मजदूर और किसान; लिख पढ़ नहीं सकते। ऐसी अवस्था में यह प्रश्न उठता है कि फिर रूसी संस्कृति, रूसी विचार धारा और रूसी आदर्श का क्या होगा ? जो क्रान्ति के पहले भी काफी उन्नत अवस्था में थे। रूस के किसान और मजदूरों ने अपने योग्यतम पुत्र

और पुत्रियों को विश्वविद्यालयों और प्रतिरक्षण केन्द्रों में भेजकर इन प्रश्नों का उत्तर अपने आप दे दिया है। हमारे देश के कल-कारखानों में आज ये ही योग्य नागरिक काम कर रहे हैं और इनमें आज कला का मूल्याङ्कन करने की अधिक क्षमता वर्तमान है—कदाचित क्रान्ति के पूर्ववर्ती काल से भी अधिक। स्पष्ट है कि हमारा अस्तित्व बिलकुल सुरक्षित है और हमारी अर्थ-अवस्था हमारी संस्कृति, प्रगति के पथ पर बराबर अग्रसर है और बिना मित्रराष्ट्रों के भी हम इनके सुन्दर परिणाम प्राप्त करके रहेंगे। लेकिन फिर ऐसी अवस्था में हमें अपनी सुरक्षा के लिए विशाल धनराशि तो सुरक्षित रखनी पड़ेगी ही।

कुछ राजनीतिक आज निरस्त्रीकरण अथवा तनातनी कम करने के सम्बन्ध में ईमानदारी और गम्भीरता के साथ मुँह खोलने में भय खा रहे हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता है कि तनातनी की स्थिति शान्त हो जाने पर सुरक्षा व्यवस्था के लिए अलग किया धन जन-कल्याणकारी कार्यों में खर्च किया जायेगा और यह निश्चित है कि शान्तिकालीन प्रतियोगिता में हम लोग आगे रहेंगे। मास्को के एक समारोह में भी मैंने इस प्रकार का स्पष्टीकरण किया था, जब पूँजीवादी पत्रों ने यह शोर मचाना शुरू किया कि रूस अभी भी अपने पुराने रास्ते पर चल रहा है। मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि रूस लेनिन के सिद्धान्तों का अनुगमन वैसे ही करता रहेगा जैसे वह शुरू से (क्रान्ति के बाद से) करता आ रहा है। उस समय भी मैंने यह कहा था और आज भी मैं कह रहा हूँ। रूस में एक कहावत है कि 'सुखी जीवन बिताने वाला व्यक्ति और अच्छे जीवन की आकांक्षा नहीं करता' ठीक इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि हमारा निर्माण-कार्य पूरा हो चुका है फिर हम उससे विरत क्यों होने लगें ?

हम सहअस्तित्व चाहते हैं। आपस की सद्भावना तथा राष्ट्रों का पारस्परिक सम्बन्ध दृढ़ करना चाहते हैं। हम दूसरे देशों से व्यापार सम्बन्ध भी चाहते हैं, लेकिन पूँजीवादी देशों ने भेदभाव की नीति से काम लेना शुरू कर

दिया है और वे हमारे साथ व्यापार नहीं करना चाहते हैं। फिर भी हमारा देश प्रगति कर रहा है और बिना व्यापार सम्बन्ध के भी उसका कार्य चल रहा है। मैं अपना यह रहस्य भी प्रकट कर दूँ कि पूँजीवादी देशों की इसी उपेक्षापूर्ण नीति ने हमें अपनी अर्थव्यवस्था को दृढ़ करने की नयी सम्भावनाओं को ढूँढ़ निकालने के लिए विवश किया है। दूसरे देशों के साथ हमारा सम्बन्ध भी बढ़ा है और हम अपने देश में दूसरे देशों के अतिथियों को देखना चाहते हैं। कुछ लोग रूस को तथाकथित लौह-आवरण का देश कहते हैं और हम लोगों पर दोषारोप करते हैं। इस सम्बन्ध में भी मैं कुछ स्पष्टीकरण कर देना चाहता हूँ। इस वर्ष रूस में अमेरिका के १७ सिनेटर आये। इसके अलावे वहाँ के कुछ वैज्ञानिक तथा कृषि विशेषज्ञ आये और किसी को भी जिसने आना चाहा परिपत्र के लिए निराश न होना पड़ा।

सहअस्तित्व का सबसे बढ़िया उदाहरण भारत और रूस के बीच स्थापित सम्बन्ध है, अवश्य ही दोनों देशों के कुछ अन्तरराष्ट्रीय विचार भिन्न हैं।"

जस्टिस छागला के धन्यवाद के उत्तर के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त होता है।

अब क्लब के हॉल में नृत्य-गीत का आयोजन। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम से १ घण्टे की देरी हो गयी है। श्रीक्रुश्चेव के भाषण ने अधिक समय ले लिया है। आइये हॉल में। हाल खूब मचा है। विशेषतः स्टेज की सजावट बड़ी ही कलात्मक है। अतिथियों को बैठने का स्थान विशेष रूप से बनाया है।

उठ रहा है। रेशमी सिल्कन परदा। जगमग जगमग रंगीन प्रकाश। बज रही है बाँसुरी···वायलिन, हारमोनियम···एक एक भारतीय वाद्यों का प्रदर्शन···शहनाई, ढोलक···कार्यक्रम संक्षिप्त ही रखा गया है। बहुत से प्रोग्राम कैंसिल हैं।

हये!

यह आया गोपीकृष्ण !-कमाल का नर्तक !

डुम्म डुम्म डम्म···डुम्म···डुम···डुम···डम्म डम्म···कत्थक नृत्य··· कमाल है गोपीकृष्ण···एक एक अंग हिल रहा है। फिल्मी दुनिया के इस प्रसिद्ध नर्तक का नृत्य देखकर रूसी अतिथि मुग्ध हैं।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच नृत्य समाप्त होता है।

अनायास हाल में हो-हल्ला मचता है।

"लाइट आफ···लाइट आफ···मेनस्विच बन्द करो !"

लोगों की भाग दौड़ ! हड़कम्प ! एक कैमरामैन को बिजली के तार ने पकड़ लिया है। तत्काल मेनस्विच आफ ! क्षणभर अन्धकार। घोर अन्धकार···प्रकाश···जगमगाहट···कैमरामैन बचा लिया गया। उसे अस्पताल भेज दिया गया।

अब फिर नृत्य···

यह आयी···अरे ! यह तो बैजयन्ती माला है···कजरा रे नयन, उन्नत उरोज, अङ्ग अङ्ग की सुडौल गठन···छमकीला वेश···वाह ! क्या नृत्य की मुद्रा में।

हेये हेये···थेई थेई थेई था था था थप्प ! थप्प थप्प ! थेई थेई था··· छनन छनन छनन छन···

नाचे बैजयन्ती माला ! नागिन वाली बैजयन्ती माला, मेरा तन डोले··· यही है···एक ओर फिल्म डायरेक्टर उससे कितने सस्ते नृत्य करवाते हैं और दूसरी ओर यह है उसका शास्त्रीय सांस्कृतिक नृत्य···बैजयन्ती माला के जीवन का दूसरा पहलू।

झूम-झूम कर नाच रही है बैजयन्ती माला।

और इसके पश्चात् यह समारोह समाप्त होता है।

अतिथि राजभवन लौट गये हैं। बंबई राज्य की ओर से उन्हें कलापूर्ण सोफा सेट दिया गया है। नक्काशीदार सोने का मुलम्मा···५ फुट ऊँचे

३ फुट चौड़े···गुजरात के जङ्गलों में मुश्किल से मिलने वाली लकड़ी का बना है। न मशीन का प्रयोग किया है, न लोहे की कीलें लगाई गयी हैं। गिलहरी की पूँछ के विशेष ब्रुश लगे हैं।

२५ नवम्बर १९५५···सूर्य की लाली गयी शेष है। शान्ताक्रुज हवाई अड्डे पर विमान खड़ा है। लोगों की भीड़ रूसी नेताओं को देखने के लिये इकट्ठी हो रही है। आज रूसी नेता जाने वाले हैं। लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही है। आठ बज गये हैं। कारों का ताँता लग गया है। रूसी अतिथियों के साथ बम्बई के मुख्यमन्त्री भी आ गये हैं।

श्रीक्रुश्चेव मुरारजी से कह रहे हैं:—"श्रीमान, वक्ता लोग शराबियों की तरह होते हैं और जब बोलते हैं तो बस बोलते जाते हैं और उन्हें समय का ध्यान रहता ही नहीं। कल रात भारत-रूस सांस्कृतिक संघ के स्वागत समारोह में मैंने भी लम्बा सा भाषण दिया था, जिसके लिये मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ और विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में मैं लम्बे भाषण नहीं दूँगा।"

अरे! भीड़ में यह लड़की रो रही है। जोर जोर से रो रही है। रूस के प्रधान मन्त्री पर इस बच्ची ने एक कविता लिखी है। उसे विमान के निकट नहीं जाने दिया गया! वह रो रही है। एक अधिकारी एक पन्ने पर लिखी कविता उसके हाथ से ले लेता है और प्रधान मन्त्री मार्शल बुलगानिन को दे देता है। मुख्यमन्त्री देसाई नगर के स्वागत समारोह के ७५ फोटो का एक अलबम और मेयर, चाँदी की गणपति की मूर्तिय देते हैं।

हमारा जहाज उड़ने को तैयार है। ८ बजकर ५० मिनिट।

विदा बम्बई।

उड़ रहा है जहाज। बम्बई के राजस्व मन्त्री श्री बी० एन० हिरे भी साथ हैं।

यही तो है पूना का हवाई अड्डा। लोहागाँव हवाई अड्डा। कोई ५० हजार लोगों की भीड़। हवाई अड्डा सजा हुआ है। तोरण द्वार पर पताकाएँ फहरा रही हैं। हवाई अड्डे पर बम्बई के राजस्व मन्त्री श्रीहिरे तथा मेयर श्रीसखास स्वागत करते हैं। जहाज के उतरते ही लाल कालीन बिछ गयी है। इसी पर नेता खड़े हैं। अधिकारियों और पूना के सैनिक केन्द्र के अधिकारियों से परिचय कराया जा रहा है।

अब हवाई अड्डे से नेताओं की कार सजे-सजाये फाटकों से होकर गुजर रही है। सड़क के दोनों ओर एकत्रित भारी भीड़ उनकी जयजयकर रही है। रूसी नेताओं की मोटर यरवदा जेल की भयानक दीवारों के समीप से सटी और देहरा की सैनिक बारकों को पार करती हुई बड़ागाँव धान संवर्धन केन्द्र की ओर बढ़ी जा रही है। हवाई अड्डे से २५ मील दूर है यह क्षेत्र।

कारें भागती जा रही हैं। जयजयकार कम होता जा रहा है। सड़कों पर भीड़ कम है। कोई सजावट नहीं।

जैसे जैसे बड़ागाँव संवर्धन केन्द्र पास आता जाता है। शोर सुनायी पड़ता है और यहाँ की जनता अतिथियों का स्वागत करने आगे बढ़ती है।

बम्बई सरकार के कृषि डायरेक्टर डाक्टर एन० जी० पंडया स्वागत करते हैं, नेताओं का।

स्वागत के उपरान्त डा० पंडया जापानी तथा अन्य पद्धतियों और प्रयोगों से उत्पादित चाँवलों की अनेक किस्में दिखला रहे हैं। सुगन्धित चाँवल भी दिखलाया जा रहा है। धान की फसल में लगने वाले कीड़े

और रोगों से फसल की रक्षा के लिये होने वाले प्रयोगों के सम्बन्ध में विस्तार से समझा रहे हैं।

श्रीक्रुश्चेव बड़ी ही दिलचस्पी और ध्यान से सुनते हैं। अब खेत दिखलाये जा रहे हैं। खेतों में स्त्री पुरुष पूर्ववत् काम कर रहे हैं।

खेतों में बैल चल रहे हैं। एकदम ग्रामीण वातावरण उपस्थित है। एक जोड़ी बैल जिनके सींग सुनहले रंग से रंगे हुये हैं, उन्हें देखकर श्रीक्रुश्चेव कह रहे हैं—"सोवियत रूस में भी मशीनों द्वारा कृषि प्रारम्भ किये जाने के पूर्व बैलों का प्रयोग होता था। उन्हें बुइवल कहते थे हम लोग।"

श्रीक्रुश्चेव बड़ी ही दिलचस्पी के साथ आगे बढ़ रहे हैं। सोवियत रूस में गल्ला ओसाने की विधि का प्रदर्शन कर रहे हैं।

"हमारा यहाँ गल्ला ऐसे ओसाया जाता है!"

ताज्जुब होता है क्रुश्चेव को देखकर। इनके मस्तिष्क में अपना देश और अपनी जनता पूर्ण रूप से अंकित है। कम्युनिस्ट पार्टी का प्रथम महासचिव सचमुच रूस की जनता के बीच का आदमी है।

खेत दिखलाये जा रहे हैं। धान देखी जा रही है। काटी जा रही है। क्रुश्चेव एक सूखे खेत में घुस जाते हैं। एक व्यक्ति के हाथ से हँसिया लेकर खुद धान काटने लगते हैं।

उससे कहते हैं—"क्या हम तुम एक साथ काम कर सकते हैं?"

वह व्यक्ति हक्का-बक्का। उससे क्रुश्चेव अनेक प्रश्न करते हैं। पर उसके केवल मराठी ज्ञाता होने के कारण उत्तर नहीं मिलता है। श्रीक्रुश्चेव फिर धान काटने बढ़ते हैं, पर खुफिया पुलिस का एक अधिकारी रोक देता है।

खेतों का निरीक्षण समाप्त करने के उपरान्त श्रीक्रुश्चेव और श्री बुलगानिन आम के वृक्षों का रोपण करते हैं।

रोपण के उपरान्त जब हाथ धोने के लिये साबुन दिया गया, तो क्रुश्चेव ने पानी लिया और उस छोटे से पौधे पर छोड़ा।

"यह क्यों ?"—मार्शल ने पूछा।

"ताकि मेरा पौधा आपसे पहले और अच्छा फले फूले !"

इस पर बड़ा कहकहा लगता है।

अब ६ मील दूर खड़कवासला सड़क पर अतिथियों की मोटर कारें भाग रही हैं। सड़क एकदम बियावान, सुनसान है। यहाँ कोई आबादी नहीं है। पहिली बार इतना सन्नाटा सोवियत नेताओं के सामने है।

यह रहा खड़कवासला केन्द्र। यहीं पर जल विद्युत् केन्द्र और नेशनल डिफेंस एकेडमी है। ६०० सैन्यशिक्षार्थी नेताओं का स्वागत करते हैं।

मार्शल बुलगानिन स्वागत का उत्तर देते हुये कहते हैं—"भारत और रूस का सम्बन्ध पञ्चशील पर आधृत है।

सोवियत रूस शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के महान सिद्धान्त से परिचालित है। रूस इस बात में विश्वास करता है कि विभिन्न सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं वाले संसार के विविध राष्ट्रों का शान्तिपूर्वक सहअस्तित्व असंभव नहीं है, वरन् एक वास्तविकता है।

जल विद्युत केन्द्र में कोयना योजना, काण्डला बन्दरगाह योजना, भाकड़ा बाँध, कोशी योजना के माडल हैं। श्रीकुबैर सेनत व डा० जोग लेकर उन्हें सब दिखलाते हैं। इन्हीं माडलों के कारण देश को ८० करोड़ रुपये की बचत हुई है।

अब नेशनल डिफेंस एकाडेमी की ओर से भोज है। भोज विशुद्ध महाराष्ट्रीय होने के साथ साथ मलाबार की गाजरी, बङ्गाली आलूदम, पञ्जाबी गाजर हलवा, लखनवी शामीकबाब और मिठाइयाँ हैं।

श्री बुलगानिन कहते हैं—"खाना तो गरम है !"

केप्टन के० के० बड़ावाल पास ही बैठा है। १८ वर्षीय यह बालक [illegible]

"मिठाई तो बच्चों के लिये है!"—मार्शल कहते हैं। हँसी का कहकहा लगता है।

आज श्रीक्रुश्चेव के डाक्टर साथ नहीं आये हैं। अतएव आपके मन में जो भी आता है, खा रहे हैं। विशेषकर आप मार्शल बुलगानिन को दिखला-दिखलाकर मिर्चें खा रहे हैं।

अब पूना की ओर मोटरों का काफिला दौड़ रहा है। शहर में आते ही जयजयकार सुनायी पड़ता है। तोरण, बन्दनवार झण्डियाँ, दिखलायी पड़ती हैं। शंखध्वनि सुनायी पड़ती है।

कारें अब सर परशुराम भाऊ कालेज मैदान में प्रवेश कर रही हैं। कोई तीस हजार जनता एकत्रित है। मञ्च बड़े ही ढङ्ग से सजाया गया है। गाँधी टोपी पहिने मार्शल को देखकर जनता जयजयकार करती है।

अब कार्यक्रम शुरू है। आग के खेल दिखलाये जा रहे हैं। वह कूदा ज्वान आग में। निकल गया।

यह देखिये लोक-नृत्य हो रहा है। महाराष्ट्र का लोकप्रिय गीत "तुझ्याँच्या···म्हणते···"

अब मास्टर कृष्णराव शास्त्रीय संगीत पेश कर रहे हैं। स्वामी रामदास, संत तुकाराम के अभङ्गों और कीर्तन का गायन होता है।

यह देखिये कुश्तियाँ हो रही हैं।

"वो मारा!"

"वा! पट्ठे!"

"शाबास विट्ठल मास्टर···"

शोरगुल के बीच मार्शल बुलगानिन कुश्तियों को देखकर बड़े ही प्रसन्न होते हैं।

मेयर अपने स्वागत भाषण में कहते हैं:—"सोवियत नेताओं का आगमन पूना के इतिहास में नयी और महत्वपूर्ण घटना है। सोवियत नेताओं के

आगमन से भारत और सोवियत के व्यक्तियों में और भी निकट सम्पर्क स्थापित होगा।"

अब मार्शल बोल रहे हैं—"मित्रो, भारत और रूस अपनी स्थायी मित्रता के द्वार विश्व की जनता से मैत्री बढ़ायेंगे और शान्ति की स्थापना करेंगे।

भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम में महाराष्ट्रीयों ने बहुत महत्वपूर्ण योग दिया है। भारत की स्वतन्त्रता का मुख्य कारण महाराष्ट्रियों की वीरता और स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने की उनकी भावना रही है।

महाराष्ट्र के सांस्कृतिक पीठ पूना का भारत के नकशे में आज भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोग शाला तथा इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं की स्थापना से मालूम पड़ता है कि पूना का महत्व धीरे-धीरे बढ़ रहा है। नमस्ते।"

भाषण समाप्त होता है। दुभाषिये द्वारा शुद्ध हिन्दी में अनुवाद होने के कारण जनता समझ नहीं पायी है। विशेष तालियाँ या जयजयकार नहीं होता है। .

समारोह की समाप्ति के पश्चात् रूसी अतिथियों को छत्रपति शिवाजी की काँसे की मूर्तियाँ भेंट की जाती हैं।

अब मेयर की ओर से रात्रि भोजन का आयोजन है।

पूना विश्वविद्यालय के डाक्टर जयकर अतिथियों का स्वागत करते हुये मराठी में कह रहे हैं:—"आप लोगों के भारत आगमन से दोनों देशों की मित्रता और आपसी सद्भावना बहुत दृढ़ होगी, जिससे भारत के शान्ति प्रयत्नों को तो बल मिलेगा ही साथ ही, यहाँ की गरीब जनता का जीवन स्तर ऊँचा करने में भी काफी मदद मिलेगी।

महाराज शिवाजी ने सामान्य व्यक्तियों की मदद से विशाल साम्राज्य की स्थापना की और किस प्रकार मराठों ने अन्त तक अंग्रेजों से मोर्चा लिया!

अभी हाल में कुछ भारतीय विद्वानों ने पता लगाया है कि संस्कृत

और रूसी भाषाओं में काफी साम्य है। यद्यपि इस सम्बन्ध में अभी विस्तृत खोज नहीं की गयी है। फिर भी आपके भारत आगमन से विद्वानों को इस सम्बन्ध में और अधिक अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा और वे यह सिद्ध कर सकेंगे कि किस प्रकार प्राचीन काल में संस्कृत और रूसी भाषाएँ साथ-साथ सभ्यता और सद्भावना का विश्व में प्रसार कर रही थीं।"

अब मार्शल बुलगानिन कह रहे हैं:—"मित्रो, यहाँ आप लोगों के बीच आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। शिवाजी इसी पूना के पास पैदा हुये थे और उन्हीं के नेतृत्व में मराठों ने स्वातन्त्र संग्राम शुरू किया। पूना का केवल ऐतिहासिक महत्व ही नहीं है, बल्कि एक आधुनिक नगर और कई वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के केन्द्र के रूप में और यह बहुत महत्वपूर्ण है।"

रात्रि भोज विशुद्ध महाराष्ट्रीय ढंग से प्रस्तुत है। श्रीखंड की अधिकता है। सम्भवतः रूसी नेताओं को यह विशेष प्रिय है।

यह देखिये। रूसी संवाददाता! आप विशिष्ट पद पर मार्शल के दल के साथ आये हैं। शोरगुल के बीच निर्विघ्न काम कर रहे हैं। रेडियो-टेलीफून पर पूरा संवाद मास्को भेज रहे हैं। बड़ी देर तक व्यस्त रहते हैं।

पत्रकारों की तो मुसीबत है। सारे समय मार्शल के दल के साथ भागना और जब सब आराम करते हैं, तो समाचार भेजने में लग जाना अथवा बीच-बीच में ही इस काम को करना पड़ता है। एक मिनिट को चैन नहीं!

बम्बई से एक विशिष्ट व्यक्ति आया है। टर्फ क्लब में अतिथि ठहरे थे, तो उनके कपड़े धुलने के लिये श्री दामोदर चेटलादकर को दिये गये, जिसमें चार सौ रुपये के नोट और कुछ महत्वपूर्ण कागजात छूट गये थे। वही सब लेकर यह व्यक्ति आया है। वस्तुएँ सौंप दी जाती हैं।

प्रातः काल रूसी अतिथि महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सामाजिक नेता कर्मवीर भाऊराव पाटिल से मिलते हैं। पाटिल साहब के साथ रूसी नेताओं का एक फोटो लिया जाता है। कोल्हापुर के दो कलाकार रूसी नेताओं को चित्र भेंट करते हैं।

श्रीक्रुश्चेव अपने चित्र पर लिखते हैं—"मेरा चित्र अत्युत्तम है!"

श्री बुलगानिन लिखते हैं—"मेरा चित्र वास्तव में अच्छा है।"

दिल्ली में नेहरूजी से हाथ मिलाने का भी एक चित्र दूसरे कलाकार ने भेंट किया है।

दिन के साढ़े नौ। रूसी नेता पूना के हवाई अड्डे पर हैं। श्रीहिरे कर्नल थिमैया तथा अन्य उच्चाधिकारी उन्हें बिदा देते हैं।

बिदा पूना!

दिन के बारह बजे हैं और तारीख २६ नवम्बर १९५५। हवाई जहाज नीचे उतर रहा है। सूरज की किरणों से जगमगाता और रंगबिरंगा सजा बँगलोर का 'हिन्दुस्थान एअर पोर्ट' साफ दिखलायी पड़ रहा है। हवाई जहाज से आदमियों की भीड़, मानों लाखों भूरे-भूरे चीटों का झुण्ड गरमी से बिलबिलाकर निकल पड़ा है। रजत शुभ्र लाल तारिका अंकित इल्यूसिन १४ यान अड्डे पर उतरता है।

अपार जनसमूह उमड़ पड़ा है। गगनभेदी जयजयकार और नारे गूँजते हैं। हजारों की संख्या में लाल हरी झण्डी लिये जनसमूह आगे बढ़ता है। पुलिस का घेरा है। आगे बच्चे। उसके पश्चात् जनता।

मैसूर के राजप्रमुख और मुख्यमन्त्री तथा मेयर श्री दीनदयाल नायडू

स्वागत करते हैं। पुष्प मालाएँ। श्रीक्रुश्चेव अत्यन्त प्रसन्न दृष्टिगत हो रहे हैं। हजारों लोगों के अभिवादन का उत्तर देते हैं। मार्शल बुलगानिन का हाथ पकड़ आगे बढ़ते हैं।

गगनभेदी जयजयकार गूँजता है। हिन्दी रूसी मैत्री के नारे।

लड़कियों का झुण्ड पुष्प-वर्षा करता है। आरती उतार कुंकम लगाती हैं। दोनों नेता प्रसन्नतापूर्वक महिलाओं को अभिवादन कर आगे बढ़ते हैं। चारों ओर से जनसमूह नेताओं को देखने के लिये टूटा पड़ रहा है। हवाई अड्डे से राजभवन तक जाने वाले इस आठ मील लम्बे रास्ते की दोनों पटरियों पर हजारों लोग खड़े हैं। छात्र-छात्राएँ आगे हैं। पूरा राजपथ खूब सजाया गया है। स्थान-स्थान पर तोरण द्वारों पर रूसी और भारतीय झण्डे फहरा रहे हैं। पथ के दोनों ओर पड़नेवाली अट्टालिकाओं की खिड़कियों पर, बारांडों पर महिलाओं के झुण्ड के झुण्ड है।

बँगलोर फूलों की नगरी। सैकड़ों मन पुष्प इस नगर से स्वागत के लिये अन्य नगरों को भेजे जा चुके हैं।

हवाई अड्डे पर परिचय दिया जा रहा है। अनेक अपङ्ग सैनिक भी कुर्सियों पर बैठकर स्वागत करने के लिये आये हैं। नेताओं को फिल्म अभिनेत्री देविकारानी और उनके पति प्रसिद्ध रूसी चित्रकार श्री एन० रौरिक का परिचय दिया जाता है।

सजी हुई खुली मोटर कार में अतिथि आगे बढ़ते हैं। गगनभेदी नारे। राजप्रमुख और मुख्यमन्त्री के साथ रूसी नेता। तालियों की गड़गड़ाहट। सैकड़ों कण्ठों के स्वागत-स्वर। पुष्प-वर्षा प्रारम्भ हो जाती है।

अनवरत पुष्प-वर्षा। पंखुड़ियाँ···लाल, पीली, सफेद पंखुड़ियाँ··· कदम कदम पर महिलाएँ पुष्प-वर्षा कर रही हैं। तोरण द्वारों पर खड़े बालक अँजुरी भर-भर कर पुष्प फेंक रहे हैं। स्वागत अतिथि। पुष्पों से कार भर गई है। जिधर देखिये उधर ही पंखुड़ियाँ·· जैसे रंगबिरंगी तितलियों का झुण्ड टिड्डी दल की नाईं आकाश में मँडरा रहा है। केले

और आम की पत्तियो से बने तोरण द्वार पार कर रहा है जुलूस। नेहरू तथा रूसी नेताओं के बड़े बड़े चित्र कई तोरण द्वारों पर झूल रहे हैं।

श्रीख़ुश्चेव परिहास करते हैं– "रूस का लौह आवरण तो हट चुका। अब हमारे और संसार के बीच यही पुष्पों का आवरण है!"

जयजयकार, पुष्प-वर्षा और अभूतपूर्व स्वागत को ग्रहण करता हुआ मोटरों का काफिला बढ़ रहा है। राजभवन तक ऐसा ही भव्य स्वागत।

(राजभवन में कुछ देर विश्राम के उपरान्त) रूसी नेता भारतीय विज्ञान संस्थान का निरीक्षण कर रहे हैं। प्रोफेसर के० श्री निवासन पूरी संस्थान का परिदर्शन करा रहे हैं। संस्थान में जर्मनी, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस सभी देशों के लोग पढ़ने आये हैं। सोवियत रूस से कोई नहीं।

श्रीख़ुश्चेव कह रहे हैं—"आप सब लोगों से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। दुःख का विषय है कि यहाँ पर सोवियत रूस से कोई नहीं है। अपने देश जाकर मैं इस बात का प्रयत्न करूँगा कि वहाँ से भी कोई यहाँ अध्ययन के लिये आ सके!"

वैज्ञानिक सी० पी० रमन द्वारा स्थापित इस संस्थान का निरीक्षण कर नेता प्रसन्न होते हैं।

प्रयोगशाला में दो लाख एम्पीयर्स की विद्युत धारा ५० माइक्रो सैकण्ड के लिये तारों के एक गुच्छे में प्रवाहित की गई, जिससे एक भीषण विस्फोट के साथ चिनगारियाँ छूटती हैं।

ख़ुश्चेव हँसकर कहते हैं—"इसे पलक झपकाए बिना देखिये, कितना आनन्द आता है। आप लोग तो चौंक गये। हम तो नहीं चौंके।"

मारगलेनिया ग्राण्डिफ्लारा में रूसी नेता अपने आगमन की स्मृति में दो पौधे लगा रहे हैं।

दोनों नेता इस अवसर पर संक्षिप्त भाषण देते हैं। जिसका आशय यह है कि भारत और रूस के बीच मैत्री कायम रहे तथा दोनों देशों के

बीच प्रगति सम्बन्धी विचारों एवं वैज्ञानिक बातों का आदान प्रदान होता रहे।

डाक विभाग का एक प्रमुख अधिकारी एक आवश्यक तार लाता है। क्रुश्चेव खोलते हैं और क्षमा याचना कर श्री बुलगानिन के साथ एकान्त कमरे में चले जाते हैं। कहते हैं, मास्को से आवश्यक सन्देश आया है और हमें विचार-विमर्श कर तत्काल उत्तर प्रेषित करना है। लगभग आध घण्टे के एकान्त परामर्श के पश्चात् दोनों नेता पुनः आ जाते हैं।

अब रूसी नेताओं का दल पलाहिगिरी हिन्दुस्थान मशीन टूल कारखाना देखने जा रहा है। मार्ग में खड़ी जनता स्वागत करती है।

डायरेक्टर श्री आफताबराय और कारखाने के श्रमिक स्वागत करते हैं। कारखाने की ओर से उपहार भी दिये गये हैं।

कारपोरेशन ग्राऊण्ड पर डेढ़ लाख से अधिक नर नारी जमा हैं। ऊँचा मञ्च, खूब सजा है। शक्तिशाली आर्क लैम्पों से पूरा मैदान जगमगा रहा है। रूसी नेताओं के आते ही जयजयकार होता है और दक्षिण के प्रसिद्ध 'नादस्वरम्' से स्वागत। कारपोरेशन अध्यक्ष श्री वी० पी० दीन-दयालु नायडू स्वागत करते हैं। मान पत्र पढ़ते हैं। विशाल जनसभा मैसूर के महाराजा की अध्यक्षता में हो रही है।

श्री बुलगानिन और श्रीक्रुश्चेव को मैसूरी पगड़ियाँ भेंट की जाती हैं। पहिन लेते हैं। बड़ी गगनभेदी हर्षध्वनि। श्रीबुलगानिन का भाषण अत्यन्त संक्षिप्त है। इसमें वह अपने स्वागत के लिये आभार प्रदर्शन करते हैं।

क्रुश्चेव बोल रहे हैं:—मित्रो, आज आप लोगों ने यहाँ मेरा जो स्वागत किया है, उससे मैं अत्यधिक प्रभावित हूँ। भारत के इस सम्मान के प्रति मैं सम्मान में नतमस्तक होता हूँ। हमारे भारत आगमन से पश्चिमी राष्ट्रों में खलबली मच गयी है। वह हम पर तरह तरह के आरोप लगा रहे है। अभी कल ही अमेरिकी पत्रों में यह समाचार छपा है कि रूस में

उद्‌जन बम का भीषण विस्फोट हुआ है। हाँ, सोवियट रूस ने अभूतपूर्व शक्ति सम्पन्न पारमाणविक अस्त्र का विस्फोट किया है।

रूस में हुए परमाणु बम विस्फोट के सम्वाद की मैं पुष्टि करता हूँ तथा यह बता देना चाहता हूँ कि परमाणु बम विस्फोट का तरीका भी सर्वथा नया था। सबसे कम परमाणु शक्ति द्वारा अधिकतम विस्फोट संभव हो सका है।

उक्त अस्त्र सोवियट रूस के शस्त्रागार में इसलिए सुरक्षित रखा है ताकि जो नये युद्ध का सूत्रपात करने की सोच रहे हों उन पर आतंक बना रहे।

सोवियत संघ पारमाणविक अस्त्रों का स्वयं पहले प्रयोग नहीं करेगा।

वैमानिक निरीक्षण द्वारा शस्त्रास्त्रों के नियन्त्रण के प्रस्ताव की मैं निन्दा करता हूँ। इससे शस्त्रास्त्र निर्माण की प्रवृत्ति को ही अधिक बल मिलेगा।

यदि पश्चिमी राष्ट्र, परमाणु तथा उद्‌जन बमों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाना नहीं चाहते, यदि वे परमाणविक अस्त्रों के प्रयोग न करने का वचन नहीं देते, तो हम लोग भी परमाणु तथा उद्‌जन बमों का निर्माण करने के लिए विवश हैं।

सोवियत रूस में हुआ पारमाणविक विस्फोट पिछले विस्फोटों से अधिक भयङ्कर था।

कल सोवियत रूस के समाचार पत्रों में उक्त विस्फोट का समाचार छपेगा।

मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि इस देश के लोग सोवियत रूस के सम्बन्ध में होने वाले झूठे प्रचारों से रञ्चमात्र भी प्रभावित नहीं हैं।

हमारा राष्ट्र भारत को यथाशक्ति पूरी सहायता देगा। इस बात का ध्यान रखकर कि आपका देश केवल संस्कृति, इतिहास और विचार के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि औद्योगिक एवं कृषि क्षेत्रों में भी सबसे ऊँचे स्तर का बने।

सोवियत रूस की जनता भारत की जनता को भाई की तरह मानती

है और उनका सम्मान करती है। स्पष्ट है यह सम्मान इसीलिए है कि न तो आप हमारे विरुद्ध किसी प्रकार का षड्यन्त्र रच रहे हैं और न हम लोग आप सबके विरुद्ध ऐसा कोई कार्य कर रहे हैं।

निरस्त्रीकरण के लिए हमारा प्रस्ताव बिलकुल स्पष्ट है। आप लोगों को विदित है कि हमने अपनी सशस्त्र सेना में ६ लाख की कमी कर दी है। फिनलैण्ड के अपने सभी सैनिक अड्डों को हमने समाप्त कर दिया। जनवादी चीन से हमने अपनी सेना हटा लीं और पोर्ट आर्थर के भी सैनिक अड्डे हमने भङ्ग कर दिये। हमने प्रस्ताव रखा कि पारमाणविक शस्त्रास्त्रों का प्रयोग रोक देना चाहिये। वस्तुतः उस पर प्रतिबन्ध लग जाना चाहिये। हमारा प्रस्ताव यह भी है कि परम्परागत शस्त्रीकरण कम कर दिया जाय तथा परमाणुशक्ति पर नियन्त्रण स्थापित किया जाय, लेकिन उसमें पश्चिमी देशों द्वारा यह शर्त लगा दी गयी कि जब तक दूसरे देशों पर विदेशी विमानों के उड़ने की बात मान नहीं ली जाती है, तब तक रूसी प्रस्ताव माने नहीं जा सकते। आप लोग अच्छी तरह समझ सकते हैं कि इस तरह का प्रस्ताव हमें, हमारी जनता को कैसे मान्य हो सकता है। तनिक सोचिये तो रूस पर अमेरिकी विमान मँडराने लगें और अमेरिका पर रूसी विमान चक्कर काटने लगें तो इसका परिणाम क्या होगा ऐसा होने पर सम्भव है कि एक देश का विमानचालक दूसरे देश के हवाई अड्डे, सैनिक और इसी तरह की बहुत सी बातों की जानकारी प्राप्त कर ले, उन्हें देख ले। मान लीजिए हमने दूसरे देश के किसी क्षेत्र का चित्र ले लिया और यह जान गये कि उस देश में हवाई अड्डे हमसे अधिक हैं, तो इसका परिणाम जैसा कुछ होगा, वह आप अच्छी तरह समझ सकते हैं, परिणाम यही होगा कि हम भी अपने हवाई अड्डों की संख्या बढ़ाने का निश्चय करेंगे और चाहेंगे कि दूसरे देश की संख्या के मुकाबले हमारे हवाई अड्डों की भी संख्या हो। ठीक यही बात अमेरिकनों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। उन्हें यदि पता चल जाय कि रूसियों

स्पष्टतः उन सारी बातों का परिणाम होगा शस्त्रीकरण की होड़ ।

हम लोग पश्चिमी देशों से यहाँ तक कह रहे हैं कि अगर आप परमाणु बमों को नष्ट करना नहीं चाहते हैं, अगर आप शस्त्रीकरण को भी कम करना नहीं चाहते हैं, तो भी हम लोगों को वचनों की मर्यादा का ध्यान रखते हुए इस प्रश्न पर विचार कर लेना चाहिए और इस बात पर राजी हो जाना चाहिए कि कम से कम इन ध्वंसास्त्रों का इस्तेमाल तो हम लोग नहीं ही करेंगे ।

हमारे इस अनुरोध का उत्तर भी मिल गया है कि इस प्रकार का वचन नहीं दिया जा सकता । पश्चिमी राष्ट्रों का कहना है कि हम लोगों (रूस) के साथ तथाकथित बराबरी दर्जा बनाये रखने के लिए इन ध्वंसास्त्रों का रहना बहुत जरूरी है इसलिये इस्तेमाल न करने का वचन नहीं दिया जा सकता। मैं पूछता हूँ कि तथाकथित बराबरी का क्या अर्थ है ? स्पष्टतः यह शस्त्रास्त्रों की होड़ है ।

प्रसंग को स्पष्ट करने के लिए मैं रूस की एक कहावत का हवाला देना चाहता हूँ, जो अंग्रेजी में भी प्रचलित है । कहावत का अभिप्राय यह है कि जब आपको रोम में रहना है, तो आपको सब काम रोमवालों के मुताबिक करना पड़ेगा । कहना मैं यह चाहता हूँ कि यदि पारमाणविक और उद्जन बमों पर रोक नहीं लगायी जाती है और प्रयोग न करने का वचन नहीं दिया जाता है, तो ऐसी दशा में हम भी वैसा ही करने को विवश होंगे । केवल इतना ही नहीं, हम लोगों को बड़े एवं शक्तिशाली परमाणु और उद्जन बम तैयार करने पड़ेंगे, जेट विमान बनाने पड़ेंगे और आधुनिकतम टेकनीक के दूसरे सामान भी निर्मित करने होंगे ।

इन शस्त्रास्त्रों के प्रयोग में हम अगुवा कभी न होंगे । हमें प्रसन्नता तो उस समय होगी जब शहरों और ग्रामों के लिए इन बमों का भी इस्तेमाल न हो । उत्तम यही होगा कि बिना प्रयोग के ही इन शस्त्रास्त्रों को समाप्त हो जाने दीजिए । इन बमों को उन लोगों की धमनियों पर प्रभाव

डालने दीजिये जो नया युद्ध शुरू करना चाहते हैं। ये शस्त्रास्त्र उनसे यह भी स्पष्ट कर दें कि वे नया युद्ध शुरू नहीं कर सकेंगे, क्योंकि अगर एक दिशा से महासमर प्रारम्भ होता है, तो उसका जवाब भी वैसा ही होगा। जनता के हितों का ध्यान रखते हुए हम लोग इस प्रकार के बमों को तैयार करने के लिए कर्तव्यबद्ध हैं।

पूरे विश्व में शान्ति स्थापनार्थ रूस अपना प्रयत्न जारी रखेगा। हमारे प्रयत्न में कभी शिथिलता न आयेगी। इस सिलसिले में हम अपनी शक्ति भर कुछ भी उठा न रखेंगे।"

लगभग ३५ मिनिट तक सारा जनसमूह स्तब्ध हो श्रीक्रुश्चेव के भाषण को सुनता है। रूसी और पश्चिमी राष्ट्रों के अखबारों के संवाददाता भाषण लिख रहे हैं (दुभाषिया के अनुसार इस उद्जन बम की शक्ति एक लाख टन सुनने में आयी, पर रूसी संवाददाता श्री यूरोविच इसे लाखों टन लिखते हैं)

श्रीक्रुश्चेव के भाषण के पश्चात् मैसूर के महाराजा जनता और अतिथियों को धन्यवाद देते हैं।

विशाल जनसभा समाप्त। सर्वत्र श्रीक्रुश्चेव के भाषण की चर्चा। सनसनी सी फैल गई है। रूसी नेता राजभवन लौट आये हैं। मैसूर के राजप्रमुख की ओर से स्वागत भोज का आयोजन। सारा राजभवन जगमगा रहा है। कोई २००० अतिथि उपस्थित हैं। इन्हीं अतिथियों के बीच मैसूर का प्रसिद्ध जम्बू हाथी रूसी नेताओं को ही जयमाल पहिनाता है।

भोज प्रारम्भ है। रूसी संवाददाता १३५ मिनिट तक रेडियो टेलीफून पर मास्को समाचार भेजता है।

भोज समाप्त।

समय काफी हो गया है। केवल एक कथाकली और भरतनाट्यम् नृत्य देखने के उपरान्त रूसी नेता विश्राम करने चले जाते हैं।

२७ नवम्बर १६५५ का सवेरा। बँगलोर हवाई अड्डे पर अतिथि विदा ले रहे हैं। प्रमुख अधिकारी, मुख्यमन्त्री, राजप्रमुख, महाराजा विदाई दे रहे हैं। हवाई अड्डे पर एक अधिकारी की पत्नी का तीन वर्ष का बच्चा रो रहा है।

"क्यों रो रहा है?"

"विमान में चढ़ना चाहता है!"

"ओह!"

रूसी सुरक्षा अधिकारी बच्चे को अपनी गोद में उठाकर ले जाता है और विमान में भीतर सब दिखलाकर उसे वापस ले आता है। चाकलेट देता है।

रूसी नेता विदा लेकर विमान में बैठ गये हैं।

विमान उड़ गया। विदा बँगलोर। फूलों के नगर विदा।

एक घण्टे की उड़ान के पश्चात् विमान कोयम्बटूर के पिलमेन्दु हवाई अड्डे पर। दिन के दस बजे हैं। हवाई अड्डे पर फिर वैसा ही जनसमूह उमड़ा है। स्वागत और नारे। नर-नारियों की भीड़। नारियल, सुपारी और मन्दिरों का शहर रूसी नेताओं का स्वागत कर रहा है। हवाई अड्डे पर सुसज्जित ६ हाथियों पर दस-दस फुट लम्बे रक्त ७ वर्णी मयूर पंखे हिल रहे हैं।

जहाज उतरा!

नेता बाहर आये तो पूर्ति मन्त्री श्री सन्मुगराजेश्वर सेठपुटीर उनका

स्वागत करने आगे बढ़ रहे हैं। स्वागत है। हाथियों की सूंड़ों से मालाएँ पहिनायी जाती हैं और हाथी उन्हें मयूर पंखे झल रहे हैं।

हवाई अड्डे से जनता का अभिवादन स्वीकार करते हुये २० हजार बच्चों द्वारा की गई पुष्प-वर्षा के बीच नेता आगे बढ़ रहे हैं। मद्रास के राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश तथा अन्य मन्त्रिगण भी जुलूस के साथ हैं। नगर सजावट और उल्लास से भरापूरा है। मालाएँ और बन्दनवार, लाल हरी झण्डियाँ···सर्वत्र स्वागत !

७ मील के इस पथ पर हजारों आदमियों की भीड़ एक के पश्चात् एक तोरण द्वार, स्थान स्थान पर पुष्प-वर्षा ! खुली जीप में अतिथि···

एक दुकान वाला आज "लेनिन ग्राड के लड्डू, स्टालिन चटनी, रूसी मसाल डोसा" बेच रहा है। सैकड़ों आदमियों की भीड़।

चिदाम्बरम् पिल्लई पार्क ! हजारों आदमी ! कोई एक लाख आदमियों की भीड़। पार्क स्वागत में सजा है। रूसी और तामिल भाषा में स्वागत। १२ फुट ऊँचे मञ्च पर नेताओं के आते ही हर्षध्वनि होती है।

म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष श्री रामलिङ्गम् चेट्टी माल्यदान करते हैं। तामिल भाषा में मान पत्र भेंट किया जा रहा है (मान पत्र समयाभाव के कारण पढ़ा नहीं गया)

स्वागत भाषण के उपरान्त श्री बुलगानिन भाषण देते हैं। उनके भाषण का आशय यही है कि रूस और भारत मित्रता की कड़ी में बँध गये हैं। एक मित्र का कर्तव्य है कि वह दूसरे मित्र के सुख दुख में काम आये। भारत की उन्नति के लिये एक मित्र की हैसियत से रूस पूरी पूरी सहायता देने को तैयार है। यह सहायता नहीं। एक मित्र के रूप में भारत का अपना अधिकार है !

भाषण का अनुवाद पहिले अँग्रेजी में होता है। फिर अँग्रेजी से तामिल में।

अपने स्वागत के प्रति आभार प्रकट कर श्री बुलगानिन कहते हैं:-- "हिन्दी रूसी भाई भाई..."

"........."

कोई उत्तर नहीं!

तत्काल श्री राजलिङ्गम् बोलते हैं—"हिन्दी रूसी...न...भारती रूसी सहोदर..."

"भारती रूसी सहोदर!"—बुलगानिन दुहराते हैं। बड़ी हर्षध्वनि होती है।

श्रीक्रुश्चेव अपने भाषण में कहते हैं-"हम सोवियत रूस के व्यक्तियों का मैत्री सन्देश लेकर यहाँ आये हैं। हमारा उद्देश्य अन्य देशों की मैत्री ठुकराकर भारत के साथ मित्रता करना नहीं है। आपने जनतन्त्री चीन से जैसी मित्रता की है, वैसी ही मित्रता हम आपसे करना चाहते हैं।"

दोनों नेताओं के भाषण संक्षिप्त हैं।

सभा के पश्चात् विश्राम के लिये राजभवन। [पहिली बार तीन घण्टे यहाँ विश्राम और नाई बुलाकर बाल कटवाते हैं।]

अब रूसी नेताओं का दल मोटर कारों पर उटकमण्ड की ओर रवाना होता है।

जुलूस बढ़ रहा है। ४७ मील लम्बा रास्ता पार करना है और इस लम्बे रास्ते पर सर्वत्र जनसमूह एकत्रित है। नारियल और सुपाड़ी के वृक्षों पर काम करने वाले श्रमिक, स्त्री पुरुष, बच्चे स्वागत के लिये खड़े हैं। जैसा बन पड़ा, वैसा स्वागत कर रहे हैं। शहर की सीमा समाप्त होते ही ग्रामों का मनोरम दृश्य! ठंडी हवा...नारियल के ऊँचे ऊँचे वृक्ष...नारियल यहाँ का कल्प-वृक्ष...सुपाड़ी के घने वृक्ष...कपास के खेत ही खेत... आकाश में मँडराते कपसीले बादल...जैसे प्रकृति भी स्वागत में सज-सँवर रही है।

अविनासी रोड, पामग्रोव रोड, देवङ्ग हाई स्कूल रोड। कपास का

फार्म। नेता उतरते हैं। कपास की खेती देखते हैं। उपकृषि मन्त्री श्री रसोलोव पूछते हैं:—"आप यहाँ कौन सी कपास का उत्पादन करते हैं और कितनी?"

"अमेरिकी कपास जो १५०० पौण्ड होती है!"—कृषक उत्तर देता है।

जुलूस आगे बढ़कर एक नारियल के फार्म को देखता है। यहाँ पर दोनों नेता अपने आगमन की स्मृति में नारियल के दो पौधे लगाते हैं।

नारियल काटकर पानी गिलास में उड़ेलकर दिया जा रहा है।

"ऐसे नहीं, उसमें ही।"—क्रुश्चेव कहते हैं और नारियल मुँह से लगा पानी पीते हैं। बुलगानिन से कहते हैं—"आप भी आनन्द लें।"

पानी पीने के बाद चम्मच से दोनों व्यक्ति नारियल का मुलायम गूदा खाते हैं। क्रुश्चेव कहते हैं—"यह बहुत अच्छा और स्वादिष्ट है। मुझे दुःख इस बात का है कि हमारे देश में नारियल नहीं होता!"

सब आगे बढ़ते हैं। मेट्टूपालायम रोड पर खड़ी जनता का अभिवादन स्वीकार कर सुपाड़ी के बगीचे में आते हैं!

ऊँचे ऊँचे सुपाड़ी के वृक्षों पर सुपाड़ी तोड़ने वालों की चढ़ने और उतरने की विचित्र कला देखते हैं। सुपाड़ी भी खाने को दी गई है।

श्रीक्रुश्चेव बुलगानिन से पूछते हैं—"क्या आप भी इतनी ही द्रुत गति से वृक्षों पर चढ़ सकते हैं?"

"चढ़ तो सकता हूँ, पर पहिले कम्युनिस्ट दल के महासचिव को पथ प्रदर्शन करना चाहिये!"

"अरे! आप तो मन्त्रिमण्डल के अध्यक्ष हैं। पहले आप! हम आपका पदानुसरण करेंगे!"

इस पर पड़ा क़हक़हा लगता है।

दल आगे बढ़ता है और यह रहा उटकमण्ड! शिशुपार्क में २ लाख नर-नारियों के द्वारा स्वागत संक्षिप्त। आयोजन के पश्चात् उटकमण्ड के राज

भवन में विश्राम और भोजन। भोजनोपरान्त रूसी नेताओं को पुनः बनारसी पान प्रस्तुत किया जाता है।

सबेरे हवाई अड्डे पर उपहार स्वरूप एक चित्र नेताओं को मिलता है। जिसमें नेहरूजी एक तकिया किसी व्यक्ति पर फेंक रहे हैं (यह चित्र गत कांग्रेस महाअधिवेशन के अवसर पर लिया गया था)

हवाई अड्डे पर एक बालक से श्रीक्रुश्चेव पूछते हैं—"तुम क्या बनना चाहोगे, बड़े होने पर ?"

"........."

बालक शरमा जाता है।

"सुनो, यही प्रश्न मैंने एक रूसी बच्चे से पूछा। जानते हो, उसने क्या कहा ?"

".........."

"उसने कहा कि वह ट्राम कण्डक्टर बनना चाहता है !"

हवाई अड्डे पर जनता और अधिकारियों तथा नेताओं से विदा लेकर अतिथि उड़ जाते हैं।

मद्रास २८ नवम्बर १९५५। मीनाम्बक्कम् हवाई अड्डा। भोर से ही हजारों की संख्या में नरनारी इकट्ठे हैं। पूरा हवाई अड्डा खूब सजाया गया है। पुलिस और मिलिट्री का घेरा। उटकमण्ड से रूसी नेता कोयम्बटूर लौटे और वहाँ से उनका जहाज आ रहा है।

राज्यपाल श्री प्रकाश, मुख्यमन्त्री श्री कामराज नाडार आदि उपस्थित हैं। १२ बजकर १५ मिनिट पर विमान उतरता है। हर्षध्वनि, जयघोष।

वाद्यों की आवाज। राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, अधिकारी, विधान सभा के सदस्य स्वागत करते हैं। बालिकाएँ पुष्प-वर्षा करती हैं।

स्वागत है अतिथि!

परिचय-समारोह के उपरान्त रूसी नेता खुली कार में राजभवन जाते हैं। ५ मील लम्बे राज मार्ग पर हजारों की संख्या में जनता इकट्ठी है। पुलिस की व्यवस्था ठीक नहीं है। स्थान स्थान पर घेरे टूट पड़े हैं और अनेक स्थानों पर मोटर रोक रोककर अतिथियों का स्वागत होता है। मालाएँ पहिनायी जा रही हैं।

सजावट भी कम है। कहीं कहीं तो अधूरे तोरण-द्वार हैं। यह देखिये! इस तोरण-द्वार पर अभी भी काम हो रहा है। कुछ मिलाकर सजावट बड़ी फीकी। आगे जाकर जनता की भीड़ भी कम हो गयी है। मद्रास शहर में, शहर के अनुसार यह स्वागत अत्यन्त फीका है।

राजभवन में ३ घण्टे विश्राम के उपरान्त रूसी नेताओं का कार्यक्रम प्रारम्भ। भारत के इस दौरे पर रूसी नेता जैसे अब थकावट महसूस कर रहे हैं।

पेराम्बूर स्थित रेल का डिब्बा तैयार करने वाला सरकारी कारखाना देखने जा रहे हैं। रास्ते में पुलिस का घेरा टूट गया है और जनता अतिथियों की कारों के पीछे दौड़ रही है। कारें भीड़ से घिर बड़ी कठिनाई से आगे बढ़ती हैं। मुख्य प्रशासक श्री के० सतगोपन तथा कारखाने के श्रमिक स्वागत करते हैं।

पूरा कारखाना देखने के पश्चात् श्रीक्रुश्चेव कहते हैं:—"मेरे विचार से इस कारखाने के निर्माण में बहुत सा इस्पात व्यर्थ नष्ट किया गया है। मेरी समझ से यदि आप लोगों ने इसके निर्माण में कंकरीट और इस्पात या कंकरीट और सीमेण्ट के मिश्रण की नयी विधि का प्रयोग किया होता तो इसमें लगा ८० प्रतिशत इस्पात बच जाता।"

७ करोड़ रुपये की लागत से बने इस कारखाने में ६५०० टन इस्पात लगा है।

"इस तिमञ्जिली इमारत को हम लोग एक मञ्जिल और बढ़ाना चाहते हैं।"

"यदि इसे आप ३ मञ्जिल और बढ़ायें तो भी सीमेण्ट और कंकरीट का भवन इसके लिए पर्याप्त मजबूत होगा। रूस में भी शुरू में भवनों के निर्माण में इस्पात का बहुत प्रयोग किया जाता था किन्तु अब वहाँ इसके लिए कंकरीट और सीमेण्ट का प्रयोग किया जाता है।"

श्रीसतगोपन—"भारत अभी भी पूर्वावस्था में है। पहले यहाँ भी पुलों का निर्माण इस्पात से होता था किन्तु अब अधिकतर पुल कंकरीट और सीमेण्ट से बनने लगे हैं।"

श्री एस० मूर्ति मुख्य इँजीनियर—"निर्माण में समय की बचत के लिए ही इस्पात का प्रयोग किया गया है क्योंकि कंकरीट से कारखाना बनाने में बहुत समय लगता।"

क्रुश्चेव—"मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ। हम लोग ऐसी फैक्टरियाँ कंकरीट से भी बहुत जल्दी बना लेते हैं।"

मूर्ति—"इस फैक्टरी में लगे इस्पात के सामान कुछ कारखाने में तैयार हुए हैं और कुछ निर्माण स्थल पर।"

क्रुश्चेव—"पहले रूस में भी यही होता था। आपके तर्क हमारे लिए कोई नये नहीं हैं, मैं अपने देश में भी यह सुन चुका हूँ। इन पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

मूर्ति—"मैं रूस नहीं गया हूँ।"

क्रुश्चेव—"आप रूस आइए, हम लोग अपने कारखाने दिखायेंगे। आप लोग हमारी आलोचना से निराश मत होइएगा। मैंने यह सब इसलिए कहा है कि रूस में भी हम लोग अपने कारखानों की इसी प्रकार

आलोचना करते हैं। आपकी प्रगति के लिए ही मैंने यह मैत्रीपूर्ण आलोचना की है।"

अब रूसी नेता बच्चों की एक रैली में भाग लेते हैं। और अब आइस-लैंड ग्राउँड में एक विशाल जनसभा में उपस्थित होते हैं। जनसभा में जाते समय वर्षा होती है। श्री प्रकाश मोटर का हुक उठाने कहते हैं, पर क्रुश्चेव रोक देते है—"भींगने दीजिए। हमारे लिये वहाँ खड़ी जनता भी तो भींग रही होगी।"

मोटर का परदा नहीं उठता। कुछ देर बाद वर्षा रुक जाती है। स्वागत समारोह के उपरान्त दोनो नेता भाषण करते हैं। भाषण का पहिले अँग्रेजी में अनुवाद होता है और फिर तामिल अनुवाद कृषिमंत्री श्रीभक्तवत्सलम् करते हैं।

श्री बुलगानिन ने कहा—"मित्रो, इस प्राचीन भारत भूमि की सीमा में गोवा का पुर्तगाली बस्ती के रूप में बना रहना अन्याय है।

भारत भूमि में पुर्तगाली बस्ती का बना रहना भारतीयों के लिए लज्जाजनक है।

सोवियट रूस की जनता की सहानुभूति सदा से उन गोवावासियों के साथ रही है, जो उपनिवेशवाद तथा उसके अवशेषों के विरुद्ध संघर्षरत हैं।

भविष्य में भी हमारी सहानुभूति सदा गोवावासियों के साथ रहेगी।

कतिपय यूरोपीय देशों में समय की गति पहचानने की क्षमता का पूर्ण अभाव है। ये यूरोपीय देश यह समझ ही नहीं पाते कि अब दुनिया उपनिवेशवाद की ओर लौट नहीं सकती। एशिया की जनता आज नया मोड़ ले रही है। यद्यपि सदियों पहले से ही विदेशी दासता के विरुद्ध उसका संघर्ष प्रारम्भ हो गया था। आज उपनिवेशवादी सत्ताओं का अस्तित्व मिट रहा है और इस प्रकार मिट रहा है कि पुनः वह सिर न उठा सकेगा। ऐसे समय भी यूरोप के कतिपय देश समय की गति पहचानने में असमर्थ हो रहे हैं। स्थाई शान्ति की स्थापना और उसकी सुरक्षा के लिए उद्योग-

रत रहना ही वर्तमान में भारत और एशिया के जन-समाज का मुख्य कार्य है।"

श्री क्रुश्चेव भी मार्शल के समर्थन में संक्षिप्त भाषण करते हैं और इस समारोह में रूस के सांस्कृतिक विभाग के मन्त्री श्री मिखाइलोव भी भाषण करते हैं। उन्होंने श्री बुलगानिन, श्री क्रुश्चेव तथा रूसी प्रतिनिधि-मंडल के अन्य सदस्यों की ओर से भव्य स्वागत-व्यवस्था के लिए कृतज्ञता प्रकट की और कहा—"भारत में यात्रा करते समय हम लोगों ने बहुत सी दिलचस्प और शालीन वस्तुओं का अवलोकन किया। इस अवधि में हमने यहाँ की जनता को देखा तथा आश्चर्य में डाल देने वाली कलाओं को देखा, किंतु हमें सबसे आश्चर्यजनक चीज प्रतीत हुई उद्योगशील और प्रयत्नरत भारतीय जनता और उसके उत्साहपूर्ण बच्चे। सोवियट रूस के युवकों के हृदय में भारतीय युवकों के प्रति सच्चा अनुराग है और वे उत्सुकता के साथ आपको सफलता की मंजिल तक बढ़ते देख रहे हैं। मैं पुनः इस बात का आश्वासन दे देना चाहता हूँ कि हमारे देश का युवक आप लोगों का विश्वासी और सच्चा मित्र समुदाय है।"

समारोह के अन्त में आतिशबाजी भी होती है।

रात्रि को राजभवन में एक प्रतिभोज दिया जाता है। इस भोज में श्रीक्रुश्चेव, राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी और नगर निगम के मेयर एम० ए० चिदाम्बरन् को रूस आने का निमन्त्रण देते हुये कहते हैं:—"मास्को आने के लिए मौसम के विचार से जून का महिना सबसे बढ़िया होगा। सम्मान-सूचक प्रतिभोज के लिए, मैं आभार प्रकट करता हूँ। हमारी अभिलाषा है कि आप लोगों में से और अधिक लोग हमारे देश में आयें। हमारे विचारों से सहमत-असहमत प्रत्येक व्यक्ति को हम निमन्त्रित करते हैं। आप लोग हमारे यहाँ अवश्य पधारें। वास्तव में हम लोगों ने अब तक जो कुछ कर लिया है, उसे सब लोग पसन्द नहीं करते। हम ऐसी आशा भी नहीं करते कि हम लोगों द्वारा तैयारकर रखे

गये समाज को सब लोग पसन्द करेंगे ही। कुशल से कुशल रसोइया भी सबकी सन्तुष्टि का व्यञ्जन नहीं तैयार कर सकता। इसी प्रकार रूस के बदले हुए पूरे स्वरूप और जीवन स्तर को लोग पसन्द कर सकते हैं और कुछ लोग नहीं भी। हमारी समस्याएँ अलग हैं और इसी तरह आपके सामने भी समस्याएँ हैं, लेकिन मेरा व्यक्तिगत मत है कि समस्या के समाधानार्थ विशाल और छोटे पैमाने के उद्योगों में उचित अंशों तक सन्तुलन स्थापित होना चाहिये। उन्नत जीवन स्तर हम उद्योगीकरण के जरिये ही ला सकते हैं। उद्योगीकरण के बिना ४० करोड़ जनता को भोजन, वस्त्र और जीवनोपयोगी अन्य वस्तुओं को जुटाना असम्भव है। यह सुझाव मित्रवत् ढङ्ग से आप लोगों को दिया है; यह जानते हुए कि अपने अनुकूल मार्ग ही आप सब चुनेंगे।"

श्री बुलगानिन कहते हैं—"हमने तथा श्रीक्रुश्चेव ने यहाँ रेलवे का डब्बा बनाने वाला कारखाना देखा है जो इस सुन्दर नगर की सांस्कृतिक एवं औद्योगिक प्रगति का मूल्याङ्कन करने की दृष्टि से पर्याप्त है।

रूसी प्रधान मन्त्री स्वागत के लिए आभार व्यक्त करते हैं। आगे आप कहते हैं कि आज रूस की जनता शान्ति के लिए जितनी आतुर है, उतनी ही आतुर भारतीय जनता भी है। दोनों देशों की जनता की यह समान भावना ही सबसे महत्व की बात है।"

समारोह में राज्यपाल श्रीप्रकाश भी भाषण करते हैं।

प्रातःकाल ८॥ बजे राजभवन से प्रस्थान करते समय रूसी नेताओं को गाँधी टोपी और अङ्गवस्त्र भेंट किये जाते हैं। मस्तक पर तिलक लगाया जाता है। राज्यपाल श्रीप्रकाश को एक टेपरिकार्डिंग मशीन और मुख्य मन्त्री नाडार को ग्रामोफोन मशीन रूसी नेता भेंट करते हैं।

वर्षा होने के कारण अतिथि बन्द मोटरकार में हवाई अड्डे पर आये हैं।

९ बजे वायुयान उड़ता है। विदा मद्रास! विदा दक्षिण भारत।

२६ नवम्बर १६५५। दिन के दो बजे। दमदम हवाई अड्डा! पूरा मैदान नववधू-सा शृङ्गार किये हुये है। बड़े बड़े रूसी और भारतीय झण्डे फहरा रहे हैं। लाल हरी झण्डियों और पुष्प मालाओं की झालरें। दक्षिण की ओर १२ फुट ऊँचे मञ्च पर झण्डे फहरा रहे हैं जिसे बड़ी ही सादगी से सजाया गया है। हवाई जहाज रुकने के स्थान से लेकर मञ्च तक आने के रास्ते पर बड़ी बड़ी लाल दरियाँ बिछी हैं। चारों ओर पुलिस, मिलिट्री के घेरे में अपार जनसमूह खड़ा है। नरमुण्ड ही नरमुण्ड'''जैसे सागर नरमुण्डों से पाट दिया गया है। रह रहकर लाल हरी झण्डियों की लहरें उठती हैं और रह रहकर नारे गूँजते हैं। गगनभेदी नारे!

चमका जहाज!

भीड़ का रेला। लगा कि पुलिस और मिलिट्री का घेरा टूटने को है, पर सम्भल गया। मानव समुद्र हवाई अड्डे में पिल पड़ना चाहता है। हर्षध्वनि और नारों से आकाश काँप रहा है।

हवाई जहाज जमीन छू रहा है। रुकता है। तत्काल डा० विधान चन्द्रराय, चीफ सेक्रेटरी श्री एस०एन० रे स्वागत कर मालाएँ पहिनाते हैं।

दक्षिण भाग में विशेष रूप से एक घेरे में अवरुद्ध विधान सभा के सदस्यों, अधिकारियों और जन नेताओं की ओर सम्मानित अतिथि जा रहे हैं। उन्हें देखकर एकत्रित जनसमूह उल्लास से भर, बार बार नारे लगा रहा है। डा० राय उपस्थित व्यक्तियों का परिचय दे रहे हैं।

और बज रहा है भारत का राष्ट्र गीत!

सोवियत रूस का राष्ट्र गीत!

कूच की आवाज !

धत्तर धत्तर धत्तर धत्तर धा धा धुत्त धुत्त धत्तर धत्तर धत्तर !

गार्ड आफ आनर ! चली आ रही है तीसरी बटालियन की ५ वीं गोरखा-राइफल, मार्शल को सैल्यूट देती हुई ।

मञ्च पर आये हैं रूसी नेता ! डा० राय साथ हैं । उन्हें देखते ही कानों के परदे चीर देने वाला शोर उठता है । जिन्दाबाद और स्वागत के नारे ! मैदान के चारों ओर इतना बड़ा जनसमूह खड़ा है कि इससे पहले इतनी बड़ी भीड़ यहाँ कभी न हुई थी ।

डा० राय कहते हैं:—"अपनी ओर से, कलकत्ता के समस्त नागरिकों और पश्चिम बङ्गाल की जनता की ओर से आप सबका मैं यहाँ स्वागत करता हूँ । कलकत्ता ऐतिहासिक महत्व की नगरी है । १८ वीं सदी में ब्रिटिश राज्य का अभ्युत्थान इसी नगरी से हुआ । इस नगरी के आस-पास ही जूट मिलें, कपड़े की मिलें और पटसन के कारखाने हैं, जो आज स्वतन्त्र भारत के निर्माण में योग दे रहे हैं । लगभग १५० बरसों तक यह नागरी भारत की राजधानी रही है और आज भी इसका कम ऐतिहासिक महत्त्व नहीं है । एक प्रकार से यह नगरी पश्चिम बङ्गाल की नाड़ी है । महान रूस की तरह इस नगरी ने उन्नति नहीं की, फिर भी हमारा प्रयत्न जारी है कि रूस के महान नगरों की तरह हमारी नगरी भी बने । आप लोग एक लम्बी यात्रा पर भारत देखने आये हैं । अब तक आप लोग न केवल भारत की राजधानी ही देख चुके हैं बल्कि महत्त्व के अनेक नगरों का भ्रमण कर चुके हैं । उत्तर दक्षिण पूर्व आप देख चुके हैं । यह पश्चिम है और पश्चिम की अपनी संस्कृति अलग है । फिर भी वह भारतीय संस्कृति का एक अङ्ग है । हम इस नगरी में आपके आगमन के लिये आप सबको अनन्त धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि अपनी अल्पकालीन यात्रा में आप यहाँ सुख का अनुभव करेंगे ।"

शान्त खड़ी जनता पचासों लाउडस्पीकरों पर भाषण सुन रही है। जैसे ही मार्शल बोलने के लिये आगे बढ़ते हैं, वैसे ही फिर हर्षध्वनि होती है। लाल हरी लहरें मानव समुद्र में उठती हैं। मार्शल देखते हैं। इतनी बड़ी भीड़ उन्हें देखने के लिये, अब तक किसी भी हवाई अड्डे पर एकत्रित न हुई थी।

मार्शल बुलगानिन कहते हैं—"मित्रो, बङ्गाल की इस धरती पर उतरते हुये मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इसी बङ्गाल ने स्वतन्त्रता के युद्ध में बड़ा योगदान किया है। साथ ही भारत की आर्थिक सामाजिक उन्नति में भी इस धरती का प्रमुख हाथ रहा है। अपने यान से हमने आप लोगों के हरे भरे खेतों, धुँआ उगलता चिमनियाँ, कारखाने देखे हैं और शान्त गाँव, चहल-पहल भरे शहर को देखा है। बङ्गाल की इस स्वर्णिम भूमि के दर्शनकर हम प्रसन्न हुये हैं। आप लोगों के साथ साथ हमें भी इस बात की खुशी है कि आप इस भूमि के मालिक हैं और आप सब लोग अपनी मातृभूमि की उन्नति के लिये सतत प्रयत्नशील हैं। सोवियत रूस की महान जनता की ओर से उनकी सारी शुभ कामनाएँ, जिन्हें मैं लाया हूँ, आपको भेंट करता हूँ। सोवियत रूस की महान जनता की आँखें आप पर लगी हैं। आइये, हम भारत और सोवियत रूस की मैत्री दृढ़ करें। हिन्दी रूसी भाई भाई!"

गड़ गड़ गड़ गड़ गड़ गड़!! तालियों गड़गड़ाहट। आकाश-कंपी जय ध्वनि!

मञ्च से उतर अतिथि मोटर पर आये हैं। मोटर की सीटें रक्तवर्णी हैं। सात व्यक्तियों के बैठने का स्थान। मार्सीडिस बेंज जर्मन मोटरगाड़ी।

आगे पुलिस से भरी मोटरगाड़ी, फिर पुलिस की वायरलैस मोटर, फिल्म कैमरामैनों की मोटर, पाइलट गाड़ी, अब सोवियत नेता, बीच में डा० राय! उनके दोनों ओर हुड पर मार्शल और क्रुश्चेव, मुख्यमन्त्री की कार, मोटरकारों में सोवियत के अन्य व्यक्ति, तीन स्टेट बसों में रिपोर्टर,

फिर चीफ सेक्रेटरी की मोटर, पुलिस इन्स्पेक्टर जनरल की कार, मोटर साइकलों पर पुलिस कमिश्नर और कुछ पुलिस अधिकारी! इस क्रम से हवाई अड्डे से अतिथि राजभवन की ओर बढ़ते हैं।

सड़क पर हैं। दोनों ओर से मानव समुद्र उमड़ा पड़ रहा है। अपार ....नरमुण्ड ही नरमुण्ड! तालियों की गड़गड़ाहट, जयध्वनि, नारे, तोरण द्वार, पताकाएँ। अट्टालिकाओं से पुष्प-वर्षा, धुत्तू धुत्तू धुत्त धुत्तू धुत्त... स्थान स्थान पर बारजों पर खड़ी महिलाओं की शंख-ध्वनि...

"मार्शल बुलगानिन..."

"जिन्दाबाद!"

"भारत सोवियत मैत्री..."

"जिन्दाबाद"

"हिन्दी रूसी"

"भाई! भाई!"

हजार हजार कंठों से जयध्वनि! वह गये मार्शल! यह उमड़ा जनसमूह! अतिथि अत्यन्त प्रसन्न हैं। हाथ हिला हिलाकर जनता के अभिवादन का उत्तर दे रहे हैं। जुलूस व्यवस्थित ढंग से बढ़ता जा रहा है। रास्ते भर लाल हरी झण्डियाँ, नाना प्रकार के तोरण द्वार, झण्डे, और नेताओं के चित्र! अनेकों मकानों पर "हाऊसफुल" के साइनबोर्ड। यह देखिये इस एक वृक्ष पर पचीसों आदमी। उस मकान की छत देखिये...एकदम ठुँसे खड़े हैं, नरनारी, बच्चे...

कोई १० लाख से ऊपर जनता केवल इसी सड़क पर है। केवल थोड़ा ही चार पाँच हाथ का स्थान, मोटर जाने के लिये है, बाकी सब मनुष्यों से भरा है। पुलिस काडॅन भङ्ग। कोई व्यवस्था नहीं। कानों के परदे फट रहे हैं। अपार मानवसागर को चीरता हुआ जुलूस जा रहा है। हर्षविह्वल हैं अतिथि! कैमरामैनों की अँगुलियाँ तेजी से काम कर रही हैं। इतनी बड़ी

भीड़ कलकत्ता के इतिहास में कभी नहीं देखी गयी। रूसी कैमरामैन चकित है। अमेरिकन रिपोर्टर दंग है—"नेवर इन माई लाइफ आई हैव सीन सच ए ग्रेट क्राउड दो आई हैव बीन इन हंड्रेड्स आफ प्रोसेशन्स···" वह कह रहा है।

जय ! जय ! जय !!

गड़गाड़ गड़गाड़···

होय !! होय ! होय !! हो ! हो !!

"मार्शल बुलगानिन"

"जिन्दाबाद !"

"हिन्दी रूसी भाई ··भाई···"

"भाई भाई !"

प्रत्येक तोरण द्वार खूब सजा है। एक से एक कलात्मक ऊँचे ऊँचे तोरणद्वार ! प्रत्येक मकान पर खूब सजावट। रूस और भारत के झंडे-झंडियाँ और पुष्पों की मालाएँ। बिजली के बल्वों की मालाएँ, रंगे हुये डाक डिब्बे, फिर से रंगे गये रास्ते भर के लाइट-पोस्ट, रवि, सोम, मंगल, तीन दिन और तीन रात लगातार सैकड़ों मनुष्यों ने यहाँ तैयारियाँ की हैं। सड़कों पर रंगबिरंगे चौक पुरे हैं। स्वागतम्, स्वागत लिखा हुआ है।

२॥ बजे हवाई अड्डे से चला जुलूस, लाखों व्यक्तियों के स्वागत के बीच अब बेलगाछिया पुल के पास है।

हेय ! हेय ! हेय !

ओह ! गजब ! यहाँ तो तिल रखने की जगह नहीं। मोटरकार के निकलने का भी रास्ता नहीं। नर नारी, बच्चे बुरी तरह से ठुँसे खड़े हैं। सारा रास्ता उत्सुक जनता से ठसाठस है। गति धीमी। घर घर से शंख ध्वनि ! उलु उलु उलुलु। बंग-वासियों की विशेष हर्षध्वनि ! सारा वातावरण उल्लास से भरा है !

रूसी नेता देखते हैं। उनका ऐसा स्वागत कभी न हुआ था और शायद न हो सके! मोटर से देखिये…जिधर देखिये उधर मनुष्य ही मनुष्य…लाखों मनुष्य…ट्राम की छतों पर, बस की छतों पर, वृक्षों पर यहाँ तक कि लाइटपोस्टों पर मनुष्य, जैसे किसी को अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं।

हर्ष विह्वल बुलगानिन जोर से चीखते हैं—"भाई भाई…"

"भाई। भाई!"—जनसमूह गला फाड़कर उत्तर देता है।

डा० राय के माथे पर घबराहट और चिन्ता की रेखायें। इतनी विकट भीड़ देखने का, पार करने का पहिला मौका! क्या हो? मोटरगाड़ी बढ़ रही है, धीरे धीरे!

डा० राय कहते हैं—"राजभवन तक आपको भाई भाई सुनने मिलेगा। सब अपने बुलगानिन भाई को देखने आये हैं!"

"ठीक है। बङ्गाली भाइयों का मैं अभिनन्दन करता हूँ!"—मार्शल कहते हैं।

बुलगानिन देख रहे हैं, कुरुक्षेत्र देख रहे हैं…कैसा अपार स्वागत कितना बड़ा जनसमूह…

श्यामबाजार के पचराहे तक जुलूस निर्विघ्न आ गया है। मिशन रो एक्सटेंशन की ओर जुलूस बढ़ रहा है। बच्चों का झुण्ड कबूतर उड़ाता है। गैस के गुब्बारे, रूसी झण्डे लटकाये उड़ते हैं। सैकड़ों गुब्बारे।

हो! हो! हो!! हो!!

गड़गड़ गड़गड़गड़!!

अपर सरकुलर रोड! भीड़ का दबाव प्रतिपल बढ़ रहा है। यहाँ तो और भी विकट जनसमूह है। बच्चे पीछे पड़ गये हैं। एक के ऊपर एक आदमी ठेलमठेल कर रहे हैं। पुलिस का घेरा टूट चुका है। पैर रखने का भी स्थान नहीं। रुक रुक कर जुलूस बढ़ रहा है। मार्शल की कार आगे, शेष कारें जुलूस में फँस गई हैं। विवेकानन्द रोड तक यही स्थिति है।

चीन की दीवार की भाँति जनसमूह की दीवार आगे आकर रास्ता रोक लेती है। बड़ी मुश्किल से कार निकल पाती है। कार पर मनुष्य गिरे पड़ रहे हैं। इञ्च इञ्च कार बढ़ रही है। इञ्जिन गर्म हो रहा है। फट! फट!! फट!! इञ्जिन फट पड़ने को है। मानव समुद्र, मानों अतिथियों को अपने में ढँक लेना चाहता है।

जनता का विशाल, ऐतिहासिक, अविस्मरणीय स्वागत। मार्शल चिल्ला उठते हैं—"भाई भाई···"

"भाई भाई!"

गगन काँपता है। भीड़ टूटती है।

मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट। जनसमूह—"भाई भाई···"

"बुलगानिन क्रुश्चेव···"

"············"

"भाई भाई···"

नेता हाथ जोड़ नमस्कार करते हैं और पुकारते हैं—"भाई भाई···"

उत्साही जनता टूट पड़ी। मोटरकार घिर गयी। अनेक उत्साही युवक, बूढ़े, बच्चे, कार पर चढ़ आये। बुलगानिन से हाथ मिला रहे हैं। एक के बाद एक। मोटर के मडगार्ड पर, पहियो पर, हुक पर, पाँवदानों पर मनुष्य चढ़ आये हैं। मोटर कार के पीछे रखा पहिया टूट गिरा है। प्राणो की परवाह किये बिना ही लोग मोटर पर चढ़ आये।

६ मील तक का रास्ता पार हो गया है। अब आगे बढ़ना मुश्किल है।

जुलूस भङ्ग। नित्यानन्द कानूनगो की कार, एक और कार, तथा पत्रकारों की बस खराब हो गई। मनुष्यों की भीड़ से दब दब कर मोटर कारें क्षतिग्रस्त···मडगार्ड, हुक टूट गये। मार्शल की कार आगे है। शेष पीछे हैं। जनसमूह से घिर गये वह। व्यापक पुलिस, मिलिट्री, स्वयंसेवकों का पहरा, व्यवस्था, कार्डन, सब भंग!

मार्शल की कार पर लोग टूटे पड़ रहे हैं।

डा० राय घबड़ा गये। अब क्या हो!

इञ्जिन गर्म है।

फट! फट! फट! फट्ट!!

कार के आगे, पीछे, चारों ओर अपार जन समुद्र···क्या हो?

जय! जय! जय!!

हो! हो!! हो!!

"मार्शल बुलगानिन···जिन्दाबाद···"

"हिन्दी रूसी····"

"भाई भाई··"

आनन्द से जैसे जनता पागल है। अब क्या होगा? डा० राय घबड़ा गये हैं! क्या कलकत्ता की इस भीड़ में अतिथि चपेट दिये जाँयगे। नौबत यही है! कभी कल्पना न थी कि ऐसी भीड़ होगी। हे भगवान···

जय! जय!! जय!!

हो! हो!!

"हटो, हटो···सोरे जाव····सोरे जाव···ओ रा···की कोच्नो···" डा० राय स्वतः चीख रहे हैं, पर मनुष्यों का कार पर चढ़ना बन्द नहीं हो रहा है।

वह रही पुलिस की वायरलेस गाड़ी!

डा० राय का हाथ हिला। मनुष्यों को ठेलती हुई गाड़ी पास आयी।

फट! फट! फटा फट! फट्ट!

जर्मन मार्सिडिज गाड़ी का इञ्जिन फेल!

पुलिस की बन्द वायरलेस मोटरकार में डा० राय किसी प्रकार स्वयं लोगों को ठेलते हुये नेताओं को बैठाते हैं। फिर बड़ी मुश्किल से स्वयं बैठते हैं।

"गाड़ी चालिये देव · जा किछु होक···चाहिये देव···

और कार दौड़ती है। बन्द कार! हो! हो!! हो!! आगे किसी को नहीं मालुम कि इसी में सोवियत नेता बन्द है। बन्द कार बड़ी मुश्किल

से राजभवन तक आ पाती है। स्थान स्थान पर रुकती हुई। गनीमत कि किसी को ज्ञात नहीं, वरना जुल्म हो जाय!

पूरे दो घण्टे बाद रूसी नेता राजभवन के फाटक पर। ग्यारह मील का रास्ता दो घण्टे में।

"खोले दाव!"

"........."

"डा० राय आसेन"

फाटक खुला। चले गये नेता! निर्विघ्न! संतोष की साँस!

और बाहर सड़कों पर रूसी दल के लोगों को ही मार्शल और क्रुश्चेव समझकर लोग नारे लगा रहे हैं! बड़ी मुश्किल से सब राजभवन आ रहे हैं।

कलकत्ता के राजपथ की बुरी दशा है। अजीब गोलमाल चारों ओर मचा है। तीन मील के रास्ते पर लोग ज्यों के त्यों खड़े हैं।

"ओह! ऐखुन गेलो ना!"

"कोय! ओई जे आश्चे···"

"हुर्रा! हुर्रा! होय! होय!!"

लाउडस्पीकर लगाये पुलिस की मोटर घूम रही है।

"मार्शल बुलगानिन, श्रीक्रुश्चेव राजभवन पहुँच गये हैं और उनके स्वागत समारोह में होने वाला नृत्य तथा औजार बनाने वाला कारखाना (टेक्समेक्सो) और आँकड़ा प्रतिष्ठान देखने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है! आप लोग शान्तिपूर्वक लौट जाँय! कल जनसभा में उपस्थित हों!"

पुलिस के इस प्रचार का कोई प्रभाव नहीं।

कोई एक लाख जनता की भीड़ राजभवन घेरे है। रह रहकर जयध्वनियाँ गूँज रही हैं और प्रत्येक फाटक पर भीड़ का दबाव बढ़ता जा रहा है। कलकत्ता ही नहीं, आसपास के शहरों, भागलपुर, उड़ीसा

तक के लोग आये हैं। १४ सियालदहा से और २३ हावड़ा से स्पेशल ट्रेनें दौड़ी हैं और हर ट्रेन में हजार-हजार की भीड़ कलकत्ता उतरी है।

नृत्य और गीत में भाग लेने वाले कलाकारों की कारें भीड़ में बढ़ ही नहीं पाती हैं। एक ऐसी अराजकता सी फैली है, जिसमें कोई उग्र प्रदर्शन नहीं।

मार्शल इच्छा व्यक्त करते हैं, वह जनता के सामने जाँय, जनता को निराश नहीं करना चाहते, पर पुलिस कमिश्नर कहते हैं:—भीड़ बहुत विशाल है। एक आदमी का भी बढ़ सकना मुश्किल है।"

राजभवन के बाहर खड़ी जनता के नारे, जयध्वनियाँ गूँज रही हैं।

रात दस बजे तक जनसमूह से राजभवन घिरा रहता है। सोवियत नेताओं के अन्य सारे कार्यक्रम भीड़ के अपार दबाव के कारण कैंसिल।

जय! जय!! जय!!

अभी भी जयध्वनियाँ गूँज रही हैं। सड़कों पर अभी भी हजारों आदमी खड़े हैं, मँड़रा रहे हैं। किसी प्रकार सोवियत नेताओं की एक झलक देखने मिल जाय!

नीलरतन सरकार हास्पिटल में ४ महिलाएँ १० पुरुष बेहोशी की हालत में पड़े हैं। आर. जी. कर अस्पताल में १६ व्यक्ति, जिनमें ८ बच्चे हैं, बेहोश पड़े हैं। चितरंजन मोड़ पर ८ व्यक्ति घायल हुये हैं, जो मेडिकल कालेज में हैं।

ऐसा अपार स्वागत, अपार भीड़! अपार उत्साह!! कलकत्ते में कभी नहीं देखा गया।

प्रातः कालीन किरणों के प्रखर होते ही अतिथि राजभवन से हावड़ा जूट मिल्स की ओर चले''''सड़कों पर फिर भीड़''''पर कल जैसी धकम-

धुक्का नहीं, खुली कार आसानी से बढ़ती जा रही है। दोनो नेता अपने स्ट्रा हैट्स् हिला हिलाकर अभिवादन स्वीकार कर रहे हैं।

हावड़ा जूट मिल्स का प्रवेश द्वार!

३ लाख से अधिक श्रमिकों का विशाल झुण्ड, ३ लाख कंठ पुकारते हैं—"मार्शल बुलगानिन, जिन्दाबाद!"

पुष्प-वर्षा! स्वागत! श्री जे. पी. बैल, मिल-मैनेजर स्वागत करते हैं। डा० राय मिल के डायरेक्टरों का परिचय नेताओं को देते हैं। आइये देखिये! भारत की यह सबसे बड़ी जूट मिल। यह कताई विभाग, यह बुनायी विभाग! सैकड़ों श्रमिक ताली बजा रहे हैं। बड़ी बड़ी दैत्याकार मशीनें…श्रीक्रुश्चेव मगन हैं। मशीनों से विशेष प्रेम है! मानव कितनी तेजी से मशीन बनता जा रहा है!

मिल देखकर अतिथि श्रमिकों के बच्चों के बीच आते हैं। बच्चे स्वागत करते हैं। एक बालिका माला पहिनाती है और कुछ बच्चे एक बोरे में गुलाब के फूल भरकर नेताओं को देते हैं।

"नमस्कार!"

"नमस्कार!"

बच्चों के इस स्वागत से अतिथि हर्ष विह्वल! आगे खड़े दो बच्चों को प्यार करते हैं। रामू और चाँदू महान सोवियत के इन नेताओं का प्यार पाकर धन्य हैं।

उपहार स्वरूप चाँदी के दो तम्बुओं के नमूने दिये जा रहे हैं।

"कहिये, स्तालिनग्राड के तम्बुओं के नमूने जैसे हैं न?"

"हाँ ठीक वैसे ही।"— क्रुश्चेव कहते हैं—"उन दिनों में मैं स्तालिन ग्राड की मिलिट्री कौंसिल का सदस्य था। इसीलिये तो मैं यहाँ के श्रमिकों को स्तालिनग्राड के वीर रक्षक मानता हूँ!"

गत महायुद्ध में इसी फैक्टरी द्वारा तम्बुओं का निर्यात रूस हुआ था।

अभिवादन स्वीकार करते हुये रूसी नेता आगे बढ़ रहे हैं। जनसमूह स्वागत कर रहा है!

आइये। कलकत्ता बन्दर के कमाण्डर श्री मेनन का हुगली स्टीमर तैयार है।

घर घर घिर घिर घिर घिर""दौड़ा स्टीमर बोट ''नदी के कलकत्ता तट पर अपार जनसमूह स्वागत कर रहा है। जयध्वनि! नेता बढ़ते जा रहे हैं।

बोटानिकल गार्डन जेटी'''सर्वत्र सजावट! स्वागत! पुष्पवर्षा।

धुतू धुतू धुतू धुतू धुतू'''धुतू'''शंखध्वनि'''

"यह क्या है?"

"शंख'''"

"कैसे बजता है!"

"देखिये..."

"अच्छा!"

आइये! देखिये! यह २०० वर्ष पुराना बट वृक्ष! अहा! कितना विशाल'''ऐसा बरगद का वृक्ष'''वाह'''अद्भुत्'''

यह बड़ा पुराना संस्थान है। इसका १५० वाँ वार्षिकोत्सव हाल ही में मनाया गया है। सन् १८७४ में यहाँ से कुछ नमूने रूस पेट्रोग्राड (अब लेनिनग्राड) भेजे गये थे। वार्षिकोत्सव के कुछ चित्र तथा संस्थान का अलबम उपहार स्वरूप दिया जा रहा है।

संस्थान निरीक्षण के उपरान्त 'मेन-ओ-वार' जेटी पर १२॥ बजे उतरते हैं। नादिया के स्टाफ से विदा लेते हैं। राजभवन! श्रीनेहरू वहाँ आ गये हैं।

राजभवन में दोपहर का भोज। भोज में कोई भाषण नहीं। हाँ, श्री प्रेमिको तथा अन्य नेताओं से राष्ट्र सम्बन्धी वार्ताएँ होती हैं। नेहरूजी के साथ परराष्ट्र विभाग के सचिव श्री सुबीमल दत्त भी आये हैं।

कलकत्ता परेड ग्रांउड......जिधर दृष्टि जाती है, उधर ही नरमुण्ड ही नरमुण्ड...सैकड़ों लाउडस्पीकर...सैकड़ों झंडे...हजारों हरी-लाल झंडियों... विशाल मैदान ३०लाख से ऊपर की जनसंख्या से खचाखच भर गया है। लगता है ४०लाख कलकत्ते की आबादी यहीं टूट पड़ी है...मानवता के इतिहास का बृहत्तम समारोह, कलकत्ता, बाँकुड़ा, मेदिनीपुर,...दूर दूर के लोग आये हैं। मँगलवार की रात से ही लोगों का यहाँ बैठना शुरू हो हो गया। शीतकाटी, सबेरा काटा, चनाभाजा, बिस्कुट, चाय, सोडालेमन के सहारे! प्रातःकाल से ही लोगों का ताँता लगा रहा। रेडरोड, इस्प्लानेड रोड से जन-सरिताएँ इस मैदान में गिरती जा रही हैं।

दोपहर!

देखते देखते सारा मैदान भर गया। एक दूकानदार ने हजारों की संख्या में सस्ते दूरबीन बेच लिये। मैदान में दक्षिण की ओर रम्यमंच बना है। दो बड़े बड़े मयूर जैसे उसे उड़ा रहे हैं। मंच के चारों ओर ग्रामीण बङ्गाल के चित्र। दिन और रात जागकर कलाकारों ने, श्रमिकों ने काम किया है। ८०० मजदूर लगातार तीन दिन, तीन रात काम करते रहे हैं तब ये घेरे, यह सजावट यहाँ हुई।

७ वर्गमील के घेरे के इस मैदान में अब तिल रखने की जगह नहीं। लाखों मनुष्य एकत्रित हो गये हैं। विश्व की किसी भी जनसभा में इतनी बड़ी भीड़ नहीं देखी गई। रिपोर्टर, कैमरामैन दंग हैं। बापरे! इतना बड़ा मानव समूह आज यहाँ कहाँ से टूट पड़ा!

२-४५ वह आये अतिथि। हुर्रा!! मार्शल, नेहरू, क्रुश्चेव, डा० राय अन्य दल के लोग, कारों का ताँता!

हुर्रा...गड़गड़गड़गड़...

"मार्शल बुलगानिन...

"जिन्दाबाद !"

तीस लाख कंठ...सारा कलकत्ता गूँज उठा। मीलों दूर तक जयनाद गूँजा। लगता है, जयध्वनि से आकाश फट जायगा।

मंच पर नेता !

गड़गड़गड़गड़...गड़ाक गड़ाक गड़ाक......

डा० राय मालाएँ पहिना रहे हैं। मंच पर दो बड़े बड़े रूसी और भारतीय झंडे लहरा रहे हैं। सभापति हैं नेहरू। इनके आदेश से मेयर श्री सतीशचन्द्र घोष मानपत्र पढ़ रहे हैं।

"इस महान नगरी में आपका स्वागत है..."

मान-भाषण सैकड़ों लाउडस्पीकरों पर प्रसारित हो रहा है। पीछे वाले लोग नहीं सुन पा रहे हैं। कुछ अपने साथ रेडियो सेट भी लेते आये हैं। रेडियो सेटों को घेरे सैकड़ों लोग खड़े हैं।

श्री नेहरू बोल रहे हैं:—"इस विशाल भीड़ में यद्यपि थोड़ा कोलाहल दिखलाई पड़ता है, जो अनिवार्य है, तथापि यह स्वागत बहुत विराट है। आज के इस सार्वजनिक स्वागत में जैसी जबरदस्त भीड़ हुई है, ऐसी भीड़ मैंने कभी नहीं देखी।

मैं शान्त रहने के लिए अनुरोध करता हूँ—इस विशाल नगर के सुनाम की आप रक्षा करें और अनुशासित ढंग से भाषण सुनें।"

जनता के स्वागत का अभिवादनकर, स्वर्णभूमि बंगाल और कवीन्द्र रवीन्द्र के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पितकर सोवियट कम्युनिस्ट दल के महासचिव कहते हैं:—

"मित्रो, गोवा भारत का न्यायतः अपना क्षेत्र है और मुझे विश्वास है कि बहुत शीघ्र ही गोवा विदेशी शासन से मुक्त हो जायगा। रूस और भारत ने विश्व को उपनिवेशवाद से मुक्त करने के लिए परस्पर हाथ मिलाया है। एशियायी संगठन ने उपनिवेशवादी शक्तियों को घातक धक्का लगाया है और अनेक राष्ट्र हाल में ही विदेशी गुलामी से मुक्त हुए हैं। कुछ ही देश

अब छूटे हैं, जहाँ उपनिवेशवादी जनता का खून चूस रहे हैं। मेरा तो मतलब पुर्तगाली बस्ती से है जो न्यायतः आपका प्रदेश है।

परमाणु और उद्जन शक्ति के सामुहिक विनाशकारी अस्त्रों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की रूस सरकार की माँग मैं पुनः दोहराता हूँ। खेद है कि हमें पश्चिमी राष्ट्रों का इसमें पूरा सहयोग नहीं मिल रहा है।

सोवियट रूस की परराष्ट्र नीति नैतिक सिद्धान्त पर राष्ट्रों के सहविकास पर आधृत है।

कुछ राष्ट्र रूस और भारत मित्रता से प्रसन्न नहीं हैं। भारत तथा सोवियट रूस की जनता विश्व शान्ति की हृदय से कामना करती है, अतः भारत रूस मैत्री को देखकर अप्रसन्न होने वाले लोग डरते हैं कि कहीं यह शांति-भावना विश्वव्यापी न हो जाय।

भारत और सोवियट रूस दोनों भाई भाई हैं। भारत और रूस की मैत्री सर्वदा स्थायी रहेगी (हर्षध्वनि और तालियों की भयंकर गड़गड़ाहट)

सोवियट रूस की जनता भारत के राष्ट्रीय नवनिर्माण में भारतीय जनता की पूर्ण सहायता करेगी। आप लोगों के पास बहुसंख्यक आदमी हैं, योग्यता है, साधन हैं, आप लोगों के पास केवल अनुभव की कमी है।

यह आप और पूरा कर लें'। मैं आपकी उन्नति की कामना करता हूँ। जय भारत ..जय सोवियट रूस मैत्री।"

श्री नेहरू सभापतिपद से बोल रहे हैं:—"गोवा का प्रश्न ताक पर नहीं रखा गया है क्योंकि ऐसे सवाल हमेशा के लिए हल करना ही जरूरी होता है। ऐसे सवालों से मुँह नहीं मोड़ा जाता। आश्चर्य है कि कतिपय अन्य बड़े राष्ट्र इस प्रश्न पर मौन हैं, चुप्पी साधे हैं। गोवा का प्रश्न वह कसौटी है, जिस पर अन्य देशों की घोषित नीति की परीक्षा होगी। भारत किसी भी गुट अथवा समझौते में सम्मिलित होना नहीं चाहता।

हमारे सम्मानित अतिथियों का जैसा स्वागत भारत में हुआ है, उससे कतिपय दूसरे देशों के हमारे कुछ मित्र आश्चर्य चकित हो गये हैं। आश्चर्य

उन्हीं लोगों को हुआ है, जो विरोधी गुटों और संधियों के अतिरिक्त और कुछ सोच ही नहीं सकते।

मैं गोवा की समस्या हल करने में सैन्यबल का उपयोग करने के विरुद्ध हूँ। बल-प्रयोग से शान्ति स्थापित न होगी वरन् बल-प्रयोग से भयङ्कर परिणाम होंगे। खेद है, कतिपय भारतीय गोवा की जेलों में बन्द हैं। मुक्ति आन्दोलन में भाग लेने के कारण कतिपय संसद सदस्य भी जेल में हैं।

मैंने बार बार कहा है कि हम किसी भी गुट अथवा सन्धि में सम्मिलित होना नहीं चाहते। यही हमारी साधारण दृढ़ नीति है।

पर हम विश्वशान्ति, सुरक्षा और मानव कल्याण के लिए हर किसी से सहयोग के लिए तैयार हैं।

प्रसन्नता की बात है कि भारत तथा सोवियत रूस इस ऐतिहासिक यात्रा से परस्पर निकट आ गये। शान्ति और मानव कल्याण के लिए हम लोगों का सहयोग लाभजनक होगा। यह मैत्री तथा सहयोग किसी राष्ट्र या किसी देश की जनता के विरुद्ध नहीं किया गया है।"

समारोह के अन्त में तीन नेताओं को जब जनता आपस में हाथ मिलाये देखती है, तो प्रलय सी जयध्वनि और उबलते महोदधि सा गर्जन होता है।

नेहरू नारा देते हैं—"विश्व शान्ति'''जिन्दाबाद। भारत सोवियत मैत्री'''जिन्दाबाद'''"

समारोह समाप्त। लाखों व्यक्ति लौट पड़े हैं। ट्रामों, बसों की छत पर, प्राणों की परवाह नहीं। कुछ देर पहिले ही एक वायुयान पूरे मैदान के दो चक्कर लगा चुका है। यान के द्वारा मानवता के इतिहास के इस बृहत्तम समारोह का चित्र लिया गया है!

राजभवन के प्रांगण में पूर्व की ओर लाल रेशमी परदा। सबसे आगे की पंक्ति में मार्शल बुलगानिन, श्रीक्रुश्चेव, श्रीनेहरू, डा० मुखर्जी, डा० राय। मीठी मीठी शहनाई की ध्वनि। प्रकाश गुल होता है। उदयशंकर, अमला की पार्टी द्वारा प्रस्तुत छायानाट्य रामलीला। रेशमी परदा फटा और श्वेत परदा जगमगा रहा है।

तूँ तूँ तूँ तूँ धी धी ई ई ई ई····झम्म···छम्म····नाचती, थिरकती आकृति परदे पर···आरती हाथ में लिये····

धी धी ई ई ई···महिलाओं का झुण्ड झूमा····छम्म छम्म···धागिड़ धा धागिड़ धा धागिड़ धा···अनेक मनुष्यों की आकृतियाँ (परदे के एक कोने में) विमानों से देवताओं की पुष्प-वर्षा (राम का जन्म···)

तूँ तूँ तूँ धी धी धी धागिड़ धा धागिड़ धा तु रूँ रूँ रूँ तु रूँ रूँ··· वाद्यों के सम्मिलित स्वर, प्रसन्न आकृतियाँ थिरकती रही हैं। राम जन्म की खुशियाँ····(दृश्य परिवर्तन) चार बालक···गुरु वशिष्ठ के पास···शिक्षा ग्रहण···टुट टुन टुन टुन···टुन टुन···सितार के स्वर···

दशरथ दरबार! आये विश्वामित्र! माँग रहे हैं राम लक्ष्मण को··· दशरथ उदास चिन्तित, आज्ञा देते हैं।

चले राम लक्ष्मण···वन के दृश्य····हाओं हाओं···शेर आया···हुप्प हुप्प सुप्प····बन्दर कूदे····घना जङ्गल···यह आई ताड़िका ··(परदे पर विशाल छायाकृति)···डीगड़ डा डागड़ डा डीगड़ डा, तुड़ङ्ग तुड़ङ्ग तुड़ङ्ग···है कोई जो मुझे रोक सके···वह उठी विश्वामित्र की अँगुली··· उठा धनुष राम का···चढ़ा तीर···सूँयुक सूँयुक···सिस्स···लगा तीर···· अरीक धम्म···अरीक धम्म···(गिरी ताड़का)····पिंगटिंग पिंगटिंग पिंगटिंग ···ऋषियों का समूह खुश।

(दृश्य परिवर्तन । जनकपुर स्वयंवर)···झा झा झा झा हे हे हे हे हे···प्रसन्नता के स्वर···सीता के हाथों वरमाला···धनुष उठाये कोई···ऊँ आ ऊँ आ···नहीं उठा। हाँ ओ हाँ ओ हाँ ओ···गरजा दशकंधर···हाँ ओ···उठा धनुष, हिला, ऐ नहीं उठा···बढ़े राम···झनक झनन झनक झनन झनक झनन···ऐ उठ गया···धिपसिप धिपसिप धिपसिप···खुशी···जानकी ने पहना दी माला···हाँओ हाँओ···गरजा दशकंधर···धारात्त धारात्त धारात्त···कौन है? आये परशुराम···नत राम··· (दृश्य परिवर्तन)

हुरुक हुरुक हुरुक···आयी मंथरा···कुबड़ी मंथरा, छिम्म छिम्म छिम्म··· आयीं कैकयी ··(भावभंगिमाओं से वार्तालाप का प्रदर्शन)···होंय होंय होंय···रूठ गईं केकैयी ··

घिरीरी घिरीरी घिरीरी ··(दशरथ परदे पर)···माँग रही हैं कैकेयी··· भरत को गद्दी ··राम को वनवास···

वनवास !

हाय ! हाय !! हाय !!! विलाप के स्वर, दशरथ गिरे, कौशिल्या गिरीं, यह राम···चरण स्पर्श कर (राजसी वेश उतार रहे)

तिरिक तिरिक तिरिक···वल्कलधारी राम, आगे लक्ष्मण, छिन्न छिन्न छिन्न···आयीं सीता···

झनछक् झनछक् झनछक्···साधारण वेश···वन चले राम···

झनाना झनाना झन झन झन झन···(आयी शूर्पणखा) विवाह करो, उधर···(राम कह रहे)···उधर (उधर लक्ष्मण कह रहे)··· हुँ हुँ हुँ हुँ क्रोधित शूर्पणखा···खाओं खाओं···ई ई ई ई···डरी सीता··· चख चख चख···कटे नाक कान···(दृश्य परिवर्तन)···दशकंधर···ऊँ गूँ ऊँ गूँ ऊँ गूँ···शूर्पणखा की फरियाद···(बदला दृश्य)

सिस् सिस् सिस्···वह आया मृग···सीता की उठी अँगुली···मृग चाहिये···गये राम···गये लक्ष्मण···आया साधु···तनक तनक तनक

तनक···इधर उधर देखता····बढ़ा भिक्षा पात्र···बढ़ीं सीता, लक्ष्मण रेखा पार···धराक् धराक्····उठा सीता को···भागा दशकंधर···

हा हा हा हा ! हा हा !! सीता नहीं, राम विलाप···बन बन में हा हा हा हा हा हा !!! आये पवनसुत, नत राम-समक्ष, आये सुग्रीव··· (दृश्य बदला)···

हा हा हा हा आ आ आ····बालि सुग्रीव···ऊँ ई खुच्च ऊँ ई खुच्च··· गया बालि मृत्यु लोक···

(बदला दृश्य) चले पवन सुत···यह लंका···यह अशोक वाटिका··· यह सीता···यह गिरी अँगूठी···होरा होरा होरा····आया मेघनाथ···सात्त सात्त सात्त···बंधे हनुमान···दशकंधर····पूँछ जली···खिक्ख खिक्ख खिक्ख खिक्ख···उछले हनुमान ।

हुकूँ हुकूँ हुऊँ हुऊँ···जली लंका···

लौटे हनुमान···

धारा रा रा धारा रा रा धारा रा रा····युद्ध की तैयारियाँ···बढ़ी सेना···· तट पर बना सेतु···छपाक् छप्प छपाक् छप्प···बढ़ी सेना····टिंग पिंग टिंग पिंग····

(हुआ युद्ध)

धागड़ धा धागड़ धा ढाँग···धागड़ धा ढाँग····ठम ठम ढम ढम····

हाओं हाओं हाओं···(गिरा कुम्भकर्ण) ।

होऊ' होऊ' होऊ' (गिरा मेघनाद) ।

धारारा धारारा धारारा घरारा···गरजा दशकंधर···

ढेका ढेका ढेका ढेका ढाँगढा ढाँगढा···आया मैदान में···सिस्स सिस्स सिस्स···बाणों की वर्षा···

हअः हआ हआ ा ा ा ा ा···रावण का अट्टहास····

होआ होआ होआ···(बढ़े वानर) बढ़े राम···(उड़े शर)··· सिक्क सिक्क····

अराक अराक अराक···शिथिल रावण···अराक अराक···धम्म धम्म ···गिरा रावण···

चिकी चिकी चिकी चिकी···(उछले कपिगण)···युद्ध समाप्त··· (दृश्य परिवर्तन)···लौटे राम···अयोध्या···

धीधा धीधा धीधा···पीपी पीपी···ई ई ई ई···खुशी के स्वर··· स्वागत···

"रघुपति राघव राजाराम···पतित पावन सीताराम···रघुपति राघव राजाराम !"

डेढ़ घंटे तक रामलीला के ३५ दृश्य, ७५ व्यक्तियों के सहयोग से २६×३६ फुट के परदे पर। ११५ किस्म के भारतीय वाद्यों का प्रयोग। अद्‌भुत छाया-नाट्य। पूरी कथा डा० राय सम्मानित अतिथियों को धीरे धीरे समझाते रहे।

मार्शल और क्रुश्चेव उदयशंकर और अमला को बधाई देते हैं। सबसे हाथ मिलाते हैं और कलाकारों के साथ फोटो खिन्चवाते हैं।

उदयशंकर का यह "रामलीला" (छाया नृत्य नाटिका) अनोखा है। हार्दिक बधाई दे रहे हैं दोनों रूसी नेता।

धन्यवाद ! ऐसे आल्हादकारी प्रदर्शन के लिये बधाई ! उदयशंकर और अमला, हमारे देश की संस्कृति के गौरव हैं।

एक घण्टे का प्रदर्शन ! सवा छः से सवा सात तक ! अब नेहरूजी की ओर से राजभवन में भोज दिया जा रहा है। गिन चुने १२० व्यक्ति ही उपस्थित। कोई भाषण नहीं। आपसी वार्तालाप और सुख शान्ति के जाम !

सारा कलकत्ता जगमगा रहा है। रंग-बिरंगा प्रकाश ! कलकत्ता की यौवनपरी सतरंगी साड़ी पहिने जैसे नाच रही है। पूजा और दीवाली भी मात। रंग-बिरंगे अशोक चक्र, मिनूमेंट···सर्वत्र उल्लास···जैसे कोई

बहुत बड़ा राष्ट्रीय त्यौहार ! जहाँ निगाहें टिकें, वहाँ से न हटें, 'ऐसी सजावट, ऐसा आकर्षण''''

भोज के उपरान्त अतिथियों के आग्रह पर बंगाल के लोकनृत्य, लोक गीतों का कार्यक्रम।

फिर रात्रि विश्राम ! शुभ रात्रि !

भोर की किरणें फूटीं। अतिथियों को बिदाई देने के लिये कलकत्ता जाग पड़ा। सजे हुये तोरणद्वारों के मंगलकलश फिर जल उठे। राजपथ फिर जनसमूह से नहा उठा। पंक्तिबद्ध अनुशासित हजार हजार नरमुण्ड'''

कार निकली।

वह अतिथि'''वह नेहरू'''

तालियों की गड़गड़ाहट ! विदा की जयध्वनि ! कारें भागी जा रही है। विह्वल जनता स्वागत कर रही है। हवाई अड्डे पर भी हजारों कलकत्तावासी !

"जय'''जय'''"

जयध्वनियों, तालियों की गड़गड़ाहट और शुभकामनाओं के बीच अतिथि विदा ले रहे हैं। नेहरू, राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, प्रमुख अधिकारी, नागरिक विदा दे रहे हैं। एकत्रित हजार-हजार नागरिकों को अभिवादन कर नेता विमान में बैठ गये हैं।

घररर घररररर रँ रँ'''

विदा कलकत्ता, विदा बंगाल, विदा भारत !

उड़ गये अतिथि रंगून की ओर।

और राष्ट्रपति-विमान में नेहरू भी दिल्ली वापस जा रहे हैं।

बर्मा की एक सप्ताह की यात्रा के पश्चात

आसनसोल ! नई दुलहिन की भांति सजधजकर इठला रहा है। मित्र रूस, भारत के झण्डे। जयजयकार और मानव समूह ! युद्धकाल में बने निनगा हवाई अड्डे पर डा० राय, श्री नित्यानन्द कानूनगो भी पहुँच चुके हैं।

१२-४५, दिन बुधवार। ७ दिसम्बर १९५५। जहाज उतरा ! बिहार के राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर, म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष स्वागत कर रहे हैं। जयजयकार, गगनभेदी मैत्री के नारों के बीच मोटरें आगे बढ़ रही हैं। हर ओर पंक्तिबद्ध जनता। पुलिस, मिलिट्री का घेरा।

घिरं घिरं···घर घर घर··

बढ़ गई कार। वे रहे रूसी अतिथि। हुर्रा !! तोरण-द्वारों, पताकाओं पुष्पों के बीच कारें भाग रही हैं। जी०टी० रोड ! रामपुर ! लगभग २०० मील की यात्रा। बिहार की जनता स्वागत के लिये टूट पड़ी है।

जय ! जय !! हुर्रा !! जिन्दाबाद !

कारें रुकतीं नहीं ! भागती जा रही हैं। वह रहा चित्तरञ्जन, जहाँ रेल के इञ्जन बनते हैं। लाखों मजदूर, जनता, नर नारी, बच्चे बूढ़े सभी स्वागत करते हैं। जनरल मैनेजर श्री कर्नैल सिंह कारखाना दिखला रहे हैं।

क्रुश्चेव कहते हैं—"भाप से चलने वाले इञ्जिनों का दिन गया अब बिजली वाले चाहिए !"

"इसकी निकट भविष्य में हम आशा करते हैं !"

"आप रूस आइये। हम भी अपना कारखाना आपको दिखलावें !"

"अवश्य ! मैं वहाँ जरूर आने की कोशिश करूँगा।"

उपहार में नये बनने वाले इञ्जन का माडल अतिथियों को दिया जाता है। देशबन्धु चितरञ्जन दास की मूर्ति पर माला चढ़ाकर और अपने

स्वागत के प्रति कृतज्ञता प्रकटकर रूसी नेता आगे बढ़ते हैं। अब राज्यपाल दिवाकर साथ हैं।

मैथान बाँध! चीन की पीली नदी की भाँति उद्दण्ड कोशी के प्रकोप से रक्षा के लिए कोशी योजना का एक अँग! बिजली की व्यवस्था! सिंचाई की व्यवस्था! मैथान बाँध पर होने वाले कार्य और कोशी योजना की रूपरेखा देखकर नेताओं का दल आगे बढ़ रहा है।

सिंद्री खाद्य कारखाना!

दीवाली हो रही है! जगमग! जगमग!! छोटा-सा नगर सिंद्री! प्रकाश से जगमगा रहा है।

हुर्रे! जय! जिन्दाबाद!! जनता का कभी न भूलने वाला स्वागत! कारखाना देख रहे हैं रूसी नेता! देखिये। भारत और यहाँ की जनता किस प्रकार अपनी औद्योगिक उन्नति के लिये प्रयत्नशील है!

सिंद्री प्रकाश से जगमगा रहा है। सादी पर मनोहर सजावट! सर्दी पड़ रही है।

कलकत्ता से आये २४ पत्रकारों के एक दल को बड़ा कष्ट भोगना पड़ा है। रात्रि विश्राम के उपरान्त वापस लौट रहा है, नेताओं का दल। १०·३० पर निनगा हवाई अड्डे पर नेता, एकत्रित विशाल जन समूह से विदा ले जयपुर की ओर उड़ रहे हैं। विदा विहार। विदा बङ्गाल।

महलों की ऐतिहासिक नगरी जयपुर के हर्ष का ठिकाना नहीं। साँगनेर हवाई अड्डा। हजारों आदमियों की भीड़। पुलिस सभाल नहीं पा रही है। गगनभेदी नारे गूँज रहे हैं।

दिन के २-३५। जहाज उतरा। बाहर आये नीला सूट और स्ट्राहैट पहिने मार्शल बुलगानिन। हल्के भूरे सूट में श्री क्रुश्चेव। यह बड़े राज प्रमुख, महाराजा जयपुर, मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया! स्वागत! तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश फट रहा है। परिचय हो रहा है। मंच पर नेता! जनता का अभिवादन! हर्ष ध्वनियाँ!

दंदर दंदर दंदर...धू धू धू...तू तू तू...दंदर दंदर...६१वीं बटालियन सैल्यूट दे रही है।

मंच से नेता उतरे! माथे पर मंगलकलश सँभाले बालिकाओं के समूह ने रोक लिया है। प्रिय अतिथि स्वागत है तुम्हारा। गीत गा रही हैं बालिकाएँ! आरती उतारी जा रही है! तिलक लगाये जा रहे हैं। जैसे राजस्थान का कोई वीर विजयी होकर आया है। राजस्थानी स्वागत!

आगे बढ़े अतिथि! वह टूट गया घेरा। हवाई हड्डे से अम्बर तक १३ मील के रास्ते में ३ लाख से अधिक झंडियाँ और तीन दर्जन तोरण द्वार। प्रत्येक पर राजस्थानी कला का, संस्कृति का प्रदर्शन। पूरी सड़क रंगीन, राजकीय इमारतें रंग दी गई हैं। जनता की भीड़ को पार करता हुआ जुलूस बढ़ा जा रहा है। स्वागत! हजारों हाथ स्वागत में हिल रहे हैं।

रामबाग राजनिवास की ओर जुलूस जा रहा है। रास्ते में पड़नेवाले प्रत्येक मकानों पर नरमुण्ड ही नरमुण्ड दिखलायी पड़ रहे हैं। अतिथियों को राजप्रमुख अपने महल में ले जाते हैं।

[लगभग १॥ घंटे के विश्राम के उपरान्त] पोलो देखने जा रहे हैं रूसी अतिथि! पोलो, राजाओं, महाराजाओं, राजकुमारों, धनियों का विशेष खेल!

पोलो का मैदान! गिने चुने व्यक्ति ही उपस्थित हैं। महाराजा जयपुर भी इसके खिलाड़ी हैं। खेल प्रारम्भ होने से पूर्व रूसी अतिथियों के साथ खिलाड़ियों का एक ग्रूप फोटो लिया जाता है।

सिर्रीरी सिर्रीरी! बजी सिटी। तैयार!

हिट!

गई गेंद! दौड़े घुड़सवार! वो मारा!

खटखट खटखट···भागा घोड़ा···वह गई गेंद···वह रहा सवार··· यह साहब तो गिरते गिरते बचे! घोड़े पर बैठकर गेंद को ले चलना···

कैसा दुरुह खतरनाक खेल। पर हैं सब सधे-बधे।

"आइये, हम भी खेलें।"—क्रुश्चेव बुलगानिन से कहते हैं।

"गेंद किसकी होगी?"

"पश्चिमी राष्ट्रों की!"—क्रुश्चेव के इस व्यंग्य पर बड़ा क़हक़हा लगता है!

खेल समाप्त!

मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया की ओर से प्रीति भोज। बड़े ही शान्त और विनोदपूर्ण वातावरण में भोज। फिर संध्या ६ बजे राम निवास गार्डन···खचाखच भरा है जनता से। विशाल मञ्च और सारा मैदान रंगबिरंगे प्रकाश से जगमगा रहा है। सोवियत नेताओं को देखते ही जनता गगनभेदी तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत करती है।

श्री सुखाड़िया कहते हैं—"एशिया के इस महान देश भारत में आपका आगमन ऐतिहासिक महत्व रखता है। गाँधी के देश की यह जनता अहिंसा में विश्वास रखती है और शान्ति के प्रति हृदय से इच्छुक है। राजस्थान भारत का गौरव रहा है। आपके आगमन से इसके गौरव में वृद्धि हुई है। महात्मा गाँधी की भाँति भारतीय जनता ने लेनिन और स्टालिन को भी श्रद्धा की दृष्टि से देखा है। लेनिन के इस संदेश में हम आज भी विश्वास करते हैं कि हम और हमारी सारी शक्ति मनुष्यता के उद्धार के लिये है!"—राजस्थान के गौरव और महाराणा प्रताप की चर्चा कर श्री सुखाड़िया रूसी अतिथियों को धन्यवाद दे रहे हैं।

हर्षध्वनि और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मार्शल बुलगानिन कह रहे हैं—"मित्रों, स्वतंत्रता की ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने वाली इस भूमि में आकर हम प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। साथ ही हम यह भी अनुभव कर रहे हैं कि भारत और रूस के मैत्री सम्बन्ध क्रमशः और भी दृढ़ होते जा रहे हैं। इस संबंध का टूटना अब मुश्किल है। हम एक हो गये हैं और एक रहेंगे। विश्व शान्ति के हम सहयात्री हैं। जयपुर

भारत का सुन्दर शहर है। राजनैतिक दृष्टि से भी इसका महत्व कम नहीं है। इस अवसर पर मैं आप सबका आभार मानता हूँ। हिन्दी रूसी भाई भाई।"

अब उपहार भेंट किये जा रहे हैं।

सोने का कास्केट लगभग २० हजार रुपये के मूल्य का, जिस पर राजस्थानी पच्चीकारी है। श्री बुलगानिन, श्रीक्रुश्चेव की संगमर्मर की मूर्तियाँ! मरकाना का पत्थर। जयपुर तो इसके लिये प्रसिद्ध ही है। सरस्वती की मूर्ति, साफा, राजस्थानी पगड़ी। अब महिलाओं की ओर से घाँघरा, अँगिया, लाख की चूड़ियाँ! (इस पर बड़ी जोर की हँसी होती है)!

सभा समाप्त! राजप्रमुख की ओर से रात्रि भोज का आयोजन। जगमग जगमग, बल्बों की जगमगाहट! रंगबिरंगी पोशाकें, साड़ियाँ, महिलाओं की मधुर मुस्कान! इत्र की महक...सुगंधित भोजन....हँसी खुशी के वातावरण में भोज हो रहा है (राजप्रमुख संक्षिप्त भाषण स्वागत में करते हैं। अतिथि केवल आभार प्रकट करते हैं।)

रात्रि विश्राम!

प्रातः आठ बजे! साँगनेर हवाई अड्डा! कड़ाके की सर्दी में भी जनता की भीड़! नारे, हर्षध्वनियाँ, अधिकारी, नेता, राजप्रमुख, महाराज, मुख्यमंत्री, अतिथियों को विदा दे रहे हैं।

भारत का स्वर्ग काश्मीर! और काश्मीर की राजधानी श्रीनगर और श्रीनगर का हवाई अड्डा। ६ दिसम्बर १९५५। राज्यसरकार की ओर से सार्वजनिक छुट्टी का दिन! अपार जनसमूह एकत्रित है। सेव से गुलाबी बच्चे! बादामी रङ्ग के स्त्री पुरुषों की भीड़! हवाई अड्डा जैसे तीर्थस्थान सजावट का क्या पूछना! सर्वत्र स्वागत पट्ट! रूस भारत के झण्डे। तोरण-द्वार। काश्मीर जैसे अपनी वासन्ती बहार में आ गया है! १०॥। बजे! सूर्य का प्रकाश अभी अभी प्रखर हुआ है। मँड़रा रहा है जहाज! लाखों आँखें देख रही हैं। जहाज उतरा! बढ़े आगे सदरे रियासत युवराज कर्ण

सिंह, मुख्यमंत्री बख्शी गुलाम मुहम्मद, मंत्रीमण्डल के सदस्य ! श्रीमती इन्दिरा गाँधी ! रूसी नेता बाहर आये ! स्वागत !

"नेहरू की पितृभूमि में···"

"स्वागत !"—लाखों कंठों से निकला स्वर।

"काश्मीर भारत जिन्दाबाद !"

"भारत रूस मैत्री जिन्दाबाद !"

"काश्मीर···भारत का है !"

"हम किसके साथ हैं ? भारत के साथ !"—नारे उठ रहे हैं। जनता टूटी पड़ रही है। वह रहे रूसी नेता, विशेष रूप से निर्मित मञ्च पर खड़े जम्मू काश्मीर सैनिकों की सलामी ले रहे हैं।

दंदर दंदर दंदर दंदर दंदर घत्त घत्त दंदर दंदर।

तीन सौ बालिकाओं का झुण्ड गीत गा रहा है ! काश्मीर की ये गुलाबी गुलाबी लड़कियाँ काश्मीरी भाषा में गीत गा रही हैं, जिसका अर्थ है, हमें उन मित्रों का स्वागत करते हुये प्रसन्नता होती है, जो भारत और शान्ति के भी मित्र हैं। (नदीम काश्मीरी द्वारा रचित गीत)

अब परिचय। सभी अधिकारियों, नेता, कुलियों के नेता से परिचय दिया जा रहा है। रूसी नेता इन सबसे मिलकर बड़े प्रसन्न हो रहे हैं।

रूसी अतिथि मोटर में बैठ रहे हैं। हवाई अड्डे से दूर रास्ते में खड़े जनसमूह के लिये हवाई अड्डे से आँखों देखा विवरण स्थान स्थान पर लगे लाउडस्पीकरों पर प्रसारित किया जा रहा है ! मोटरें घरघराती हैं।

हुर्रा ! जय ! जय !! पुलिस कानून को तोड़ने की कोशिश करती है भीड़, पर कारें बढ़ जाती हैं। हजारों हाथ हिल रहे हैं। मित्रता के हाथ··· शान्ति के हाथ ! दूर दूर, देहातों से लोग आये हैं। स्त्रियों बच्चों के झुण्ड काश्मीर का सौन्दर्य गली गली में बिखर गया है। सेव से लाल लाल बच्चे···रहरहकर युवतियों की अनार दंतपंक्तियाँ स्वागत में दमक-दमक उठती हैं। काश्मीर ! हमारा काश्मीर ! स्वर्ग काश्मीर !

बढ़ रहा है जुलूस ! सड़क के दोनों ओर के मकानों पर आदमियों के ठट के ठट लगे हैं। छतों पर, बारजों पर यहाँ तक कि रास्ते में पड़ने वाले पेड़ों और बिजली के खंभों पर भी आदमी चढ़े हैं। श्रीनगर कस्बे में जाने कहाँ से लाखों आदमियों की भीड़ इकट्ठी हो गई है !

वह आगे है मोटर साइकिल ! आ गये ! आ गये !

"जिन्दाबाद !"

"काश्मीर भारत का है !"

"भारत रूस मैत्री···जिन्दाबाद !"

एक के पश्चात् एक तोरण द्वार। पुष्प-वर्षा होती है। खुली जीप पर खड़े रूसी नेता जनता का अभिवादन स्वीकार कर रहे हैं। आगे पीछे अधिकारियों की मोटरें ! जा रहा है जुलूस। काश्मीर के हसीन बच्चे; खूब सूरत लड़कियाँ, युवतियाँ, मुस्कराती प्रौढ़ाएँ स्वागत कर रही हैं। इसी काश्मीर को देखकर तो एक कवि के मुँह से हठात् निकल गया था ! यदि स्वर्ग कहीं है, तो वह यहीं है। यहीं है। और इसी स्वर्ग की अप्सरायें स्वागत कर रही हैं अतिथियों का। मकान की हर खिड़की, हर झरोखे से, एक से एक बढ़कर हसीन चेहरे झाँक रहे हैं। आँखें चौंधियाँ जाती हैं।

ग्यारह मील लम्बे रास्ते भर यही स्वागत।

लगभग डेढ़ घण्टे पश्चात् जुलूस छतरबल गोदी पहुँच रहा है।

गोदी के पास दो नौकाएँ तैयार खड़ी हैं और आसपास छोटे छोटे बोट। एक ऊँचे आरामदेह आसन पर रूसी नेता बैठते हैं ताकि झेलम के दोनों किनारे खड़ी जनता उन्हें सरलता से देख सके।

छिपखिरं छिपखिरं छिपखिरं !

बोटें बढ़ीं।

हिरं हिरं हिरं रं रं सूँ सूँ सूँ ऊँ ऊँ ऊँ रं रं।

बढ़ी नौका ! गगन भेदी नारे ! झेलम के दोनों तट पर जनता कतार बाँधकर खड़ी है ! यह रहा महिलाओं का झुण्ड ! सैकड़ों महिलाएँ अपने

अतिथियों के स्वागत में गीत गा रही है। लोगों के ठट के ठट...हजारों हाथ हिल रहे हैं। लड़कों के झुण्ड।

गुड्डुम गुड्डुम गुड्डुम भड़ाक्।

फट फट फट फट...धड़ धड़ाक।

धड़ाक धड़ाक धड़ाक!

पटाखे छोड़े जा रहे हैं। स्वागत के बीच जुलूस डल झील के राज-प्रासाद तक जाता है। राजप्रासाद में सदरे रियासत युवराज कर्णसिंह की ओर से दोपहर के भोजन का आयोजन है।

आइये बैठिये। काश्मीर के स्वस्थ बच्चे, स्वस्थ स्त्रियाँ और तगड़े जवानों को देखकर सोवियत नेता प्रसन्न हैं। सचमुच काश्मीर स्वर्ग का कोई टुकड़ा ही मालूम होता है।

सदरे रियासत बोल रहे—"सम्मानीय अतिथि, उपस्थित सज्जनो! आज मैं अपनी रियासत में रूस के महान नेताओं का स्वागत करते हुये बड़ी प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। काश्मीर की समस्त जनता की शुभ कामनाएँ मैं उन्हें भेंट करता हूँ। काश्मीर की जनता ने जारशाही की भाँति राजशाही समाप्त करने का संघर्ष किया और वह उसमें सफल हुई। शासकों ने जनता का आदर किया और जनता को राज्य की बागडोर सौंप दी। साथ ही काश्मीरी जनता ने सर्वसम्मति से भारतीय संघ में मिलने का निश्चय किया उसके इस निश्चय में रोड़े आये और स्वार्थी शक्तियों की चपेट में पड़कर काश्मीर की जनता को अनेक कष्ट उठाने पड़े। फिर भी यहाँ की जनता अपने को सँभालती हुई भारत संघ के साथ है। अभी भी हमारे संघर्ष के दिन चल रहे हैं। ऐसे समय में आपका आगमन हमारे लिये प्रेरणादायक होगा! जय हिंद!"

मार्शल बुलगानिन स्वागत भाषण का उत्तर दे रहे हैं:—मित्रो, अपनी वर्तमान यात्रा में मैंने देश के अनेक भागों में भ्रमण किया और बहुत

देखा किंतु भारत के इस उत्तरी भाग को देखे बिना मेरी यात्रा अधूरी ही रह जाती।

वर्तमान भारत यात्रा में हम लोगों ने अनेक नगर, कारखाने, बाग, वैज्ञानिक संस्थान देखे और यह पाया कि प्रगति और विकास के महत् प्रयास में रत इस महान देश के पास विशाल निधियाँ हैं। हमें विभिन्न भाषा-भाषियों और संस्कृतियों के लोगों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ, पर उन सबकी एक ही परम्परा है और सभी शान्ति की उत्कट अभिलाषा के लिये ऐक्यबद्ध हैं। हम भारतीय जनता को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपके शान्ति प्रयासों में रूसी जनता आपके साथ है और आप हमें अपना मित्र ही समझें।

प्राचीन काल में काश्मीर और रूसी संघ का परस्पर व्यापार चलता रहा है। मुझे और श्री क्रुश्चेव को इस बात की प्रसन्नता है कि भारत के अंग रूप काश्मीर के कुशल लोगों से उनके उद्योग और संस्कृति के परिचय का सुअवसर प्राप्त हो सका है।

यहाँ आकर मैंने जो कुछ भी अनुभव किया है; उससे मेरी यह धारणा पुष्ट हो गई है कि काश्मीर भारत का एक अंग है। मैं इसे भारत का उत्तरी भाग मानता हूँ। संस्कृति और भाषा के भेद के बावजूद यह भारत का अभेद्य अंग है। आप लोगों के प्रति मेरी शुभ कामनाएँ हैं।"

सुख, शान्ति और शुभ कामनाओं के जाम ? भोज आरम्भ है।

डल झील का नीला जल हिल रहा है। शिकारे डोल रहे हैं। चप्पुओं की छप छप छपाक छप ! अजीब सा मधुर संगीत। छोटे से एक शिकारे के चप्पुओं को अपनी अल्हड़ मस्ती से चलाती हुई हाँजी की छोकरी चली आ रही है। उसके गुलाबी होठों से गीत झर रहा है ! काश्मीर का गीत ! ओ परदेशी केसर के खेत में मेरा झुमका गिर गया ! खोज दे ! कहीं तूने ही तो नहीं उठा लिया ? परदेशी मीठी सी गाली

देता है। ओ छोकरी! तेरी आँखों का काजल परियाँ चुरा ले जाँय! तेरा झुमका मैंने नहीं उठाया।

गीत गाती हुई हाँजी की छोकरी आगे बढ़ती जा रही है। उसके गन्दुमी रङ्ग का प्रतिबिम्ब डल के नीले नीले जल में मिलकर सोने की तरह पीला पीला बिखरा बिखरा सा उसके ही साथ चलता जा रहा है।

सूर्य की किरणें अब प्रखर हो उठी हैं। कुहरा मिट चुका है।

झील में पड़ी "परिन्दा" नौका तथा ५० बोटें खाली पड़ी हैं। जन-समूह द्वारा स्वागत में फेंकी हुई गुलाब की पँखुड़ियाँ, गुलाबी फूलों के झुण्ड बहते चले आ रहे हैं। कोई ८००० से कम तोरण द्वार और ५० लाख से कम रूसी और भारतीय झण्डे नहीं हैं।

अरे क्या हुआ! लोग खिलखिलाकर हँस रहे हैं।

ओः यह बात है! सोवियत उपमंत्री श्री रहीम योवा को काश्मीरी टोपी दी गई। उनके सिर से उठाकर बख्शी साहब ने क्रुश्चेव के सिर पर रख दी श्रीक्रुश्चेव ने वह टोपी मार्शल को पहना दी! फोटोग्राफर खटा-खट फोटो लेते गये!

बातें हो रही हैं।

"सोवियत यूनियन से काश्मीर कितनी दूर है?"

"मेरा ख्याल है, यहाँ से लगाई आवाज वहाँ सुनायी पड़ सकती है!"—मार्शल बुलगानिन कहते हैं।

"आप इस समय पं० नेहरू की पितृभूमि में हैं!"

"मैं जानता हूँ!—" श्री बुलगानिन कहते हैं—"यह नेहरू की पितृ भूमि है। सचमुच बड़ा प्यारा स्थान है। अद्भुत!"

"काश्मीर का मौसम आपको पसन्द आया?"—(ठंड के कारण सभी लोग गर्म कपड़ों में लिपटे हैं।)

"हाँ मास्को की गर्मी के समान है!"—क्रुश्चेव तत्काल कहते हैं।

"यहाँ का मौसम पानी जमने की डिग्री से भी नीचे धुला जाता है!"

"आप की ठंड कुछ इतनी है ! वह कुछ कुछ हमारे यहाँ के गरम मौसम से मिलती है !"—क्रुश्चेव की इस बात पर सब खिलखिलाकर हँसे।

"अच्छा यह क्या चीज है?"

"गोश्तबा !"

"है बड़ा अच्छा !"

"तो लीजिये और खाइये !"—बख्शी गुलाम मुहम्मद अपने हाथ की चम्मच से दोनों को खिलाते हैं।

श्रीक्रुश्चेव कहते हैं—"भाई, नौका यात्रा में तो आनन्द आ गया। ऐसा मालूम पड़ा कि जैसे हमने बोल्गा में यात्रा की है !"

सदरे रियासत युवराज कर्ण सिंह—"मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आप लोगों ने अपना काश्मीर आने का वायदा पूरा किया !"

"हम जो कुछ कहते हैं, उसे पूरा करते हैं। हमारे दिये गये वचन कभी टूटते नहीं !"

श्री क्रुश्चेव युवराज, युवराज्ञी और बख्शी गुलाम मुहम्मद को रूस आने का निमन्त्रण देते हैं।

१० दिसम्बर १६५५। काश्मीर का सुहाना सवेरा। कुहरे को चीर कर सूरज की किरणें श्रीनगर को चूम रही हैं। सरकारी कला भवन में काश्मीर के गृहद्योग की वस्तुओं का प्रदर्शन।

रूसी अतिथि बड़ी प्रसन्नता से सब देख रहे हैं। सोवियत रूस में भी काश्मीर की वस्तुएँ प्रसिद्ध हैं।

शहतूल के रेशों से बना एक शाल देख रहे हैं, क्रुश्चेव—"पहले जमाने में यह रूस जाता था। अभी भी वहाँ इसकी काफी खपत है !"

एक से एक बढ़कर शाल, ऊनी कपड़े, पशमीने, दरियाँ और पच्चीकारी किये हुए खिलौने, बर्तन !

यह है एक बहुमूल्य फर्शी। प्रत्येक इञ्च में ३०० टाँके। बनने में ३ महीने लगे।

"ऐसी वस्तु मेरे पास हो, तो मैं इसे कभी न बेचूँ !"—क्रुश्चेव कहते हैं।

प्रदर्शनी देखकर रूसी अतिथियों का मत है कि यदि यह वस्तुएँ सोवियत रूस भेजी जायँ, तो निश्चित रूप से वहाँ बड़ी खपत होगी।

आइये। राजगढ़ भवन! बख्शी गुलाम मुहम्मद की ओर से स्वागत समारोह का आयोजन। कुल ३००० व्यक्ति ही उपस्थित हैं। फिर भी राजगढ़ भवन के तीनों ओर हजारों लोग खड़े हैं।

काश्मीर के प्रायः सभी प्रमुख व्यक्ति यहाँ उपस्थित हैं। ऊनी मोहक वस्त्रों में लिपटी हुई महिलायें! एक से एक आलीशान पोशाकें! सौंदर्य और वैभव इस उद्यान में बिखर गया है!

कारों का काफिला, नारों और स्वागत ध्वनियों के बीच राजगढ़ भवन में प्रविष्ट होता है। अतिथियों के स्थान ग्रहण करते ही सब बैठ जाते हैं। बख्शी गुलाम मुहम्मद अपनी भाषा में स्वागत कर रहे हैं :—

"हमारे सम्मानित अतिथि, सद्रे रियासत और मेरे दोस्तो, आज इस अवसर पर महान सोवियत रूस के दो महान व्यक्तियों का स्वागत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। भारत के अनेक स्थानों का भ्रमण कर हमारे अतिथि हमारी भूमि पर हमारे विशेष निमन्त्रण पर आये हैं।

पञ्चशील के सिद्धान्त पर आधृत भारत-रूस के आपसी दृढ़ सम्बन्ध से जनता को इस बात की जोरदार गारण्टी मिलती है कि युद्ध की नौबत न आयेगी और संघर्ष के क्षेत्र मैत्री और समझौते के रूप में बदल जायेंगे।

रूसी मेहमानों की भारत यात्रा रूसी जनता की भारतीयों के प्रति बढ़ रही सद्भावना का प्रतीक है। हमारे देश की जनता ने स्थान-स्थान पर उनका जिस हार्दिक ढङ्ग से स्वागत किया है वह रूसी भाइयों के प्रति हमारे जज़्बातों का इजहार है। हम लोग इस वक्त बड़े सामाजिक और

आर्थिक परिवर्तनों के चौराहे पर खड़े हैं। ऐसे वक्त अगर हमारे शुभचिंतकों का हमें सहयोग और मदद मिलती है तो इससे दोनों राष्ट्रों के पड़ोसी जैसे ताल्लुकात बढ़ेंगे। काश्मीर का अस्तित्व संसार भर के यात्रियों के लिए सुरक्षित है और विश्राम एवं आनन्द के लिए आनेवाले संसार के सभी यात्रियो का हमारा देश (कश्मीर) सदियों से स्वागत करता चला आ रहा है।

रूसी नेताओं की भारतयात्रा हमेशा याद रहनेवाली घटना है और इससे दोनों देशों की दोस्ती का सम्बन्ध और मजबूत होगा। भारत ने पूरी दुनिया की जनता के साथ दोस्ती के लिए अपना हाथ बढ़ाया है। तनातनी की हालत सुधारने के लिए हमारे देश की भावना सच्ची है। संसार से महायुद्ध का खतरा हर समय शान्ति और सहयोग की स्थिति पैदा करने के कार्य में हमारे प्रधान मन्त्री नेहरूजी ने अपने को लगा दिया है और यह सन्तोष की बात है कि वर्ण और धर्म का भेदभाव भुलाकर दुनिया के सभी शान्तिवादी मुल्क इस कार्य में एक हो चले हैं। एक बार मैं पुनः आप लोगों का स्वागत करता हूँ।"

अब रूसी नेताओं को चाँदी के बने बोटनुमा डिब्बों में मानपत्र भेंट किया जा रहा है।

श्री बुलगानिन कुछ नहीं बोलते हैं। श्रीक्रुश्चेव बोल रहे हैं:—

"सदरेरियासत युवराज कर्णसिंह, प्रधान मंत्री, मुख्य मन्त्री महोदय, तथा मेरे समस्त मित्रों, आप सब लोगों के प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं कि आप सबने जिस उत्साह से हमारा स्वागत किया है, वह प्रशंसनीय है। आपके इस स्वागत को हम कभी भूल न सकेंगे। मुझे यह कहने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं है कि कश्मीर भारत का ही अङ्ग है और कश्मीर की जनता ने कश्मीर को भारत का ही अङ्ग बनाये रखने का निश्चय किया है और इस प्रकार कश्मीर की समस्या तो उसने स्वयं ही हल कर लिया है। मैं पूछता हूँ कि कश्मीर का प्रश्न आखिर पैदा ही क्यों

हुआ ? मेरे ख्याल से कुछ राष्ट्र उन देशों में, जिन्होंने साम्राज्य से मुक्ति पायी है, उनकी जनता में धार्मिक भावनाएँ उभाड़कर जगाना पसन्द करते हैं इसी कारण यह समस्या खड़ी हुई है।

पाकिस्तान साम्राज्यवादियों की नीति के कारण ही अस्तित्व में आया है। उन्होंने अखण्ड भारत की जनता के हित की दृष्टि से ही नहीं वरन् स्वार्थसिद्धि के लिए जनता की धार्मिक भावनायें उभाड़कर विभाजन सम्भव बनाया।

सीमापरिवर्तन सदैव खून खराबी के साथ होता है। हम यह नहीं कह सकते कि पाकिस्तान शान्ति चाहने वालों का साथी है। पाकिस्तान शान्तिपूर्ण तरीकों से बिना हल हुई समस्याएँ हल नहीं करना चाहता। पाकिस्तान में अमेरिकी सैनिक अड्डे बनने से हमारी परेशानी एवं चिन्ता बढ़ना स्वाभाविक है।

हम यह स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि बगदाद समझौते में सम्मिलित हुए राष्ट्रों का हम लोगों ने न तो कभी समर्थन किया और न कभी भविष्य में ही उनका समर्थन करेंगे।

पाकिस्तान की समस्त नीति का निर्धारण दूसरे देशों के एकाधिकार प्रिय व्यक्तियों द्वारा होता है। भारत की जनता में धर्म के आधार पर विभाजन और घृणा के बीज बोने के प्रयत्नों की मैं निन्दा करता हूँ।

पाकिस्तान स्थित सोवियट रूस के राजदूत से पाकिस्तान सरकार ने मेरी और श्री बुल्गानिन की कश्मीर यात्रा तथा हमारी प्रस्तावित अफगानिस्तान यात्रा का विरोध किया है। पर हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम किसी से यह पूछने नहीं जाते कि हम कहाँ जायँ और किसलिए जायँ तथा किस तरह के मित्रों का चुनाव करें ?

एकाधिकार प्रिय लोग किसी देश की जनता में विभाजन का बीज बोकर अपना लक्ष्य सिद्ध करते हैं। भारत का विभाजन साम्राज्यवादियों की फूट द्वारा शासन की नीति का कुफल है।

कुछ दिनों पूर्व कश्मीर का प्रश्न राष्ट्रसंघ की सुरक्षापरिषद् में विचारार्थ प्रस्तुत किया गया था और वह रूसी प्रतिनिधि ने यह स्पष्ट कर दिया था कि कश्मीर का मामला कश्मीरियों को स्वयं हल करना चाहिए।

जैसा कि सिद्ध हो चुका है पाकिस्तान की नीति अपने देशवासियों के अपने राज्य के हित की दृष्टि से निर्धारित नहीं होती वरन् अन्य देशों के एकाधिकार प्रिय लोगों के निर्देश और आदेश पर निर्धारित होती है। वर्तमान पाकिस्तान सरकार स्पष्ट रूप से यह प्रकट कर चुकी है कि वह अमेरिकी एकाधिकार प्रिय लोगों के सम्पर्क में है। पाकिस्तान सरकार बगदाद समझौते में सर्वप्रथम शामिल हुई है। वही उक्त समझौते की प्रेरक भी है। बगदाद समझौता शान्ति के लिए नहीं किया गया है।

बगदाद समझौते के अनुसार पाकिस्तान की सीमा पर दूसरों को सैनिक अड्डे बनाने की स्वीकृति मिल जाती है और यह सब कुछ सोवियट यूनियन की सीमा पर होता है। हम स्पष्ट रूप से कह देना चाहते हैं कि पाकिस्तान की सीमा में अमेरिकी हवाई अड्डों का निर्माण केवल हमें चिन्तित करता है।

सक्रिय रूप से पाकिस्तान के बगदाद समझौते में सम्मिलित होने के साथ साथ अब यह प्रयत्न किया जा रहा है कि बगदाद समझौते में अन्य राष्ट्र भी शामिल हो जायँ। इस समझौते में शामिल होकर पाकिस्तान साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रभाव में आ गया है। हम इस पर केवल खेद व्यक्त कर सकते हैं। हम लोगों ने बगदाद समझौते में सम्मिलित होने वाले राष्ट्रों का न तो कभी समर्थन किया है और न समर्थन करेंगे।

भारत, रूस की सरकारें अन्तरराष्ट्रीय तनातनी घटाने एवं भावी युद्ध रोकने की दृष्टि से कार्य कर रही है। भारत के इस प्रकार के कार्य के कारण ही भारत के साथ हमारी मैत्री बढ़ रही है। भारत के आन्तरिक मामलों में हम हस्तक्षेप नहीं करते और भारत हमारे मामलों में नहीं बोलता।

रूस यही चाहता है कि भारत उत्तरोत्तर शक्तिशाली एवं समृद्ध हो। भारत के साथ जिस प्रकार का हमारा सम्बन्ध है वैसा ही सम्बन्ध हम पाकिस्तान के साथ भी स्थापित करना चाहते है, किंतु यदि वैसा सम्बन्ध अब तक नहीं हो पाया है तो उसका दोष हम पर नहीं है। जो भी हो विश्वशान्ति के लिए हम पाकिस्तान के साथ भी 'अच्छे सम्बन्ध बनाना आवश्यक समझते हैं तथा ऐसा करने का प्रयास भी करेंगे।

काश्मीर की जनता ने जिस उत्साह के साथ स्वागत किया है वह हम भूल नहीं सकते। काश्मीर रूस के मध्य एशिया के राज्यों से सटा हुआ है और इसी कारण हमने कश्मीर आना स्वीकार किया है। कश्मीर आने में हमारी प्रसन्नता का एक विशेष कारण यह है कि यह आपके प्रधान मन्त्री की पितृभूमि भी है। आपके प्रधान मन्त्री के प्रति हमें विशेष आदर है।

कुछ राष्ट्र भारत में विभिन्न जातियों एवं सम्प्रदायों को लड़ाने की जोरदार ढंग की कोशिश कर रहे हैं ? किन्तु क्या यह सब भारत के हित में होगा ? भारत की जनता तो अपना सांस्कृतिक एवं आर्थिक उत्थान चाहती है। वह स्वतन्त्र ढंग से अपना विकास चाहती है। इन सबके लिए किसी देश को धार्मिक सिद्धान्तों के आधार पर खड़ा करने की आवश्यकता नहीं। राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा शोषण का अन्त ही इसके लिए पर्याप्त है। हमने रूस से शोषण का अन्त कर दिया है। धार्मिक भेदभाव को तूल देने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी मान्यता के अनुसार अपने धर्म का पालन कर सकता है। रूस में १।। करोड़ मुसलमान रहते हैं। इसी प्रकार अन्य धर्म माननेवाले भी रूस में रहते हैं किंतु सब भ्रातृभाव से रहते हैं। एक बार फिर मैं आपके इस स्वागत के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। भारत रूस मैत्री अमर रहे ! विश्वशांति जिन्दाबाद !!"

गगनभेदी तालियों की गड़गड़ाहट के बीच क्रुश्चेव का भाषण समाप्त

होता है। जँगली आग की नाईं यह भाषण सारे श्रीनगर में फैल गया है और देखते देखते श्रीनगर रेडियो से यह भाषण आवश्यक समाचार के रूप में प्रसारित कर दिया जाता है।

साँझ हो गई है। कड़ी ठण्ड के बावजूद भी श्रीनगर नई दुलहिन की भाँति सजधजकर जगमगा रहा है। स्थान स्थान पर राग-रंग का आयोजन मशालों के जुलूस, छोटे छोटे झुण्ड श्रीनगर की सड़कों पर घूम रहे हैं।

"काश्मीर भारत ! जिन्दाबाद !!"

"भारत रूस मैत्री ! जिन्दाबाद !"

"काश्मीर किसका है भारत का है !" नारों से श्रीनगर की सड़कें गूँज उठती हैं। काफी रात गये तक, कड़ाके की ठण्ड के बीच श्रीनगर उत्सवमग्न रहता है।

युवराज कर्णसिंह अपने "कर्णमहल" में रूसी नेताओं को प्रीतिभोज देते हैं। जहाँ एक दूसरे की सुखशांति और स्वास्थ्य के टोस्ट काटे जाते हैं। श्री बुलगानिन अपनी हार्दिक मित्रता प्रकट करते हैं।

शुभ रात्रि ! रात्रि विश्राम।

प्रातः सोवियत नेताओं को उपहार स्वरूप काश्मीरीशाल, काश्मीर में बने ऊनी वस्त्र तथा महिला सदस्या को काश्मीरी पोशाक भेंट दी जाती हैं। अन्य सदस्यों को भी उपहार दिये गये हैं।

श्रीनगर हवाई अड्डा ! हवाई अड्डे पर फिर वैसी ही भीड़। रूसी नेता विदा ले रहे हैं। काश्मीर की जनता उन्हें विदा दे रही है।

वह आया मोटरों का काफिला। अधिकारियों की भाग दौड़। युवराज, बख्शी, श्यामलाल सराफ, तथा अनेक जन नेताओं से हाथ मिला रहे हैं। युवराज और युवराज्ञी को रूस में बना कैमरा भेंट कर रहे हैं। हमारी स्मृति !

बख्शी को अपने से लिपटाकर क्रुश्चेव अनेक बार उनका चुम्बन

कर कहते हैं—"मुझे आप अपना व्यक्तिगत मित्र अवश्य समझते रहियेगा !"

नेता हाथ जोड़कर जनसमूह को अभिवादन कर रहे हैं।

श्री बुलगानिन अपने संक्षिप्त भाषण में उपस्थित जनसमूह के प्रति अपने स्वागत के लिये आभार प्रकट करते हैं।

गगन भेदी हर्षध्वनि। कितनों की आँखें डबडबा आयी हैं। विदा काश्मीर ! विदा काश्मीर की महान जनता ! काश्मीर सेना मार्च कर रही है। बैण्ड विदा-गीत बजा रहा है।

जहाज घूमा। उठा और उठा। वह गया। उड़ा। लाख लाख आँखें जाते हुये यान को देख रही हैं। देखते देखते यान कुहरे के पीछे छुप गया है।

पालम हवाई अड्डा। दिन के १२-१०, जहाज जमीन छू रहा है। अतिथियों के साथ इन्दिरा गाँधी भी हैं। श्री ए० के० चन्दा सोवियत नेताओं का स्वागत करते हैं। मोटरें तैयार हैं। अतिथि राजभवन की ओर जा रहे हैं। उनका दिल्ली आगमन व्यक्तिगत है।

आध घण्टे के उपरान्त ही रूसी नेता प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू से मुलाकात करते हैं। मुलाकात १ घण्टे तक चलती है। दोनों ओर के कोई सलाहकार नहीं।

सोमवार, १२ दिसम्बर १६५५। कारों का काफिला सोनीपत सामुदायिक योजना के गाँवों की ओर बढ़ रहा है। दिल्ली से तीस मील दूर यह भटगाँव है। सुबह के १० बजे हैं। कृषकों का झुण्ड स्वागत कर रहा है। सारा गाँव सजा है। कारों से उतर रूसी नेता कृषकों से मिल गये हैं। ग्रामीणाएँ स्वागत और पुष्पों की वर्षा कर रही हैं। सामुदायिक योजना के प्रशासक श्री एस० के० डे सारे गाँव में घुमाकर कपड़े का सामान तैयार करने, छपाई, बुनाई, टोकरी बनाने और लोहे के औजार तैयार करने के केन्द्र दिखला रहे हैं। पंजाब के मुख्य मंत्री श्री भीमसेन सच्चर ग्रामीण

जीवन के चित्रों का एक अलबम, तथा स्काउट हाथ से बने दो हाथी भेंट करते हैं। पंजाब का एक सिख युवक हरनाम सिंह दो भैंसे भेंट करता है। पर अस्वीकृत हो जाती है यह भेंट। ईख बोने का तरीका दिखलाया जाता है। एक साँड़ घूम रहा है!

"उसकी आयु तीन वर्ष है!"—एक भारतीय अफसर कहता है।

"नहीं!"—क्रुश्चेव कहते हैं—"दो वर्ष! इससे अधिक कभी नहीं हो सकती!"

रजिस्टर देखने से क्रुश्चेव की बात ठीक पायी जाती है। गलियों में घूम रहे हैं अतिथि। कच्चे मकानों पर चढ़, छपरैल पर बैठे ग्रामीण स्वागत कर रहे हैं। नारे उठ रहे हैं। पुलिस का व्यापक प्रबन्ध है। एक अवकाश प्राप्त सैनिक प्रायमरी स्कूल में नेताओं का स्वागत करता है। उसने बहुत से मेडिल पहिन रखे हैं। क्रुश्चेव पूछते हैं। यह सब मेडिल कैसे मिले?

आइये इस मैदान में। वह लेटे हैं रोहतक के योगी स्वामी देव मूर्ति! नंगे बदन! शरीर पर शीशे की टूटी बोतलों के टुकड़े घर्र घर्र... १२ टन की एक ट्रक उनके शरीर पर। लोग सिहर उठते हैं। १ मिनिट बाद ट्रक हटती है। उठ खड़े हुये स्वामी। रञ्च-मात्र भी खरोंच नहीं। तालियाँ गड़गड़ा उठती हैं।

रूसी अतिथि स्वामीजी को अपने पास बुलाते हैं। स्वामीजी अपनी नाड़ी कई सेकेण्ड के लिये रोक लेते हैं। अतिथि स्तंभित!

यह देखिये कुश्ती का घेरा! अखाड़ा। कूदा मलाया शेर दारा सिंह (आजीवन कारावास की सजा भोग रहे हैं। प्रदर्शन के लिये पैरोल पर रिहा) यह आये हाँगकाँग के राजा, हरविन्द्र सिंह। फ्री स्टाइल की कुश्ती! उठा पटक!

"वो मारा!"

"शाबास पटक दिया!"

"तड़ाक भड़ाक भड़!!" खूँख्वार प्रदर्शन। जैसे दो भयङ्कर जङ्गली

हाथी आपस में टकरा गये हैं। लोग सिहर उठते हैं। बड़ी मुश्किल से दोनों को अलग किया जाता है!

अब देखिये! कबड्डी...

"हाडू-हाडू-डू-डू-हाडू डू..."

"एक कबड्डी आर ताल...मर गये बिहारीलाल...ल...ल...ल... पकड़ लिया। वह निकल भागा। साँस नहीं टूटी...पकड़ने वाले आऊट। दूसरा आया।

"मरे को क्या मारा...हमको मारो तो नाम तुम्हारा ...र आ...आ...

गाँव के नौवजवानों की यह कबड्डी भी खूब रही। कबड्डी देखने के उपरान्त रूसी नेता भटगाँव मैदान में होने वाली जन-सभा में भाग लेने जा रहे हैं। मैदान...खेत...आदमियों से एकदम भरे हैं। कृषकों की एक बड़ी भीड़। एक लाख से अधिक की संख्या में आसपास और दूर दूर के कृषक उपस्थित हैं। अतिथियों के आते ही गाँव के बालचर हिन्दी में स्वागत गीत गाते हैं। दो लजीली लड़कियाँ गुलदस्ता भेंट करती हैं और हाथ का बना हाथी।

श्री सच्चर के स्वागत के उपरान्त क्रुश्चेव बोल रहे हैं—"मित्रों, कृषकों की इतनी बड़ी भीड़ हम पहली बार देख रहे हैं। आप लोगों से मिलकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है। सबसे ज्यादा प्रसन्नता तो आपके गाँव को देख कर और आपके कला कौशल को देखकर हुई है कि आप लोग अपनी उन्नति के लिए सतत प्रयत्न शील हैं। आज के युग में खेती में मशीनों का उपयोग आवश्यक है। यह मेरा अपना विचार है। इसे मैं बलात आप लोगों पर नहीं लादना चाहता! हमारे सोवियत रूस में लाखों किसानों को मशीनी प्रयोग के लिये कृषि संबंधी बातों के लिये कालेजों में शिक्षा दी जाती है। आशा है, शीघ्र ही आप लोग भी ऐसे ही बनेंगे। सोवियत रूस के तमाम कृषकों की शुभकामनाएँ मैं आपको भेंट करता हूँ। आपकी सफलता की कामना करता हूँ। विदा दोस्तो, नमस्ते!"

क्रुश्चेव अपने भाषण में हिन्दी शब्दों का प्रयोग करते हैं। सच्चर कहते हैं—"श्री क्रुश्चेव के भाषण का अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने यह दिखा दिया है कि वे हमारी भाषा बहुत कुछ सीख गये हैं।"

[श्री क्रुश्चेव के हिन्दी शब्द—मित्रो, मशीनों, मेरा अपना विचार, आप लोग, शुभ कामनाएँ, सफलता, विदा, दोस्तो, नमस्ते]

तालियों की गड़गड़ाहट, स्वागतनारों के मध्य जनसभा समाप्त। अतिथि दिल्ली लौट रहे हैं।

दिल्ली आने पर राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति के निजी सचिव श्री बाल्मीकि चौधरी राष्ट्रपति की लिखी पुस्तकों की अँग्रेजी, हिन्दी प्रतियाँ भेंट करते हैं।

विश्राम अनन्तर रूसी नेता १३५ मिनिट तक दूसरी बार श्री नेहरू से मिलते हैं। इस मुलाकात में परराष्ट्रसचिव श्री एस० चन्दा भी उपस्थित हैं। वार्ता का दूसरा दौर!

रात्रि के ८ बजकर २० मिनिट। हैदराबाद हाउस प्रकाश से स्नान कर रहा है। रूसी नेताओं द्वारा विदा भोज का आयोजन। मुख्य टेबिल पर श्री बुलगानिन और श्री क्रुश्चेव के बीच श्री नेहरू बैठे हैं। श्री बुलगानिन के बायीं ओर राष्ट्रपति हैं तथा श्री क्रुश्चेव की बगल से उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन बैठे हैं। इसके अतिरिक्त लोकसभा के श्री मावलंकर चीफ कमिश्नर, मंत्रीगण तथा दिल्ली राज्य के प्रमुख नागरिक व अधिकारी उपस्थित हैं। कुल १००० व्यक्ति हैं पर १०० के ही बैठने का प्रबन्ध है। शेष व्यक्तियों के लिए 'स्टैण्ड अप डिनर' की व्यवस्था है।

अतिथियों द्वारा स्थान ग्रहण कर लेनेपर श्री बुलगानिन बोल रहे हैं—मित्रो, अब हमारी भारत यात्रा समाप्ति पर है। हम लगभग ३ सप्ताह आपके देश में रहे। श्री नेहरू और आपकी सरकार की कृपा से हमें भारत को देखने समझने का अवसर मिला। हमने आपके शहरों को देखा, कारखानों, विकास के केन्द्रों, खेतों और वैज्ञानिक अनुसंधान के केन्द्रों को

देखा। भारत निरन्तर अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न शील है। यह हमने देखा और हम आपकी सफलता के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त करते हैं।

डा० राधाकृष्णन श्रीक्रुश्चेव से बोलने के लिए कह रहे हैं पर श्री क्रुश्चेव खड़े होकर टेबिल पर से एक सेब उठाकर बैठ जाते हैं। बस! (जोर की हँसी)

मुस्कराते हुये श्री नेहरू खड़े हुए हैं—"माननीय श्रीबुलगानिन व श्री क्रुश्चेव तथा दोस्तो, इस समय मैं कुछ शर्म महसूस कर रहा हूँ। वैसे मैं सब कहीं लगातार बोल सकता हूँ, पर सोवियत अतिथियों द्वारा दिये गये इस भोज में बोलते वक्त मैं अटपटापन महसूस कर रहा हूँ। (जोर की हँसी का ठहाका) इस समय हमारे सम्मानित अतिथि हमसे विदा लेनें वाले हैं। करीब ६ महीने पहले मैं रूस गया था। आप लोगों से और आप लोगों के देश की जनता से मिला। सोचने समझने का मौका मिला। मुहब्बत मुहब्बत को खींचती है। यह दुनिया का कायदा है। आपकी मुहब्बत ने हमें खींचा। हमारी मुहब्बत ने आपको खींचा। जब मैंने रूस छोड़ा तो मैंने कहा था कि मैं अपने हृदय का एक टुकड़ा जैसे वहाँ छोड़े जा रहा हूँ (जोर की हर्ष ध्वनि) मुहब्बत से ही आज दुनिया कायम रह सकती है। मुहब्बत के दरवाजे हमें दूसरे लोगों के लिए खोल देना चाहिए। इसीसे दुनिया में अमन हो सकता है। आपने स्वागत का जिक्र किया। हिन्दी रूसी भाई भाई के नारे की बात कही। यह कोरा नारा नहीं है। इसके पीछे भारत की जनता का दिल है। वह निष्पक्ष रूप से विश्वशांति और दुनिया के सभी मुल्कों से दोस्ती करने के लिये छटपटा रहा है। मैं आशा करता हूँ कि यह आप लोगों की अंतिम यात्रा न होकर पहली यात्रा होगी। एक बार मैं पुनः आप लोगों को भारत आने का आमन्त्रण देता हूँ धन्यवाद! (जोर की हर्षध्वनि, तालियाँ)

डा० प्रसाद की स्वास्थ्य सुख शांति का केक बुलगानिन प्रस्तुत करते हैं तो डा० प्रसाद सोवियत रूस के राष्ट्रपति के लिए केक प्रस्तुत करते हैं।

श्री बुलगानिन पुनः भारत रूस मैत्री की केक प्रस्तुत करते हैं। और अब श्री नेहरू उपस्थित व्यक्तियों से अनुरोध करते हैं कि रूस और भारत की सुख शांति मैत्री के जाम पिये जाँय।

भारत और रूस के राष्ट्रगीत दो बार बजाये जा चुके हैं (शायद गलती से) पहली बार जब सब अतिथि इकट्ठे हुये और श्रीनेहरू आये। दूसरी बार राष्ट्रपति के आने पर राष्ट्रगीत बजे।

प्रसन्न वातावरण में भोज चल रहा है।

दिल्ली का औद्योगिक मेला। एशिया की सबसे बड़ी प्रदर्शनी। मंगलवार १३ दिसम्बर १९५५। दिन के १० बजे। रूसी नेता श्रीनित्या-नन्द कानूनगो के साथ आ गये हैं। हजारों की भीड़ के बीच। पुलिस की गहरी व्यवस्था टूट चुकी है। भारी भीड़ अतिथियों का पीछा करती चल रही है। श्री बी० एम० बिरला, श्री जी० एल० बंसल साथ हैं।

यह प्रीमियर आटो मोबाइलस। पंचवर्षीय योजना, ताता इंडस्ट्रीज, संयुक्तराष्ट्रीय, संयुक्त अमेरिका, हाथ करघा उद्योग, चीन, यू एस एस आर, एक के बाद एक संस्थान का निरीक्षण। हैंडलूम संस्थान की ओर से उपहार।

"अब की बार आप भारत आयेंगे तो भारत की बनी और भी अनेक चीजें आपको देखने मिलेंगी!"

"अवश्य! भारत में बना, यह शब्द पढ़कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होती है।"—क्रुश्चेव बिड़ला की बात का उत्तर देते हैं।

संयुक्त राष्ट्र (अमेरिका) के सस्थान पर १५ मिनिट रुकते हैं। "जादू घर" में रुकते हैं। एक आदमी के केवल हाथ हिलाने मात्र से प्रकाश जगमगा उठता है और यह हैं बिजली के हाथ। सुई में डोरा डालते हैं। बोतल खोलकर उसका द्रव्य पदार्थ गिलास में उड़ेलते हैं।

"मजे के हाथ हैं। पर क्या यह पिला भी सकता है!"—क्रुश्चेव व्यङ्ग करते हैं।

हैंडलूम संस्थान पर श्री क्रुश्चेव बनारसी साड़ी उठाकर देखते हैं। पास खड़ी खूबसूरत लड़की से कहते हैं—"निश्चय ही यह तुम्हारे लिये है। भारत, खूबसूरत स्त्रियों, सुन्दर रेशमी वस्त्रों और गीतों का देश है!"

आगे बढ़कर क्रुश्चेव देखते हैं। किस प्रकार सोने चाँदी के बारीक तार साड़ियों में जड़े जाते हैं। श्री बुलगानिन की ओर मुड़कर देखते हुये कहते हैं—"कितना अच्छा होता है, हमारी मन्त्री सभा के अध्यक्ष, ऐसा ही काम करते! मेरा ख्याल है तब वह अच्छे अध्यक्ष होते!"—श्री बुलगानिन खिसियाकर रह जाते हैं।

९० मिनिट तक मेले में रहने के पश्चात् आलइंडिया रेडियो केन्द्र पर अपना भाषण रिकार्ड करवा रहे हैं। डाक्टर केसकर स्वागत कर उपहार स्वरूप, गाँधी की प्रार्थना सभाओं के प्रवचनों के रिकार्ड, भारत यात्रा विवरण के कुछ रिकार्ड, रामचरित मानस के कुछ पाठों के रिकार्ड तथा भारत के जीवन और विविध विकास कार्यों पर प्रकाश डालने वाले चित्रों का एक संग्रह देते हैं।

राष्ट्रपति भवन में वापस आने पर संसदीय हिन्दी परिषद की ओर से श्री मैथिली शरण गुप्त एक छोटी कविता के साथ रूसी नेताओं को हिन्दी की चुनी हुई २५० पुस्तकों का सेट उपहार दे रहे हैं। परिषद के मन्त्री श्री मन्नूलाल द्विवेदी इससे पूर्व अपने संक्षिप्त भाषण में कह चुके हैं:—प्रिय भाई निकोलाई अलेक्सांद्रो विच! प्रिय भाई क्रुश्चेव आप मुझे अनुमति दें कि हम आपका अपने प्रिय मित्र, प्रिय भाई के रूप में स्वागत करें। जब आप स्वदेश लौटें तो आपसे विनय है कि आप भारतीय जनता का यह सन्देश महान् सोवियत जनता को पहुँचायें हम मित्रता पूर्वक आपको गले लगाते हैं और आपके भाई चारे का अभिवादन करते हैं।"

श्री क्रुश्चेव कहते हैं:—"संसदीय हिन्दी परिषद की मैं सराहना करता हूँ और वह अवश्य ही भारतीय संस्कृति को आगे लाने में सहायक होगी। मैंने अपने साथी श्री बुलगानिन से बात की है और जब हम अपने देश

में लौटकर जायंगे हमारी यह इच्छा होगी कि भारतीय भाषाओं की ज्यादा से ज्यादा शिक्षा दी जाय और उसमें हिन्दी की वृद्धि की जाय।

जब हम यहाँ आये तो हमें सब से पहले पता लगा कि आपके विशाल देश के बारे में हम कितना कम जानते हैं। जब तक हम यहाँ नहीं आये थे तब तक हम इस बात की कल्पना भी नहीं कर पाये थे कि आपके देश में क्या है। यहाँ आने पर हम कुछ समझ सके।

हम यह चाहते हैं कि आप का विकास साँस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक सब प्रकार से हो और संसार में शाँति की स्थापना में सहायक हों। आप को फिर धन्यवाद देता हूँ और वादा करता हूँ कि मैं यहाँ से अपने देश में जाऊँगा तो प्रयत्न करूँगा कि हमारा बन्धुत्व स्थायी हो!'

अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से श्री अजयकुमार घोष टेबिल सुराही तथा ६ गिलासें एवं दिल्ली प्रादेशिक काँग्रेस कमेटी की ओर से श्रीमती सुभद्रा जोशी बेनों की एक जोड़ी तथा एक हल (आँधवरी के बने) देहली ट्रेड यूनियन की ओर से एक चित्र, अ० भा० शाँति कमेटी की ओर से टेबुल लैम्प उपहार स्वरूप दिये जा रहे हैं।

इससे पूर्व श्री मिखीलोव मौलाना आजाद को रूस स्थित महत्व पूर्ण कागजों एवं संस्कृत के दो ग्रंथों तथा बौद्धों का इतिहास (जो तिब्बती भाषा में है) की सूक्ष्म फिल्में उपहार स्वरूप देकर आये हैं। आपने बाल मित्र संघ को दो चलचित्र कैमरे भी दिये हैं।

साँझ को रूसी नेता राष्ट्रपति के अंगरक्षकों का प्रदर्शन राष्ट्रपति भवन के प्राँगण में देख रहे हैं। घुड़सवारों की कला बाजी, आग में कूदकर निकल जाना आदि अनेक अनोखे खेलों का प्रदर्शन! लगभग ६० मिनिट तक। नेहरूजी, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा अन्य सदस्यगण भी उपस्थित हैं। अनेक सेनाओं के बैंडों की धुन भी सुनाई जाती है। इनचार्ज श्री एस० निवासन् को रूसी अतिथि धन्यवाद दे रहे हैं।

रात के ८-२०। राष्ट्रपति का विशिष्ट कक्ष (इस कक्ष में राज्यपाल

कॉन्फ्रेंस अथवा शपथ ग्रहण समारोह ही अब तक होते आये हैं) काले सूट में श्री बुलगानिन, श्री क्रुश्चेव, गाँधी टोपी चूड़ीदार सफेद पैजामा, काली अचकन, अचकन के बटन होल में गुलाब का फूल लगाये श्री नेहरू। अर्ध गोलाकार टेबिल के घेरे में बैठे हैं सब। दीवार पर गांधी, नेहरू, राजेन्द्र के चित्र! उपस्थित हैं और सर्व श्री मिखीलोव, रेसिडोव, प्रेमिको, कुमकिन, रेसेलोव, रहीमयायोवा, के० पी० एस० मेनन, मेंशिकोव, बोलकोव, एन० आर० पिल्लई, एस० दत्त, आर ए० बेग, मेजर जनरल यदुनाथसिंह।

संयुक्त वक्तव्य। हस्ताक्षर करते हैं श्री नेहरू। अब श्री बुलगानिन। अब श्री क्रुश्चेव। धन्यवाद। सब आपस में हाथ मिला रहे हैं। संयुक्त वक्तव्य में कहा गया है कि श्री बुलगानिन तथा श्री क्रुश्चेव की भारत यात्रा न केवल दोनों देशों—रूस और भारत को निकट लाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है वरन् विश्वशांति की स्थापना की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जेनेवा में हुए परराष्ट्र मन्त्रियों के सम्मेलन के कारण जो निराशा व्याप्त हो गयी है वह अस्थायी है तथा अन्तरराष्ट्रीय तनातनी दूर करने के लिए सभी सम्भव प्रयत्न जारी रखे जायँ। विवादास्पद सभी प्रश्नों को वार्ता द्वारा हल करने के उपाय पर भी पूर्ण भरोसा रखा जाय। दोनों देशों के नेता स्पष्ट रूप से पुनः अपनी यह दृढ़ धारणा व्यक्त कर देना चाहते हैं कि परमाणु तथा उद्जन बमों और व्यष्टि आयुधों के उत्पादन, परीक्षण तथा प्रयोग पर बिना शर्त प्रतिबन्ध लगाया जाय। इसके साथ ही शस्त्रास्त्रों में पर्याप्त कमी की जानी चाहिये। निःशस्त्री-करण तथा परमाणु और उद्जन बमों पर प्रतिबन्ध की व्यवस्थित अन्तरराष्ट्रीय जाँच और नियन्त्रण की भी व्यवस्था होनी चाहिये।

सैनिक समझौते अथवा क्षेत्रीय गुट बनाने से विश्वशान्ति नहीं होगी। राष्ट्रों के सामूहिक प्रयास से शान्ति तथा सुरक्षा की व्यवस्था सम्भव है। एशिया में तबतक स्थायी शान्ति नहीं हो सकती जबतक चीन

को राष्ट्रसंघ में अपना उचित स्थान नहीं मिल जाता। आशा प्रकट की कि इस प्रश्न के सिवा एशिया के सुदूरपूर्व के अन्य महत्व पूर्ण प्रश्न शीघ्र ही समझौते से हल कर लिये जायंगे। तटवर्ती टापुओं तथा ताइवान के सम्बन्ध में चीन के वैध अधिकार स्वीकृत हो जाने चाहिये और कोरियाई प्रश्न को सुदूरपूर्व की शान्ति के हित की दृष्टि से हल कर लेना चाहिये। नेताओं ने सभी सम्बन्धित दलों से हिन्दचीन सम्बन्धी जेनेवा-समझौते को पूर्णतया कार्यान्वित करने तथा किसी भी प्रकार की रुकावट न डालने की अपील की। १८ राष्ट्रों को राष्ट्रसंघ के सदस्य बनाने के सम्बन्ध में यह आशा प्रकट की कि सुरक्षा-परिषद सदस्यों वाले प्रस्ताव को स्वीकृत कर लेगी और उसके अनुसार शीघ्र कार्य करेगी।

भिलाई में इस्पात कारखाने के बनाने में दोनों देशों के सहयोग तथा अन्य योजनाओं के सम्बन्ध में चल रही वार्ता का स्वागत किया गया। आशा प्रकट की कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में जब बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों की स्थापना की जाने वाली है; भारत और रूस के सहयोग की और अधिक सम्भावना है।

८-३० रात। भारत के सभी रेडियो स्टेशनों से श्री बुलगानिन, श्री क्रुश्चेव के विदाई संदेश प्रसारित हो रहे हैं। श्री बुलगानिन —

प्रिय मित्रो, आल इण्डिया रेडियो से भाषण प्रसारित करने का मुझे जो यह अवसर दिया गया है उसके लिए मैं बड़ा आभारी हूँ। कल हम इस देश से विदा हो रहे हैं, जो अपने आतिथ्य के लिए प्रसिद्ध है। हम, इस देश और इसके निवासियों की अनेक सुखद स्मृतियाँ सदैव अपने हृदय में सजोये रहेंगे। हम यहाँ की जनता के उत्साह और उसकी स्फूर्ति, उसके प्रफुल्लित नवयुवक और नवयुवतियाँ, उसकी प्रतिभा और दक्षता, शांति के लिए और सभी शांतिप्रिय राष्ट्रों के साथ सहयोग के लिए उसकी चिर आकांक्षा देखकर सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं और इन सबकी हमारे हृदय पर एक अमिट छाप अंकित हो गई है। जहाँ भी हम गये, भारतीयों

ने हमारा हृदय से स्वागत सत्कार किया। हमने यहाँ हर जगह सोवियट संघ की जनता के प्रति मैत्री का सच्चा और गहरा। भाव पाया। हम आपके देश में ऐसे समय आये जब कि वह अपने इतिहास के बहुत ही महत्व पूर्ण दौर से गुजर रहा है। औपनिवेशिक दासता के एक लम्बे युग के बाद भारतीयों ने अपने भाग्य का आप निर्माण करने का अधिकार पहली बार प्राप्त किया। राजनीतिक स्वाधीनता के इन कुछ वर्षों में भारत ने बड़े-बड़े काम कर दिखाये हैं। अब भारत महत्वपूर्ण अन्ताराष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में महत्वपूर्ण योग दे रहा है। जैसा कि हमने स्वयं अपनी आँखो से देखा है, भारत ने अपनी अर्थ-व्यवस्था के विकास और औद्योगिक निर्माण में भी महान सफलताएं प्राप्त की है। हमारे देशों में आज जो मैत्री-सम्बन्ध है उससे आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में हमारा सर्वांगीण सहयोग सम्भव हो गया है। यदि हमारे विज्ञान, शिल्प और निर्माण सम्बन्धी ज्ञान से भारत लाभ उठाना चाहे तो हम इसके लिए सदा प्रस्तुत हैं। यह तो आप को विदित ही है कि सोवियत संघ और भारत गणराज्य के सम्बन्ध उन विख्यात पांच सिद्धान्तों पर आधृत हैं जिन्हें पञ्चशील कहते हैं। यह आधार सुदृढ़ और स्थायी है। सोवियत संघ लेनिन के सिद्धान्तों का दृढ़ता से अनुसरण करता है जो अन्य राष्ट्रों की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभु सत्ता के प्रति आदर की भावना पर और अन्य राष्ट्रों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति पर आधृत हैं। सोवियट संघ और भारत का पारस्परिक सम्बन्ध इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं वाले देशों के बीच मैत्री और सहयोग संभव है। श्री नेहरू और भारत सरकार के अन्य नेताओं के साथ हमारी जो बातचीत हुई है, उससे यह बात स्पष्ट हो गयी है कि भारत और सोवियट संघ के पारस्परिक सम्बन्धों के सभी पहलुओं पर सहमति है और सर्वाधिक महत्व की अन्तर-राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति हमारी दृष्टि प्रायः समान रहती है। हमें विश्वास है कि हमारे बीच अच्छे पड़ोसियों जैसे जो

मैत्री सम्बन्ध हैं वे निरन्तर बढ़ते जायगे और दृढ़ होते जायगे और इससे हमारे देशों की उन्नति में और संसार में शान्ति का पक्ष सबल बनाने में योग मिलेगा। हम भारत के जिस किसी भी प्रदेश और नगर में गये, हमारा हार्दिक स्वागत हुआ आपकी सरकार ने और आपके प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने हमारी भारत यात्रा को पूर्णतः सुखद और उपयोगी बनाने में कोई कसर न उठा रखी, इसके लिए मैं पुनः उनका हृदय से धन्यवाद करता हूँ। अन्त में मैं उन राज्य सरकारों और नगर अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हमारी यात्रा का अत्युत्तम प्रबन्ध किया और हमारा हार्दिक स्वागत किया। मैं उन व्यक्तियों और सार्वजनिक संस्थाओं को भी धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत-सत्कार और अभिनन्दन के स्नेह पूर्ण सन्देश भेजे। मुझे खेद है कि समयाभाव के कारण हम सारे निमन्त्रण स्वीकार नहीं कर सके और सब स्नेह पूर्ण सन्देशों का उत्तर नहीं दे सके। प्रिय मित्रों, आपकों एक बार फिर धन्यवाद।

श्रीक्रुश्चेवः—

हमारे प्रिय मित्रो, भारत गणराज्य के नागरिकों! तीन सप्ताह से भी अधिक समय से हम आपके देश की यात्रा कर रहे हैं, इस बीच हमने अनेक राज्य, नगर और गाँव देखे, यहाँ की महान् जनता से परिचित हुए और भारत की समृद्ध और प्राचीन संस्कृति के विषय में जानकारी प्राप्त की, भारत गणराज्य के नेताओं और जनता ने हमारा, सोवियट संघ के प्रतिनिधियों का अगाध स्नेह के साथ जो भव्य स्वागत किया, उससे हम द्रवित हो गये, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। हिन्दी रूसी, भाई भाई। इन शब्दों को सुन कर हम विशेष रूप से इसलिए द्रवित हुए कि इनसे भारतीय जनता के प्रति स्वयं हमारी और सोवियट जनता की भावनाएँ व्यक्त होती है हाँ, भारत और सोवियट संघ के निवासी भाई भाई हैं, अच्छे बुरे, सभी दिनों में भाई भाई है। हमारे देशों की मैत्री की स्थापना एक ऐतिहासिक

काम है। हमें इसका मूल्य समझना चाहिए और हर तरह से उसे सुदृढ़ बनाना चाहिए क्योंकि वह हमारे दोनों देशों की जनता के लिए हितकारी है। हम इस मैत्री को सुदृढ़ बनाना चाहते हैं जो इतिहास की छाया में पली पनपी और निरन्तर घनिष्ठ होती जा रही है। लेकिन हमारी, धारणा है कि विश्वशांति के हित में यह आवश्यक हो जाता है कि केवल किसी एक राष्ट्र से ही नहीं चाहे वह महान क्यों न हो, बल्कि समस्त राष्ट्रों से मैत्री सम्बन्ध सुदृढ़ हो। यह आवश्यक हो जाता है कि सभी देशों और महाद्वीपों की शान्ति प्रिय जनता की इस कामना को साकार करने का प्रयत्न किया जाये कि संसार के सभी राष्ट्रों की पारस्परिक मैत्री बढ़े। इस महान और आदर्श ध्येय की पूर्ति में हम कोई कसर नहीं उठा रखेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि भारत और सोवियट संघ की मैत्री बढ़ना दोनों देशों की उन्नति और प्रगति में और विश्वशान्ति को चिर स्थायी बनाने में सहायक सिद्ध होगा। आपका देश आर्थिक क्षेत्र में तेजी से उन्नति करे इसके लिए यह आवश्यक है कि आप अपने उद्योगों का विकास करें। राष्ट्रीय उद्योगों के अभाव में सच्ची स्वाधीनता बनाये रखना सम्भव नहीं होता है इसे हम स्वयं अपने अनुभव से जानते हैं। उद्योगों की स्थापना में आज आपको जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, उन्हें हम पहले ही पार कर चुके हैं। इन समस्याओं के बारे में अपने अनुभव और जानकारी हम आपको देने को तैयार हैं ताकि आपके देश में ऐसे विषयों के जानकारों की संख्या बढ़ सके और आप इन समस्याओं का तेजी से समाधान कर सकें। हम आपसे यह इसलिए नहीं कह रहे हैं कि हम आपको कुछ सिखाना चाहते हैं। हम तो भारतीय जनता और भारत गणराज्य को निःस्वार्थ भाव से सहायता भर देना चाहते हैं क्योंकि हमारी इच्छा है कि स्वतन्त्र और सम्पूर्ण प्रभुसत्ता-सम्पन्न भारत गण-राज्य उन्नति करे और सबल बने। सोवियट संघ और भारत ने विकास के विभिन्न मार्ग अपनाये हैं। हमारा सदा ही यह मत रहा है कि किसी देश का विकास किस ढंग से किया जाय, यह एक ऐसा

विषय है, जिसका सम्बन्ध केवल उस देश की-जनता से ही है। विभिन्न राष्ट्रों के साथ हमारे सम्बन्ध सुविख्यात पाँच सिद्धान्तों पर आधृत हैं जिनका अब अनेक देश पालन कर रहे हैं। अब यह निर्विवाद है कि विभिन्न सामाजिक व्यवस्था वाले देश शान्ति से साथ-साथ निर्वाह कर सकते हैं। हमें इस बात पर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमारे भारतीय मित्र अधिक से अधिक संख्या में हमारे देश आयें। आप हमारे देश में आयें और हमारी जनता के जीवन, कार्य और अनुभव से परिचित हों। हमारी जनता आप का सदैव हार्दिक स्वागत करेगी। एक दूसरे के लिए शिष्टमंडलों के आने जाने से दोनो देशों की जनता की मैत्री बढ़ेगी। हम एक बार फिर प्रधान मंत्री श्री नेहरू और भारत सरकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं कि उन्होंने आप के इस महान देश में आने का निमंत्रण देकर हमें सम्मानित किया और हमें अपनी आँखों से इस देश को देखने को और इसके परिश्रमी और प्रतिभासम्पन्न लोगों से मिलने का अवसर दिया। मित्रों ! विदा, फिर मिलेंगे।"

बुधवार, १४ दिसम्बर १९५५। प्रातः ९ बजे राष्ट्रपति भवन में प्रेस कान्फ्रेंस। रूसी नेताओं के वक्तव्य की अंग्रेजी प्रतिलिपि पर अप्रामाणिक तथा रूसी प्रतिलिपि (प्रामाणिक) प्रतिनिधियों के बीच वितरित हैं।

इसमें बताया गया है कि पूर्वी एशिया की सर्वाधिक महत्व पूर्ण समस्याओं पर विचार करने के लिए जेनेवा सम्मेलन की भाँति बड़े राष्ट्रों के प्रधानों के नये सम्मेलन का समर्थन उचित है इसे बनाने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसे सम्मेलन में कम्युनिष्ट चीन तथा भारत की उपस्थिति आवश्यक है। हमने यह देखा कि कश्मीरी जनता को इस बात की कितनी प्रसन्नता है कि कश्मीर प्रजातन्त्र भारत का एक अंग है। हमें दृढ़ विश्वास है कि कश्मीरी जनता बिना बाहरी हस्तक्षेप के अपनी समस्या का समाधान निकाल लेगी। वह प्रश्न कश्मीरी जनता के इच्छानुसार हल होगा।

यह सर्वविदित है कि गोवा भारतीय प्रदेश है। उपनिवेशवादी चाहे

अथवा नहीं, इस प्रश्न का फैसला भारतीय जनता के पक्ष में ही होगा। रूस के लिए अकेले निरस्त्रीकरण करना हानिकर तथा मूर्खता पूर्ण होगा। हमारे सहयोगी अन्य राष्ट्र सशस्त्र सेना घटाने के विपरीत शस्त्रास्त्र बढ़ाने की घोषणा जोरों से करते चले जा रहे हैं जेनेवा सम्मेलन की भावना ने बड़ा अच्छा काम किया। अतः इस भावना को दबाने का प्रयास विफल होगा। यदि जेनेवा में परराष्ट्र मन्त्रियों का सम्मेलन सफल नहीं हुआ, जिस की प्रतीक्षा संसार कर रहा था, तो इसका कारण यही था कि कुछ राष्ट्रों ने समझौते के समय अपनी शक्ति का भय दिखाने की नीति नहीं छोड़ी है। इसे अब अच्छी तरह से स्पष्ट कर देना चाहिये कि जब तक यह नीति नहीं छोड़ी जाती तबतक समझौता सफल न होगा। (संक्षिप्त)

दिन के दस बजने जा रहे हैं। विदा का समय आ रहा है। कारों का काफिला। एक के बाद एक कार। राष्ट्रपति भवन से चले अतिथि। सड़कों पर अपार जनसमूह पंक्तिबद्ध अनुशासित होकर खड़ा है जयध्वनियाँ मैत्री के नारे। साउथ एवेन्यू, विलिङ्गटन क्रीसेंट, किचनार रोड, माउण्ट परेड रोड, आई० ए० एफ़ स्टेशन पालम। हजार हजार लोगों का स्वागत। पालम हवाई अड्डे पर बड़ी भीड़ जमा है। नारे उठ रहे हैं।

सबकी आंखें भर आयी हैं। अश्रुपूर्ण हो उठे हैं सैकड़ों नयन। मंत्री गण नेताओं से भेंट कर रहे हैं। श्री मैत्र क्रुश्चेव को चूम रहे हैं। जनसमूह के गगन भेदी नारे रह रह कर गूँज उठते हैं।

श्री बुलगानिन बोल रहे हैं—"अब समय आ गया है कि आपका स्नेहपूर्ण आतिथ्य छोड़कर हम वापस जाँय। अपनी भारत यात्रा में हमने बहुत कुछ देखा। मेरे लिये यह बता सकना बहुत मुश्किल है कि भारत नक्शे का कितना जबर्दस्त प्रभाव मेरे मस्तिष्क पर पड़ा है। सबसे बड़ी बात है आप लोगों का स्नेह। इस स्नेह को हम कभी न भूल सकेंगे। हमारे हृदय में यह हमेशा ताजा बना रहेगा। नये भारत को देखकर हम खुश हुये हैं। इतिहास का यह अविस्मरणीय दिन है कि हमारी मैत्री दृढ़

हुई है। श्री नेहरू की यात्रा के पश्चात् हमारी इस यात्रा से हमारे आपसी संबंध और मजबूत हुये हैं। आपके नेताओं से हमारी वार्ता सौहार्द्रपूर्ण हुई है। कल हम लोगों ने एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये हैं। यह दस्तावेज संसार के इतिहास में विश्वशान्ति के प्रयास में अपना प्रमुख स्थान रखता है। आप सबको, आपकी सरकार को मैं अपने स्वागत के लिये धन्यवाद देता हूँ। सोवियत रूस भारत मैत्री जिन्दाबाद ! हिन्दी रूसी भाई भाई। दासविदानिया !"—तालियों की गगन भेदी गड़गड़ाहट !

श्री क्रु श्चेव बोल रहे हैं—"मैं अपने पीछे अपने हृदय का एक टुकड़ा छोड़े जा रहा हूँ (जोर की हर्षध्वनि) हम भरे हृदयों से आपकी, आप के स्वागत की, आपकी सरकार की याद लिये हुये वापस जा रहे हैं। मैं आपको, आपके महान प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को धन्यवाद देता हूँ। हमने भारत के प्रत्येक रूप देखे हैं। हमारी यात्रा से आपसी संबंध और प्रगाढ़ हुये हैं ! हमने जो कुछ समझा है वह संयुक्त वक्तव्य में कह दिया है। आपके प्रधान मंत्री ने रूस छोड़ते समय कहा था कि उनके हृदय का एक टुकड़ा वहीं छूटा जा रहा है। ऐसा ही मैं भी यहाँ हमसूस कर रहा हूँ। मैं आशा करता हूँ हमारी इस यात्रा से हमारे संबंध और भी मधुर बने रहेंगे। किसी भी स्थिति में हमारे यह संबंध नहीं बदलेंगे। हमारे यह संबंध एक दूसरे की सभी प्रकार की उन्नति में सहायक होंगे। दासविदानिया। नमस्ते !"

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच नेहरू बोल रहे हैं:—

"मेहमानों और प्रिय दोस्तों श्री बुलगानिन और क्रु श्चेव, कुछ दिन हुए जब आप यहाँ पहुँचे थे और हिन्दुस्तान की जमीन पर पहली बार कदम रखे थे। इस दर्म्यान में जो कुछ दिन गुजरे, वे ऐतिहासिक रहे हैं और हमारी तवारीख में इसकी चर्चा जरूर होगी। जिन्दगी की सफर में हम एक और मंजिल तक पहुँच सके हैं। जो मकसद हैं, उनके करीब आये हैं। वे मकसद क्या हैं? जाहिर है हम लोगों की तरक्की और दुनिया के

साथ दोस्ती। जो हमारे पड़ोसी देश हैं, उनसे रिश्ता सहयोग का बढ़ेगा। जैसा आपने कल शाम को फर्माया था, हमारी दोस्ती ऐसी नहीं जो किसी और मुल्क के खिलाफ़ हो। हरएक से हम दोस्ती बढ़ाना चाहते हैं। हरएक से प्रेम और मुहब्बत के ताल्लुक पैदा करना चाहते हैं। वह दोस्ती कैसी जो दूसरे से दुश्मनी करे। दोस्ती तो वही है जो हर एक से प्रेम और एत्तफाक पैदा करे। इस लिहाज से जो हमारा रिश्ता रूस के करीब होता जाता है,इसके यह माने नहीं है कि और देशों से हम दूर हो जायेंगे। हम दुनिया से और सहयोग बढ़ायेंगे। हमारी और रूस की दोस्ती में एक दूसरे के विचारों की हम कद्र करते हैं हालाँ कि हमारे कई ख्यालात और स्वयं अलग-अलग हैं। इसी तरह दुनिया में एक दूसरे से दोस्ती होती है, सहयोग होता है। हम दूसरों के विचारों के मुताबिक आगे बढ़ें, एक दूसरे के तजुर्बे से लाभ उठायें। यह माने हैं उस पञ्चशील के जिसकी आप चर्चा सुनते हैं। सवाल तब उठता है, जब आप और मैं एक दूसरे की राय से इत्तफाक न करें। अगर हमारे ख्यालात एक से हैं, तब इसका सवाल नहीं उठता। मुझे यकीन है कि दुनिया के मुल्कों पर भी इसका अच्छा असर पड़ेगा। जब हमारे दिल साफ हैं और हम दोस्ती की निगाह से सब को देखते हैं तो गलतफहमियाँ हट जाती हैं। हमें इसलिए सच्चाई से चलना है। कल शाम को एक दस्तावेज पर हम दोनों ने अपने मुल्कों की तरफ से दस्तखत किये। आप देखेंगे कि उसमें कोई बात किसी की दुश्मनी की नहीं है। हिन्दुस्तान और रूस के सहयोग की है। दुनिया में अमन रहे और अपने आपस के सवालों को हम अमन से तय करें। श्री क्रुश्चेव और श्री बुलगानिन ने कहा कि यह दस्तावेज तवारीख की चीज है। यह सही बात है कि इन दोनों मुल्कों का करीब आना एक ऐतिहासिक बात है।

आपके रुख्सत का वक्त अब करीब सा आ गया है। रुखसत का वक्त चाहे नहीं हुआ, मालूम होता है कि अपना एक टुकड़ा अलग हो गया।

लेकिन आपको बड़े-बड़े काम हैं। अपनी-अपनी जगह पर हम लोगों को बहुत काम करने हैं। इसलिए मैं अपनी सरकार की तरफ से और हिंदुस्तान के लोगों की तरफ से और अपनी तरफ से शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप यहाँ आये, मोहब्बत से रहे और हर तरह से आपने इजहार मदद की है। ये दिन जो गुजरे हैं, मेरा ख्याल है हिंदुस्तान को याद रहेंगे। आप जो कुछ यहाँ से ले जा रहे हैं, वह लेते जाइये, मगर एक कीमती चीज भी लेते जाइये। वह है हिंदुस्तान की मुहब्बत का पैगाम। फिर आखिरी बार मैं वही रूसी अलफाज दोहराता हूँ, जिसके माने हैं कि जब तक आप फिर से आयेंगे, तब तक हम इन्तजार करेंगे। दासबिदानिया।

"दासविदानिया!"—जनसमूह पुकार उठता है।

काँग्रेस अध्यक्ष श्रीढेबर उपराष्ट्रपति, मंत्रिगण, अधिकारी, प्रमुख नागरिक पुष्प मालाओं से दोनों नेताओं को लाद देते हैं।

सेवा का वाद्य बिदागीत बजा रहा है। अतिथि अपने हवाई जहाज में सीढ़ियों पर खड़े हैं। हाथ हिला रहे हैं। उत्तर में हिल रहे हैं, हजार हजार हाथ! बिदा प्यारे दोस्तो! बिदा! गगन भेदी नारा—"हिन्दी रूसी भाई भाई···दासबिदानिया···"

अतिथि बैठ गये। यान घूम उठा। ऊपर गया।

"हिन्दी रूसी भाई भाई।"

"दासबिदानिया!"

अब भी सहस्त्र सहस्त्र कण्ठ पुकार रहे हैं। हजार हजार हाथ हिल रहे हैं। बिदा प्यारे ा!

❀ दासबिदानिया ❀